CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश-मठाम्नाय-दिग्दर्शन-सेतु-महानुशासनम्

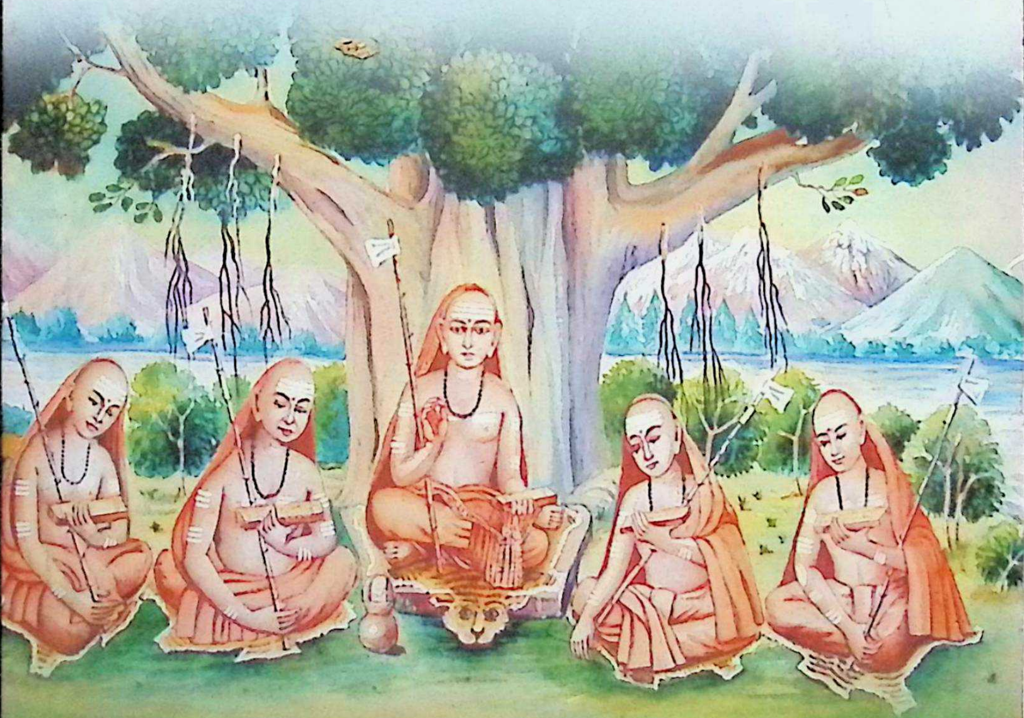

रचयिता

श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर-श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य
स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश-मठाम्नाय-दिग्दर्शन-सेतु-महानुशासनम्

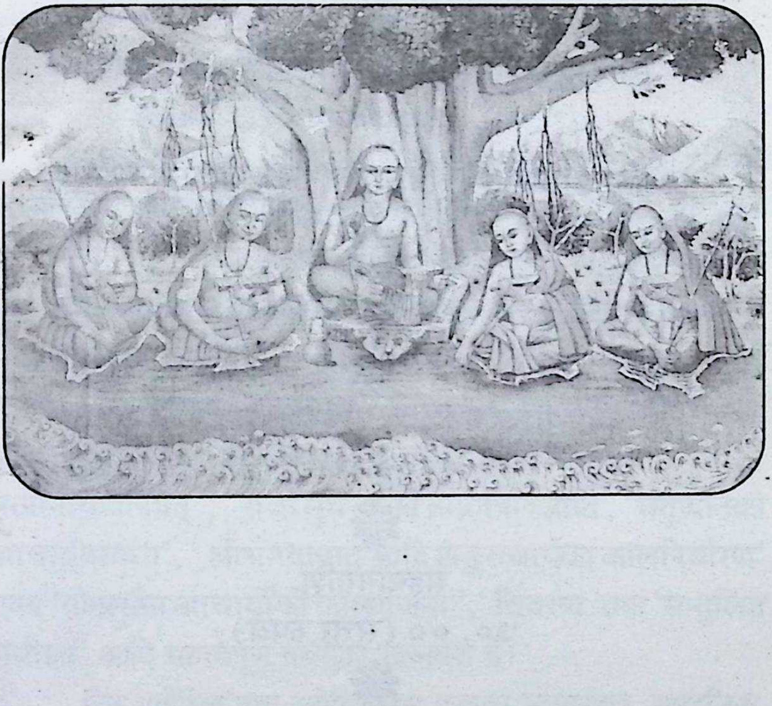

व्याख्याकार

श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य

स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्

प्रकाशन प्रसस्ति

श्रीहरिः

श्रीगणेशाय नमः

"स्वस्तिप्रकाशनसंस्थान" - श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीका

९६ वाँ पुष्प

गुरुवंश-मठाम्नाय-दिग्दर्शन-सेतु-महानुशासनम्

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण वि. स. २०६९, सन् २०१२

१००० प्रतियाँ

सहयोगराशि

७०. ०० (सत्तर रुपये)

स्वस्तिप्रकाशनसंस्थान

श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-गोवर्द्धनमठ , पुरी -७५२००१

(ओडिशा), भारत

दूरभाष (०६७५२) २३१०९४, २३१७१६

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः
श्रीगणेशाय नमः

प्रकाशकीय दिग्दर्शन

श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वतीमहाभागने पूर्वाचार्योंके द्वारा विरचित चतुराम्नाय तथा चतुष्पीठसे सम्बद्ध सामग्रीका सङ्कलनकर उसकी अद्भुत व्याख्या की है। "**स्वस्तिप्रकाशनसंस्थान**" - श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठका '**गुरुवंश-मठाम्नाय-दिग्दर्शन-सेतु-महानुशासनम्**' नामक यह ग्रन्थ ९६ वाँ पुष्प है। इसमें सन्निहित '**मठाम्नाय - सेतु - महानुशासनम्**' श्रीभगवत्पाद आदि शङ्कराचार्यके द्वारा विरचित ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त इसमें '**मठाम्नायोपनिषत्**', '**राजा सुधन्वाकी ताम्रपत्रविज्ञप्ति**, '**चतुष्पीठकी आचार्यपरम्परा**', '**श्रीभगवत्पाद आदि शङ्कराचार्यका कालनिर्धारण**' एवम् '**पीठासीन आचार्योंकी कालगणना**', '**विवरण**' तथा '**सन्तुलित समीक्षा**' आदि महत्त्वपूर्ण तथ्योंका सन्निवेश है।

चिर प्रतीक्षित तथा अपेक्षित इस ग्रन्थका सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक क्षेत्रमें समादर सुनिश्चित है।

चतुराम्नाय - चतुष्पीठ तथा इनसे सम्बद्ध विविध संस्थानोंको विकृत और विलुप्त होनेसे बचानेके लिए इस ग्रन्थका चतुर्दिक् अनुशीलन और अनुपालन अपेक्षित है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्

प्रकाशकीय दिग्दर्शन

सनातनसंस्कृतिके विलोपक संविधान तथा शासनतन्त्रको निरस्तकर सनातनसंस्कृतिके अनुरूप संविधान तथा शासनतन्त्रको क्रियान्वित करनेके लिए इस ग्रन्थका अनुशीलन आवश्यक है।

मठ – मन्दिर सांस्कृतिक दुर्ग हैं। इन्हें शिक्षा, रक्षा, संस्कृति, सेवा एवम् धर्म तथा मोक्षके संस्थान बनाये रखने पर ही प्राणियोंके सर्वविध कल्याणका मार्ग प्रशस्त हो सकता है; अन्यथा नहीं।

धर्म और मोक्षके संस्थान मठ – मन्दिर; तद्वत् गोवंश, गङ्गा आदिका केवल अर्थ तथा काम या धन और मानके लिए उपयोग और विनियोग इनकी विकृति तथा इनके विलोपका मुख्य कारण है।

गोवंश, गङ्गा, मठ – मन्दिर, सती, सत्यवादी, दानशील आदि सनातन प्रशस्त मानविन्दुओंकी रक्षाकी भावनासे व्यासपीठ तथा शासनतन्त्रको सुव्यवस्थित करना आवश्यक है। तदर्थ स्वस्थ व्यूहरचनाकी भावनासे इस ग्रन्थका अनुशीलन आवश्यक है।

निवेदक

स्वामी निर्विकल्पानन्दसरस्वती

निज सचिव श्रीमज्जगद्गुरु – शङ्कराचार्य

आषाढशुक्ल १०,शुक्रवार, वि.स. २०६९;

२९जुलाई , २०१२

पुरी (ओडिशा)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

गुरुवंश-मठाम्नाय-दिग्दर्शन-सेतु-महानुशासनम्

विषयानुक्रमणी

क्रम	विषय	पृष्ठ
१.	गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन	०६
२.	मठाम्नाय - सेतु	१०-२८
	२.१. शारदामठाम्नायः	१०
	२.२. गोवर्द्धनमठाम्नायः	१३
	२.३. ज्योतिर्मठाम्नायः	१६
	२.४. शृङ्गेरी - मठाम्नायः	१९
	२.५. शेषाम्नायाः	२६
३.	मठाम्नाय - महानुशासनम्	२९
४.	मठाम्नायोपनिषत्	४७
५.	राजा सुधन्वाकी ताम्रपत्रविज्ञप्ति	५३
६.	विवरण	५८
७.	चतुष्पीठ - दिग्दर्शन	७४
८.	चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा	७७-१२९
	८.१.०.पूर्वाम्नाय - गोवर्द्धनमठ - गुरुपरम्परा	७७
	८.२.०.श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीकी आचार्य - परम्परा	८६
	८.३.०.पश्चिमाम्नाय - द्वारकामठ - गुरुपरम्परा	१००
	८.४.०.उत्तराम्नाय - ज्योतिर्मठ - गुरुपरम्परा	१११
	८.५.०.दक्षिणाम्नायशृङ्गेरीशारदामठ गुरुपरम्परा	११९
९.	श्रीशाङ्करग्रन्थावलिः	१३०-१३७
१०.	प्रार्थना	१३८
११.	स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें	१३९-१४३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश-मठाम्नाय-दिग्दर्शन-सेतु-महानुशासनम्

१.गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन

शुद्धस्फटिकसंकाशं शुद्धविद्याप्रदायकम्।
शुद्धं पूर्णं चिदानन्दं सदाशिवमहं श्रये।।१।।

शुद्ध स्फटिकमणिके सदृश श्वेत, शुद्ध ब्रह्मविद्याके प्रदाता, शुद्ध - पूर्ण - चिदानन्दस्वरूप सदाशिवका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।।

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।।२।।
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं हस्तामलकं च शिष्यम्।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि।।३।।

श्रीमन्नारायण, ब्रह्मा, वसिष्ठ, शक्ति, उनके पुत्र पराशर, व्यास, शुक, महामहिम गौडपाद, योगीन्द्र गोविन्द, उनके शिष्य शङ्कराचार्य एवम् उनके शिष्य पद्मपाद, हस्तामलक, तोटक तथा वार्तिककार सुरेश्वर तद्वत् इनकी परम्परामें अन्य हमारे गुरुओंको मैं सतत नमस्कार करता हूँ।।

सीमातीतमनाद्यन्तं नामोच्चारणभेषजम्।
कामिताशेषफलदं श्रीमद्विष्णुमहं श्रये।।४।।

जो असीम, अनादि, अनन्त हैं; जिनके नामका उच्चारण भवरोगकी महौषधि है; जो भक्तोंके सकल अभिमत फलको देनेवाले हैं; उन श्रीसम्पन्न विष्णुका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।।

योगिहृत्पद्मनिलयं नतजीवहितेरतम्।
श्रुतीनां जन्मभूमिं त्वां चतुर्मुखमहं श्रये।।५।।

योगियोंका हृदयकमल जिनका निवासस्थल है; जो प्रणत प्राणियोंके

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हितमें निरत रहते हैं और श्रुतियोंके अभिव्यञ्जकसंस्थान हैं; ऐसे आप हिरण्यगर्भात्मक चतुर्मुख सूत्रात्मा ब्रह्माका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।।

प्रसमाहितमत्यन्तं प्रथिमामिततेजसम्।
वशीकृतपरानन्दं वशिष्ठं गुरुमाश्रये।।६।।

अत्यन्त प्रसमाहित अर्थात् निरतिशय निर्विकल्प समाधिमें सन्निहित प्रशस्त अमित तेजस्वी ; समाधि तथा परमानन्दस्वरूप ब्रह्मात्मबोधके अमोघ प्रभावसे समुच्छलित परमानन्दको वशमें करनेवाले गुरु वशिष्ठका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।।

शुक्तौ रूप्यमिवाभाति यद्रूपं मयि कल्पितम्।
शक्त्या परिहृतं येन शक्तिं तं गुरुमाश्रये।।७।।

सीपीमें चाँदीके सदृश स्फुरित जो अनात्म – प्रपञ्च मुझमें अनादि कालसे कल्पित है; वह ब्रह्मात्मबोधरूपा शक्तिके द्वारा जिनके द्वारा पूर्णरूपसे निरस्त कर दिया गया ; उन शक्ति – संज्ञक गुरुका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।

करणातीतचिद्रूपं परिपूर्णं परायणम् ।
परमानन्दसन्तुष्टं पराशरमहं श्रये।।८।।

कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय तथा मन – बुद्धि – चित्त – अहङ्कारसंज्ञक करणग्रामसे जो अतीत चित्स्वरूप परिपूर्ण एवम् मायासहित मायिक प्रपञ्च और उसमें रचे – पचे स्थावर – जङ्गम प्राणियोंके परमाश्रय हैं; परमानन्दमें निमग्न उन पराशर – संज्ञक गुरुका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।।

वेदव्यासं स्वात्मरूपं सत्यसन्धं परायणम्।
शान्तं जितेन्द्रियाक्रोधं सशिष्यं प्रणमाम्यहम्।।९।।

अनात्म वस्तओंसे अतीत आत्मानुरूप आत्मस्थितिसम्पन्न, सत्यप्रतिज्ञ, परमाश्रय, शान्त, जितेन्द्रिय, क्रोधरहित वेदव्यासको उनके पैल, वैशम्पायन, जैमिनि, सुमन्तु, लोमहर्षण नामक शिष्योंके सहित मैं प्रणाम करता हूँ।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्

१.गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन

त्रिकालातीत -चिन्मात्र - प्रशान्त-स्वान्तसंयुतम्।
विकाराद्यैरसंस्पृष्टं शुकं गुरुमहं श्रये।।१०।।

त्रिकालातीत, चिन्मात्र, प्रशान्त, संयत अन्तःकरणसम्पन्न, कामादि-विकारादिसे रहित शुक - संज्ञक गुरुका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।।

गूढा माया यस्य वाक्यैर्व्रीडिता विलयं गता।
क्रीडन्तं विद्यया सार्द्धं गौडपादं तमाश्रये।। ११।।

जिनके वाक्योंसे लज्जित होकर गूढा माया विलयको प्राप्त हुई, जो अपरा विद्यासहित परा विद्यासे क्रीडा करते हैं; उन गौडपाद - नामक गुरुका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।।

जीवेशभेदरहितं नाविकं भववारिधेः।
भावाभावविदूरस्थं गोविन्दं गुरुमाश्रये।।१२।।

जो जीव तथा ईश्वरके भेदसे रहित हैं; भवसिन्धुके केवट हैं, भाव तथा अभावसे सुदूर परम भावरूप निरपेक्ष तत्त्व हैं; उन गोविन्द - नामक गुरुका मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।।

वक्तारमासाद्य यमेव नित्या सरस्वती स्वार्थसमन्विताऽऽसीत्।
निरस्तदुस्तर्ककलङ्कपङ्का नमामि तं शङ्करमर्चिताङ्घ्रिम्।।१३।।

"एकमात्र जिन्हें वक्ताके रूपमें प्राप्तकर वेदवाणीरूपा नित्या सरस्वती कर्म - उपासना - ज्ञानकाण्डगत तात्पर्यको समग्ररूपसे ख्यापित कर सकी; दुस्तर्करूप कलङ्कपङ्कको निरस्तकर वेदोंके वास्तव तात्पर्यके अभिव्यञ्जक, संरक्षक तथा सम्वर्द्धक उन मुनीन्द्रवृन्दसमर्चितं आचार्य शङ्करको प्रणाम करता हूँ।।"

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके शब्दोंमें वेदार्थ निर्णय इस प्रकार है। -

"मां विधत्तेऽभिधत्ते मां विकल्प्यापोह्यते त्वहम्।
एतावान् सर्ववेदार्थः शब्द आस्थाय मां भिदाम्।
मायामात्रमनूद्यान्ते प्रतिषिद्ध्य प्रसीदति।।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
१.गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन

(श्रीमद्भागवत ११.२१.४३)

"श्रुतियाँ कर्मकाण्डमें क्रिया, कारक और फलरूपसे मुझ अद्वितीय सच्चिदानन्दका ही विधान करतीं हैं। उपासनाकाण्डमें इन्द्रादि उपास्य देवोंके रूपमें मुझ सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् सर्वरूप सर्वेश्वरका ही वर्णन करती हैं और ज्ञानकाण्डमें मुझ अद्वितीय चिदात्मतत्त्वमें ही आकाशादिका आरोप करके उनका निषेध करती हैं। सम्पूर्ण श्रुतियोंका इतना ही तात्पर्य है कि वे मेरा आश्रय लेकर मुझमें भेदका आरोप करती हैं, मायामात्र कहकर उनका अनुवाद करती हैं और अन्तमें सबका अपवाद करके स्वयं भी मुझमें ही शान्त हो जाती हैं। अन्तमें अधिष्ठानात्मक अद्वय ब्रह्मात्मरूपसे केवल मैं ही शेष रहता हूँ।।"

चतुर्दिक्षु प्रसिद्धासु प्रसिद्ध्यर्थं स्वनामतः।
चतुरोऽथ मठान् कृत्वा शिष्यान् संस्थापयद्विभुः।।१४।।
चकार संज्ञामाचार्यश्चतुर्णां नामभेदतः।
क्षेत्रं च देवतां चैव शक्तिं तीर्थं पृथक् पृथक्।।१५।।
सम्प्रदायं तथाम्नायभेदं च ब्रह्मचारिणाम्।
एवं प्रकल्पयामास लोकोपकरणाय वै।।१६।।

"श्रीशिवावतार भगवत्पादने पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर नामक चारों दिशाओंमें सनातन-परम्परासे प्रसिद्ध चार धामोंकी विशेष प्रसिद्धिकी भावनासे लोकोपकारकी दृष्टिसे सम्बद्ध क्षेत्रमें गोवर्द्धन, शृङ्गेरी और द्वारका तथा ज्योतिः नामसे चार मठोंकी स्थापना करनेके अनन्तर उन पर अनुरूप शिष्योंकी स्थापना की। तद्वत् उन्होंने तदनुरूप क्षेत्र, देवता, शक्ति तथा तीर्थका एवम् सम्प्रदाय और आम्नायका पृथक् - पृथक् उल्लेख किया। उन्होंने मठभेदसे ब्रह्मचारियोंके और सन्यासियोंके प्रभेदका भी निर्धारण किया।।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२.मठाम्नाय - सेतु

२.१.शारदामठाम्नायः

प्रथमः पश्चिमाम्नायः शारदामठ उच्यते।
कीटवारः सम्प्रदायस्तस्य तीर्थाश्रमौ शुभौ।।१।।/ पदे

पश्चिमदिशासे सम्बद्ध आम्नाय प्रथम है। जिसको शारदामठ कहा जाता है। उसका सम्प्रदाय 'कीटवार' है। उंससे सम्बद्ध शुभप्रद सन्यासियोंके पद 'तीर्थ' तथा 'आश्रम' हैं।। १।।

द्वारकाख्यं हि क्षेत्रं स्याद्देवः सिद्धेश्वरः स्मृतः।
भद्रकाली तु देवी स्यादाचार्यो विश्वरूपकः।।२।।

इसका क्षेत्र द्वारका नामक है। इसके देव मान्य सिद्धेश्वर हैं। भद्रकाली इसकी देवी हैं। मेरे द्वारा अभिषिक्त विश्वरूपसंज्ञक सुरेश्वर इसके प्रथम आचार्य हैं।।२।।

गोमतीतीर्थममलं ब्रह्मचारी स्वरूपकः।
सामवेदस्य वक्ता च तत्र धर्मं समाचरेत्।।३।।

निर्मल 'गोमती' इसका तीर्थ है। 'साम' इसका वेद है। उसका स्वाध्याय तथा प्रवचन इससे सम्बद्ध स्वरूप संज्ञक ब्रह्मचारियोंका मुख्य धर्म है।। ३।।

सिन्धु - सौवीर -सौराष्ट्र - महाराष्ट्रस्तथान्तराः।
देशाः पश्चिमदिक्स्था ये शारदापीठसात्कृताः।।४।।
(शारदामठभागिनः)

सिन्धु, सौवीर (कच्छ), सौराष्ट्र (काठियाबाड़), महाराष्ट्र और

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्चिमदिशामें स्थित इनके मध्यवर्ती क्षेत्र शारदामठकी अधिकारसीमामें सन्निहित हैं।।४।।

जीवात्मपरमात्मैक्यबोधो यत्र भविष्यति।
तत्त्वमसि महावाक्यं गोत्रोऽविगत उच्यते।।५।।

सामवेदसे सम्बद्ध छान्दोग्योपनिषत्के छठे अध्यायमें सन्निहित **'तत्त्वमसि'** (६.८.७ - ६.१६.३) के अनुशीलनसे जीवात्मा तथा परमात्माके एकत्वका बोध सम्भव है; वह इस मठका महावाक्य है, अविगत गोत्र है ।। ५।।

त्रिवेणीसङ्गमे तीर्थे तत्त्वमस्यादिलक्षणे।
स्नायात्तत्त्वार्थभावेन तीर्थनाम्ना स उच्यते।। ६।।

'तत्त्वमसि' इस महावाक्यमें सन्निहित **'तत्, त्वं, असि'** - संज्ञक त्रिपदरूप त्रिवेणी सङ्गममें जो निहितार्थका अनुशीलनरूप तत्त्वार्थभावसे स्नान करनेवाला यति है; वह **'तीर्थ '** नामसे निरूपित है।। ६।।

आश्रमग्रहणे प्रौढ आशापाशविवर्जितः।
यातायातविनिर्मुक्त एतदाश्रमलक्षणम्।। ७।।
/एष आश्रम उच्यते

तुरीयाश्रमके ग्रहण तथा उसके नियमोंके परिपालनमें सुदृढ और लोकैषणा, वित्तैषणा तथा पुत्रैषणारूप आशापाशविवर्जित एवम् उत्क्रमण और पुनर्भवरूप संसृतिचक्रसंज्ञक यातायातसे विनिर्मुक्त होना **'आश्रम'** नामा यतिका लक्षण है।। ७।।

कीटादयो विशेषेण वार्यन्ते यत्र जन्तवः।
भूतानुकम्पया नित्यं कीटवारः स उच्यते।। ८।।

जो स्थावर तथा जङ्गम प्राणियोंपर दया करनेवाला है, विशेषकर जिनकी रक्षा मनुष्योंकी अनुकम्पापर ही निर्भर है; उन कीटादि क्षुद्र प्राणियोंको मरनेसे जो सदा बचाता है; वह **'कीटवार'** नामक सम्प्रदाय कहा जाता है ।।८।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय-सेतु

स्व - स्वरूपं विजानाति स्वधर्मपरिपालकः।
स्वानन्दे क्रीडतो नित्यं स्वरूपो वटुरुच्यते।। ९।।

आचार्यकी उपासना; स्वाध्याय, प्रवचनादि - संज्ञक स्वधर्मका परिपालक वह जो स्वधर्मपरिपालनके फलस्वरूप विवेक-वैराग्यादि साधनचतुष्टयसम्पन्नताके अनन्तर स्वानुरूप श्रवणादिसुलभ स्वरूपविज्ञानसम्पन्न सदा स्वानन्दमें क्रीडानिमग्न है ; "**स्वरूप**' ब्रह्मचारी कहा जाता है।।

इति शारदामठाम्नायः

या द्वारमस्त्यपिहितं वरमुक्तिर्धाम्नस्तां द्वारकां निजपुरीमिह योऽधिशेते।
मोक्षाधिकं च निजधाम परं ददाति तं द्वारकेश्वरमहं प्रणमाम्युदारम्।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२.२.गोवर्द्धनमठाम्नायः

पूर्वाम्नायो द्वितीयः स्याद्भोगवर्द्धनमठः स्मृतः।
(द्वितीयः पूर्वदिग्भागे गोवर्द्धनमठः स्मृतः।)
भोगवारः सम्प्रदायो वनारण्ये पदे स्मृते।।१०।।

पूर्वदिशासे सम्बद्ध आम्नाय द्वितीय है। जिसको **भोगवर्द्धन - गोवर्द्धनमठ** कहा जाता है। उसका सम्प्रदाय **भोगवार** है। उससे सम्बद्ध शुभप्रद संन्यासियोंके पद अर्थात् योगपट्ट **'वन'** तथा **'अरण्य'** हैं।। १०।।

पुरुषोत्तमं तु क्षेत्रं स्याज्जगन्नाथोऽस्य देवता।
विमलाख्या हि देवी स्यादाचार्यः पद्मपादकः।।११।।

इसका क्षेत्र **'पुरुषोत्तम'** नामक है। इसके **'जगन्नाथ'** देवता हैं। **'विमला'** इसकी देवी हैं। मेरे द्वारा अभिषिक्त सनन्दनसंज्ञक **पद्मपाद** इसके प्रथम आचार्य हैं।। ११।।

तीर्थं महोदधिः प्रोक्तं ब्रह्मचारी प्रकाशकः।
महावाक्यं च तत्र स्यात् प्रज्ञानं ब्रह्म चोच्यते।।
(महावाक्यं च तत्रोक्तं प्रज्ञानं ब्रह्म चोच्यते।)१२।।

महोदधि इसका ' तीर्थ ' कहा गया है। इसके ब्रह्मचारी **'प्रकाश'** हैं। ऋग्वेदसे सम्बद्ध ऐतरेयोपनिषत् ५/३ में सन्निहित **'प्रज्ञानं ब्रह्म'** इस मठका महावाक्य कहा जाता है।। १२।।

ऋग्वेदपठनं चैव काश्यपो गोत्रमुच्यते।
(ऋगाह्वयस्तस्य वेदस्तत्र धर्मं समाचरेत्)
अङ्गबङ्गकलिङ्गाश्च मगधोत्कलबर्बराः।
गोवर्द्धनमठाधीना देशाः प्राचीव्यवस्थिताः।।१३।।

'ऋक् ' इसका वेद है। काश्यप इसका 'गोत्र' कहा जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अङ्ग (भागलपुर), बङ्ग (बङ्गाल), कलिङ्ग (दक्षिणपूर्व भारत), मगध, उत्कल (ओडिशा), बर्बर (जाङ्गलप्रदेश) नामक पूर्वदिशासे सम्बद्धक्षेत्र इस मठकी अधिकारसीमामें सन्निहित हैं।। १३।।

सुरम्ये निर्जने स्थाने वने वासं करोति यः।
आशाबन्धविनिर्मुक्तो वननामा स उच्यते।।१४।।

सुरम्य, निर्जन, वनस्थलमें आशापाशविनिर्मुक्त होकर निवास करनेवाला इस मठसे सम्बद्ध जो सन्यासी है, वह **'वन'** नामा कहा जाता है।। १४।।

अरण्ये संस्थितो नित्यमानन्दे नन्दने वने।
त्यक्त्वा सर्वमिदं विश्वमारण्यं परिकीर्त्यते।।१५।।

वैराग्य, बोध तथा उपरतिकी प्रगल्भताके फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्वका त्यागकर जो नित्य ही आत्मस्वरूप आनन्दसंज्ञक नन्दनवनमें सन्निहित है; इस मठसे सम्बद्ध वह **'आरण्य'** नामा सन्यासी कहा जाता है।। १५।।

भोगो विषय इत्युक्तो वार्य्यते येन जीविनाम्।
सम्प्रदायो यतीनाञ्च भोगवारः स उच्यते।।१६।।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध और इनके अभिव्यञ्जक संस्थानसंज्ञक स्रक् - चन्दन - वनितादि विषय भोग हैं। संन्यासियोंके जिस सम्प्रदाय द्वारा भोगलम्पटताकी चपेटसे जीवोंको निवृत्त किया जाता है, वह **'भोगवार'** कहा जाता है।। १६।।

स्वयञ्ज्योतिर्विजानाति योगयुक्तिविशारदः।
तत्त्वज्ञानप्रकाशेन तेन प्रोक्तः प्रकाशकः।।१७।।

जो स्वप्रकाश ब्रह्मात्मतत्त्वको विधिवत् जानता है एवम् योगविद्याविशारद है; इस तत्त्वज्ञाननिष्ठारूप प्रकाशसम्पन्नताके कारण ही उस ब्रह्मचारीको प्रकाश कहा जाता है।। १७।।

भगवत्पाद श्रीशिवावतार शङ्कराचार्यमहाभागने वैशाखशुक्ल दशमीके दिन युधिष्ठिरसम्वत् २६५५में महोदधिके तटपर दारुमय श्रीजगन्नाथकी प्रतिष्ठा की। उसी दिन उन्होंने श्रीमाधवनन्दन सनन्दन संज्ञक ऋग्वेदी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय-सेतु

सर्वशास्त्रवित् पद्मपादको रम्य गोवर्द्धनमठ – विमलापीठपर श्रीमत्परमहंसादि निखिल विरुदावलिसमलङ्कृत प्रथम जगद्गुरु – शङ्कराचार्यपदपर प्रतिष्ठित तथा अभिषिक्त किया।–

महोदधेस्तटे क्षेत्रे पुरुषोत्तमसंज्ञके।
जगन्नाथं दारुमयं प्रतिष्ठाप्य यथाविधि।।
भूतेन्द्रियाङ्गनेत्राब्दे युधिष्ठिरशकस्य वै।
२६५५
वैशाखे शुक्लगे पक्षे दशम्यां शोभने दिने।।
गोवर्द्धनमठे रम्ये विमलापीठसंज्ञके।
पूर्वाम्नाये भोगवारे श्रीमत्काश्यपगोत्रजः।।
माधवस्य सुतः श्रीमान् सनन्दन इति श्रुतः।
प्रकाशब्रह्मचारी च ऋग्वेदी सर्वशास्त्रवित्।।
श्रीपद्मपादः प्रथमाचार्यत्वेनाभ्यषिच्यत।
श्रीमत्परमहंसादिविरुदैरखिलैः सह।।
(श्रीशङ्करदिग्विजयमकरन्दः ३१. १४-१८)

भगवती सतीके नाभिमण्डलके निपातस्थलको विरजा क्षेत्र कहते हैं। उससे प्रादुर्भूत परा चितिस्वरूपा, महादेवी विमला हैं, श्रीजगन्नाथ यहाँ भैरव मान्य हैं।–

उत्कले नाभिदेशस्तु विरजाक्षेत्रमुच्यते।
विमला सा महादेवी जगन्नाथस्तु भैरवः।।(तन्त्रचूडामणि)
महाचिदेकैवेहास्ति महासत्तेति योच्यते।
निष्कलङ्का समा शुद्धा निरहङ्काररूपिणी।।
सकृद्विभाता विमला नित्योदयवती समा।
सा ब्रह्म परमात्मेति नामभिः परिगीयते।।
(अन्नपूर्णोपनिषत् ५. ५५,५६)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२.३.ज्योतिर्मठाम्नायः

तृतीयस्तूत्तराम्नायो ज्योतिर्नाम मठो भवेत्।
श्रीमठश्चेति वा तस्य नामान्तरमुदीरितम्।। १८।।

उत्तरदिशासे सम्बद्ध आम्नाय तीसरा है। जिसका **'ज्योतिर्मठ'** नाम है। अथवा उसका नामान्तर **'श्रीमठ'** कहा जाता है।। १८।।

आनन्दवारो विज्ञेयः सम्प्रदायोऽस्य सिद्धिदः।
पदानि तस्य ख्यातानि गिरिपर्वतसागराः।।१९।।

इसका सम्प्रदाय सिद्धिप्रद **'आनन्दवार'** है। उससे सम्बद्ध संन्यासियोंके पद अर्थात् योगपट्ट **'गिरि'**, **'पर्वत'** तथा **'सागर'** हैं।।१९।।

बदरिकाश्रमः क्षेत्रं देवो नारायणः स्मृतः।
पूर्णागिरि च देवी स्यादाचार्यस्तोटकः स्मृतः।।२०।।

इसका क्षेत्र **'बदरिकाश्रम'** नामक है। इसके देव **'नारायण'** कहे गये हैं। **'पूर्णागिरि'** इसकी देवी हैं। मेरे द्वारा अभिषिक्त प्रतर्दनाचार्यसंज्ञक **'तोटक'** इसके प्रथम आचार्य हैं।। २०।।

तीर्थं चालकनन्दाख्यं आनन्दो ब्रह्मचार्य्यभूत्।
(तीर्थन्त्वलकनन्दाख्यं नन्दाख्यो ब्रह्मचार्य्यभूत्।)
अयमात्मा ब्रह्म चेति महावाक्यमुदाहृतम्।। २१।।

'अलकनन्दा' इसका तीर्थ है। इसके ब्रह्मचारी **'आनन्द'** हैं। अथर्ववेदसे सम्बद्ध माण्डूक्योपनिषत् २ में सन्निहित **'अयमात्मा ब्रह्म'** इस मठका महावाक्य कहा जाता है।।२१।।

(तस्य वेदो ह्यथर्वाख्यस्तत्र धर्मं समाचरेत्।)
अथर्ववेदवक्ता च भृग्वाख्यो गोत्रमुच्यते।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय-सेतु

कुरुकाश्मीरकाम्बोजपाञ्चालादिविभागतः।
ज्योतिर्मठवशा देशा उदीचीदिगवस्थिताः।। २२।।

इस मठका वेद **'अथर्व'** नामक है ; **'आनन्द'** - संज्ञक ब्रह्मचारी अथर्ववेदका प्रवक्ता मान्य है। इसका गोत्र **'भृगु'** कहा जाता है। कुरु (हस्तिनापुर - कुरुक्षेत्र), काश्मीर, काम्बोज (हरियाणा तथा पश्चिमोत्तर उत्तरप्रदेश), पाञ्चाल (पञ्जाब) आदि उत्तरवर्ती अन्य क्षेत्र इसकी सीमामें सन्निहित हैं।।२२।।

वासो गिरिवने नित्यं गीताध्ययनतत्परः।
गम्भीराचलबुद्धिश्च गिरिनामा स उच्यते।। २३।।

लघु पर्वतरूप गिरि तथा वनमें जिसका निवास हो, जो नित्य ही गीताके अध्ययनमें तत्पर हो और गम्भीर एवम् अचल बुद्धिसे जो सम्पन्न हो; उसे उत्तराम्नायसे सम्बद्ध 'गिरि' नामक सन्यासी समझना चाहिए।।२३।।

वसन् पर्वतमूलेषु प्रौढज्ञानं बिभर्त्ति यः।
सारासारं विजानाति पर्वतः परिकीर्त्यते।।२४।।

जो पर्वतके मूल अर्थात् उपत्तिकामें निवास करता हो, प्रौढानुभूतिसे जो सम्पन्न हो, तद्वत् सार तथा असारके विज्ञानसे जो समन्वित हो, वह यति 'पर्वत' नामसे चर्चित है।। २४।।

तत्त्वसागर - गम्भीर - ज्ञानरत्नं परिग्रहः।
मर्यादां वै न लङ्घ्येत सागरः परिकीर्त्यते।।२५।।

जो रत्नगर्भ सागरके सदृश गम्भीर तत्त्वसागरसे ज्ञानरत्नका सञ्चय करता हो तथा सागरके सदृश मर्यादित रहता हो; वह यति 'सागर' नामसे विख्यात है।। २५।।

आनन्दो हि विलासश्च वार्यते येन जीविनाम्।
सम्प्रदायो यतीनां चानन्दवारः स उच्यते।। २६।।

प्राप्तसन्दर्भमें विषयविलास आनन्द है। प्राणियोंकी विषय -

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलासमें प्रीति तथा प्रवृत्तिका जिसके द्वारा निवारण किया जाता है; यतियोंका वह सम्प्रदाय 'आनन्दवार' कहा जाता है।। २६।।

सत्यं ज्ञानमनन्तं यो नित्यं ध्यायेत तत्त्ववित्।
स्वानन्दे रमते चैव आनन्दः परिकीर्त्यते।।२७।।

सत्य, ज्ञान, अनन्त- संज्ञक ब्रह्मका जो तत्त्वज्ञ नित्य ही ध्यान करता है और स्वरूपानन्दमें निमग्न रहता है; इस मठसे सम्बद्ध वह ब्रह्मचारी '**आनन्द**' कहा जाता है।।२७।।

(उत्तरस्यां श्रीमठः स्यात् क्षेत्रं बदरिकाश्रमः।।
देवो नारायणो नाम शक्तिः पूर्णगिरीति च।
सम्प्रदायो नन्दवालस्तीर्थं चालकनन्दिका।।
आनन्दब्रह्मचारीति गिरिपर्वतसागराः।
नामानि तोटकाचार्यो वेदोऽथर्वणसंज्ञकः।।
महावाक्यं च तत्रायमात्मा ब्रह्मेति कीर्त्यते।)
(मठाम्नायस्तोत्र ११-१३.१/२)

श्रीबदर्याश्रमं पुण्यं यत्र यत्र स्थितः स्मरेत्।
स यति वैष्णवं स्थानं पुनरावृत्तिवर्जितः।।
(वराहपुराण १४१. ६७)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२.४.शृङ्गेरी - मठाम्नायः

मलहानिकरं लिङ्गं विभाण्डकसुपूजितम्।
यत्रास्ते ऋष्यशृङ्गस्य महर्षेराश्रमो महान्।।२८।।
(चतुर्थो दक्षिणस्यां च शृङ्गेर्यां शारदामठः।)
चतुर्थो दक्षिणाम्नायः शृङ्गेरी तु मठो भवेत्।
सम्प्रदायो भूरिवारो भूर्भुवो गोत्रमुच्यते।। २९।।

जहाँ विभाण्डक महर्षिसे सुपूजित मलका प्रक्षालन करनेवाला शिवलिङ्ग और महर्षि ऋष्य शृङ्गका महान् आश्रम है; वहाँ दक्षिणदिशासे सम्बद्ध रामक्षेत्रस्थित आम्नाय चौथा है। जिसका **'शृङ्गेरी - शारदामठ'** नाम है। उसका सम्प्रदाय **'भूरिवार'** है और **'भूर्भुवः'** गोत्र है।।२८-२९।।

पदानि त्रीणि ख्यातानि सरस्वती भारती पुरी।
रामेश्वराह्वयं क्षेत्रमादिवाराहदेवता।। ३०।।

उससे सम्बद्ध सन्यासियोंके पद अर्थात् योगपट्ट **'सरस्वती'**, **'भारती'** तथा **'पुरी'** हैं। उसका क्षेत्र **'रामेश्वरम्'** नामक है। इसके देवता **'आदिवाराह'** कहे गये हैं।। ३०।।

कामाक्षी तस्य देवी स्यात्सर्वकामफलप्रदा।
हस्तामलक आचार्यस्तुङ्गभद्रेति तीर्थकम्।।
(पृथ्वीधराह्व आचार्यस्तुङ्गभद्रेति तीर्थकम्)।।३१।।

'कामाक्षी' उसकी देवी हैं; जो सब प्रकारकी कामनाको सफल करती हैं। मेरे द्वारा अभिषिक्त **'हस्तामलक'** इसके प्रथम आचार्य हैं। **'तुङ्गभद्रा'** इसका तीर्थ है।।३१।।

चैतन्याख्यो ब्रह्मचारी यजुर्वेदस्य पाठकः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहं ब्रह्मास्मि तत्रैव महावाक्यं समीरितम्।।३२।।

इसका ब्रह्मचारी '**चैतन्य**' संज्ञक होता है; जो कि यजुर्वेदका पाठक (स्वाध्यायी) होता है। यजुर्वेदसे सम्बद्ध बृहदारण्यकोपनिषत् १.४.१० में सन्निहित '**अहं ब्रह्मास्मि**' इस मठका महावाक्य कहा गया है।। ३२।।

आन्ध्र - द्रविण - कर्नाट - केरलादिप्रभेदतः।
शृङ्गेर्यधीना देशास्ते ह्यवाचीदिगवस्थिताः।। ३३।।

आन्ध्र, द्रविड़, कर्नाटक, केरलादि दक्षिणवर्ती क्षेत्र शृङ्गेरी मठकी सीमाके अन्तर्गत हैं।।३३।।

स्वरज्ञानरतो नित्यं स्वरवादी कवीश्वरः।
संसारसागरासारहन्ताऽसौ हि सरस्वती।।३४।।

स्वरोदय तथा श्वासरोधादि सम्बन्धी योगविज्ञानमें संलग्न, स्वरसहित वेदपाठमें दक्ष, क्रान्तदर्शियोंमें श्रेष्ठ एवम् संसारसागरके अजस्र प्रसारको अवरुद्ध करनेमें समर्थ 'सरस्वती' सन्यासी हैं।।३४।।

विद्याभ (भा)रेण सम्पूर्णः सर्वभारं परित्यजन्।/जेत्
दुःखभारं न जानाति भारती परिकीर्त्यते।।३५।।

जो विद्याके समस्त प्रभेदोंसे सम्पन्न हो; कामादि मनोविकारों तथा विकारमूलक प्रवृत्तियोंका परित्याग करनेवाला हो; दुःखभारसे अपरिचित हो, वह यति '**भारती**' कहा जाता है।।३५।।

ऋक्, यजुः, साम और अथर्वसंज्ञक चार वेद हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिषसंज्ञक छह वेदाङ्ग हैं। पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र चार उपाङ्ग हैं। उपपुराणोंका पुराणोंमें अन्तर्भाव युक्त है। वैशेषिक - शास्त्रका न्यायमें अन्तर्भाव है। महाभारत और रामायणसंज्ञक इतिहासद्वयका तथा साङ्ख्य, पातञ्जल, पाशुपत और

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय-सेतु

वैष्णवागमोंका अभ्युदय - निःश्रेयसप्रद धर्मशास्त्रोंमें अन्तर्भाव युक्त है।

उक्त रीतिसे चतुर्विध वेद, षडङ्ग, पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र - चौदह विद्यासंस्थान हैं। -

"पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।।"
(याज्ञवल्क्यस्मृति १.३)

"अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।।"
(महाभारत - आश्वमेधिक ९२ दा०)

आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थशास्त्रसहित उक्त चतुर्दश (१४) विद्यासंस्थान अष्टादश (१८) सिद्ध होते हैं। -

"आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेत्यनुक्रमात्।
अर्थशास्त्रं परं तस्माद्विद्या ह्यष्टादश स्मृताः।।"
(शिवपुराण वाय० २.२३)

सीतोपनिषत् के अनुसार उक्त चतुर्दश (१४)- विद्यासंस्थानके अतिरिक्त **अयन (१५)** - संज्ञक उपाङ्ग एवम् **साम्प्रदायिक आचाररूप समयाचार (१६)** के साथ सङ्गति साधनेवाले **निबन्धग्रन्थ** (१७) तथा **इतिहास (१८), वास्तुवेद (१९), धनुर्वेद (२०), गान्धर्ववेद (२१), आयुर्वेद** (२२) - संज्ञक उपवेद ; **दण्ड (२३), नीति (२४), व्यापारविद्या (२५), वायुजयविद्या (२६)** - नामक बारह विद्याका उल्लेख है। निबन्धग्रन्थका समयाचारमें तथा इतिहासका पुराण या धर्मशास्त्रमें अन्तर्भाव कर लेनेपर **चौबीस (२४) - विद्यासंस्थान** सिद्ध होते हैं।

शुक्रनीतिके अनुसार विद्याके बत्तीस और कलाके चौंसठ प्रभेद इस प्रकार हैं। -

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय-सेतु

''ऋग्यजुः साम चाथर्वा वेदा आयुर्धनुः क्रमात्।
गान्धर्वश्चैव तन्त्राणि उपवेदाः प्रकीर्तिताः।।''
''शिक्षा व्याकरणं कल्पो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
छन्दः षडङ्गानीमानि वेदानां कीर्त्तितानि हि।।''
''मीमांसातर्कसाङ्ख्यानि वेदान्तो योग एव च।
इतिहासाः पुराणानि स्मृतयो नास्तिकं मतम्।।''
''अर्थशास्त्रं कामशास्त्रं तथा शिल्पमलङ्कृतिः।
काव्यानि देशभाषाऽवसरोक्तिर्यावनं मतम्।
देशादिधर्मा द्वात्रिंशदेता विद्याभिसंज्ञिता।।''
(शुक्रनीति ४. ३. २७-३०)

''ऋक्, यजुः, साम तथा अथर्व – ये चार वेद हैं। क्रमशः आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, तथा तन्त्र (स्थापत्यवेद) – ये चार उपवेद हैं।। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिषसंज्ञक छह वेदाङ्ग हैं। मीमांसा, न्याय, साङ्ख्य, वेदान्त, योग, इतिहास, पुराण, स्मृति, नास्तिकमत, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, शिल्पशास्त्र, अलङ्कारशास्त्र, काव्य, राष्ट्रभाषा, सूक्तिशास्त्र, यवनोंका मत तथा वैदेशिक धर्मग्रन्थ – ये बत्तीस विद्या नामसे जाने जाते हैं।।''

नर्त्तनकला, वादनकला, वस्त्रालङ्कारसन्धानकला (नरनारीको वस्त्राभूषणबालविन्यासादिसे सजानेकी कला), अनेकरूपाविर्भावकला (बहुरूपिया), शय्यास्तरणसंयोगपुष्पादिप्रथनकला (शय्याको पुष्पादिसुखदसामग्रीसे सजानेकी कला), मनोरञ्जनकला, रतिकला, आसवादिकृतिकला, शल्यगूढाहृतकला (शरीरमें चुभे कील, काँटे आदिको निकालनेकी प्रशस्तकला), शिरादिब्रणवधकला (शिर आदिके अन्दर और बाहरके घावको चीरकर बहानेकी कला), पाककला, वृक्षादिप्रसवारोपणपालनादिकला, पाषाणादिधातुभस्मीकरणकला,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय-सेतु

गुडपाकनिर्माणकला, धात्वौषधिसम्मिश्रणप्रयोगकला, धातुसाङ्कर्य – पार्थक्यकरणक्रिया, खनिजद्रव्यसम्मिश्रणकला, क्षारनिष्कासनक्रिया, शस्त्रसन्धानविक्षेपपदादिन्यासकला, मल्लयुद्धकला, व्यूहरचनादिकला, युद्धकला, पदादिन्यासकला, मल्लयुद्धकला, युद्धसंयोजनकला, न्यासमुद्रादिकला, सारथ्यकला, गजादिगतिपरीक्षणकला, पात्राभूषणादिनिर्माणकला, चित्रकला, भूमिसमतलकरणकला, वस्त्रादिरञ्जनकला, नौकारथादियानादिकृतिकला , सूत्रादिरज्जुकरणकला (रस्सी बनानेकी कला), पटबन्धकला (वस्त्रनिर्माणकला), रत्नवेधकला, रत्नपरीक्षणकला, कृत्रिमस्वर्णादिकृतिकला, स्वर्णाद्यलङ्कारकृतिलेपनादि–कृतिकला (स्वर्णादिके आभूषण बनाना तथा सोनेके पानी चढ़ानेकी कला), चर्ममार्दवक्रिया (चमड़ेको सिझाकर कोमलबनानेकी कला), पशुचर्माङ्गनिर्हारक्रिया (मृत पशुके शरीरसे चमड़ी उतारनेकी कला), दुग्धदोहादिघृतान्तक्रिया (दूध दूहनेसे घृत निकालने तककी क्रिया), कञ्चुकादिसीवनकला (पहनावेके वस्त्रको सीनेकी कला), तरणकला (तैरनेकी कला), गृहभाण्डादिमार्जनकला (घरेलू बर्तनोंको साफ करनेकी कला), वस्त्रसम्मार्जनकला (वस्त्रोंके सफाईकी कला), क्षुरकर्मकला (बालबनानेकी कला), स्नेहनिष्कासनकला (तिलादिसे तैल निकालनेकी कला), वृक्षपर्वताद्यारोहणकला, सीराद्याकर्षणकला (हल चलानेकी कला), मनोऽनुकूलसेवाकला, वेणुतृणादिपात्रकृतिकला (बाँस, घास आदिकी टोकरी बनानेकी कला), काचपात्रादिकरणक्रिया, जलसंसेचनसंहरणादिकला (सिंचाई आदिकी कला), पल्याणादिक्रिया (गद्दी आदि बनानेकी कला), शिशुसंरक्षणधारणक्रीडनादिक्रिया (बच्चोंका पालन, पोषण, लाड़ – प्यार –खेल आदिसे उन्हें प्रमुदित रखने और विकसित करनेकी कला), अपराधिजनसंयुक्तताडनज्ञानकला (अपराधियोंको समुचित दण्ड देनेकी कला), नानादेशीयाक्षरलेखनकला, ताम्बूलरक्षादिकृतिकला (तमोलीकी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कला), आशुकारित्वादानकला (कलासम्पादनमें शीघ्रतारूप आदानक्रिया), प्रतिदानचिरक्रिया (कला- सिखानेमें उचित विलम्बरूप प्रतिदानक्रिया) तथा लोहाभिसारशस्त्रास्त्रादिकृतिकला (लोहे आदिसे अस्त्र, शस्त्र और वाहनादि -निर्माणकला), घट्याद्यनेकयन्त्रनिर्माणकला (घड़ी आदि विविध यन्त्रोंके निर्माणकी कला), वाद्ययन्त्रनिर्माणकला - ये चौंसठ कलाएँ हैं।-

''विद्या ह्यनन्ताश्च कलाः सङ्ख्यातुं नैव शक्यते।
विद्या मुख्याश्च द्वात्रिंशच्चतुःषष्टिः कलाः स्मृताः।।"
(शुक्रनीति ४.३.२४)

''विद्या और कलाओंका कोई अन्त नहीं है। इनकी गणना कोई नहीं कर सकता। तथापि (फिर भी) बत्तीस मुख्य विद्याएँ तथा चौंसठ मुख्य कलाएँ मानी जाती हैं।।"

''यद् यत् स्याद्वाचिकं सम्यक् कर्म विद्याभिसंज्ञितम्।
शक्तो मूकोऽपि यत्कर्तुं कलासंज्ञस्तु तत्स्मृतम्।।"
(शुक्रनीति ४.३.२५)

''जो - जो कर्म बोलकर समुचित ढङ्गसे पूरा किया जा सकता है, वह **विद्या** कहा जाता है और जिन कर्मोंका सम्पादन मूक भी हाथ, पैर आदिकी सहायतासे कर सकता है, वह **कला** कहलाती है।।"

ज्ञानतत्त्वेन सम्पूर्णः पूर्णतत्त्वपदे स्थितः।
परब्रह्मरतो नित्यं पुरी नामा स उच्यते।।३६।।

जो ज्ञानतत्त्वसे सम्पूर्ण है, प्रत्यगात्मसंज्ञक पूर्णतत्त्वपदमें स्थित है एवम् प्रत्यगात्माकी परब्रह्मरूपताके अनुशीलनमें नित्य ही संलग्न है; वह यति 'पुरी' नामसे विख्यात है।। ३६।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय–सेतु

भूरिशब्देन सौवर्णं वार्यते येन जीविनाम्।
सम्प्रदायो यतीनाञ्च भूरिवारः स उच्यते।।३७।।

जिसके द्वारा प्राणियोंको अनर्थमूलक सुवर्णादि – सम्पत्तियोंके सञ्चयसे उपराम किया जाता है; यतियोंका वह सम्प्रदाय '**भूरिवार**' कहा जाता है।। ३७।।

चिन्मात्रं चैत्यरहितमनन्तमजरं शिवम् ।
यो जानाति स वै विद्वान् चैतन्यं तद्विधीयते।।३८।।

चैत्यसंज्ञक दृश्यप्रपञ्चसे रहित अनन्त, अजर, चिन्मात्र शिवको जो जानता है; वह अवश्य ही विद्वान् है; उस ब्रह्मचारीके लिए '**चैतन्य**' नाम विहित है।।३८।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२.५.शेषाम्नायाः

मर्यादैषा सुविज्ञेया चतुर्मठविधायिनी।
तामेतां समुपाश्रित्य आचार्याः सम्प्रतिष्ठिताः।।३९।।

चारों मठोंका विधान करने वाली यह मर्यादा रांजाओं, आचार्यों तथा मनीषियोंके लिए भलीभाँति समझने योग्य है। श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास तथा नीतिशास्त्रसम्मत इसके सर्वथा अनुरूप चतुराम्नाय – चतुष्पीठपर अनुरूप आचार्य सन्निहित किये गये हैं।। ३९।।

अथोर्ध्वं शेषा आम्नायास्ते विज्ञानैकविग्रहाः।
पञ्चमस्तूर्ध्व आम्नायः सुमेरुर्मठ उच्यते।
सम्प्रदायोऽस्य काशी स्यात् सत्यज्ञानाभिधे पदे।। ४०।।

भौगोलिक धरातलपर दिक् क्रमसे चार आम्नायका कथन करनेके अनन्तर एकमात्र विज्ञानस्वरूप अतिरिक्त आम्नायोंका निरूपण किया जाता है। पाँचवाँ ऊर्ध्वाम्नाय है, जिसे **'सुमेरुमठ'** कहा जाता है। इसका सम्प्रदाय काशी है तथा सत्य और ज्ञान – नामक सन्याससे सम्बद्ध इसके पद हैं।।४०।।

कैलासः क्षेत्रमित्युक्तं देवतास्य निरञ्जनः।
देवी माया तथाचार्य ईश्वरोऽस्य प्रकीर्तितः।। ४१।।

इसका क्षेत्र कैलास कहा गया है, इसके देवता निरञ्जन हैं। इसकी देवी माया है तथा ईश्वर इसके आचार्य कहे गये हैं।। ४१।।

तीर्थं तु मानसं प्रोक्तं ब्रह्मतत्त्वावगाहि तत्।
तत्र संयोगमात्रेण सन्यासं समुपाश्रयेत् ।। ४२।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसका तीर्थ मानस कहा गया है, वह ब्रह्मतत्त्वमें अवगाहनरूप है। उसका संयोग होते ही मनुष्य अविद्या-काम-कर्मके त्यागसे सम्भावित सन्यासस सम्पन्न हो जाता है।।४२।।

सूक्ष्मवेदस्य वक्ता च तत्र धर्मं समाचरेत्।
षष्ठः स्वात्माख्य आम्नायः परमात्मा मठो महान् ।। ४३।।

इसके ब्रह्मचारी वेदबीज ओङ्कारसहित वेदोंके शिरोभाग उपनिषत्-संज्ञक सूक्ष्मवेदके वक्ता हैं। वहाँ शमादि मोक्षधर्मका आचरण करना चाहिए। छठा स्वात्मा नामक आम्नाय है। परमात्मा नामक महान् मठ है।।"।। ४३।।

सत्त्वतोषः सम्प्रदायः पदं योगमनुस्मरेत्।
नभः सरोवरं क्षेत्रं परहंसोऽस्य देवता।। ४४।।

इसका सत्त्वतोष (समचित्ततासुलभ सन्तोष) नामक सम्प्रदाय है। सन्याससे सम्बद्ध इसका पद योग - संज्ञक है। नभःसरोवर इसका क्षेत्र है। परमहंस इसके देवता हैं।। ४४ ।।

देवी स्यान्मानसी माया आचार्यश्चेतनाह्वयः।
त्रिपुटीतीर्थमुत्कृष्टं सर्वपुण्यप्रदायकम्।। ४५।।

मानसी माया इसकी देवी है। चेतन - संज्ञक इसके आचार्य हैं। सर्वपुण्यदायक त्रिपुटी नामक इसका उत्कृष्ट तीर्थ है।। ४५ ।।

भवपाशविनाशाय सन्न्यासं तत्र चाश्रयेत्।
वेदान्तवाक्यवक्ता च तत्र धर्मं समाचरेत् ।। ४६।।

यहाँ भवबन्धके विनाशकी भावनासे सन्यासका आश्रय लेना चाहिए। इसके ब्रह्मचारीको वेदान्तवाक्यका प्रवचन करते हुए तदनुकूल शमादिधर्मका आचरण करना चाहिए।। ४६ ।।

सप्तमो निष्कलाम्नायः सहस्रार्कद्युतिर्मठः।
सम्प्रदायोऽस्य सच्छिष्यः श्रीगुरोः पादुके पदे।। ४७।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. मठाम्नाय-सेतु

सातवाँ निष्कलाम्नाय है। मठका नाम सहस्रार्कद्युति है। सत् - शिष्य इसका सम्प्रदाय है। श्रीगुरुकी दोनों पादुकाएँ ही यहाँके सन्यांसियोंके पद हैं।। ४६।।

तत्रानुभूतिः क्षेत्रं स्याद् विश्वरूपोस्य देवता।
देवी चिच्छक्तिनाम्नी हि आचार्यः सद्गुरुः स्मृतः।। ४८।।

अनुभूति इसका क्षेत्र है। विश्वरूप इसके देवता हैं। इसकी देवी चित् - शक्ति नामकी है। सद्गुरु ही इसके आचार्य कहे गये हैं।। ४८।।

सच्छास्त्रश्रवणं तीर्थं जरामृत्युविनाशकम्।
पूर्णानन्दप्रसादेन सन्न्यासं तत्र चाश्रयेत्।। ४९।।

इसका तीर्थ सत् - शास्त्रोंका श्रवण है; जो कि जरा और मृत्युका निवारक है। पूर्णानन्दके प्रसादसे यहाँ पूर्णानन्दप्रदायक सन्न्यास लेना चाहिए।। ४९।।

इति शेषाम्नायः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. मठाम्नाय - महानुशासनम्

(उक्ताश्चत्वार आम्नाया यतीनां हि पृथक् पृथक्।
ते सर्वे चतुराचार्यनियोगेन यथाविधि।।)
आम्नायाः कथिता ह्येते यतीनाञ्च पृथक् पृथक्।
ते सर्वैश्चतुराचार्यैर्नियोगेन यथाक्रमम्।।
(ते सर्वे चतुराचार्याः नियोगेन यथाक्रमम्।।) ५०।।

भौगोलिक धरातलपर ये चार सन्यासियोंके पृथक् - पृथक् आम्नाय कहे गये। वे मेरे द्वारा निर्धारित क्रमके अनुसार चारों आचार्योंके द्वारा नियोजित होने योग्य हैं। / उन पर प्रतिष्ठित वे चारों आचार्य मेरे द्वारा निर्धारित क्रमके अनुसार नियोजित होने योग्य हैं।। ५०।।

प्रयोक्तव्याः स्वधर्मेषु शासनीयास्ततोऽन्यथा।
कुर्वन्तु एव सततमटनं धरणीतले।। ५१।।

वे अपने - अपने धर्मोंके परिपालनमें अप्रमत्ततापूर्वक संलग्न करने योग्य हैं। दायित्वका यथावत् निर्वाह न करने पर या विपरीताचरण करनेपर वे शासन करने योग्य हैं। सन्यासधर्म और मेरे द्वारा निर्धारित अतिरिक्त नियमोंके अनुसार वे धरातलपर सदा विचरण किया करें।।५१।।

विरुद्धाचारणप्राप्तावाचार्याणां समाज्ञया।
लोकान् संशीलयन्त्येव स्वधर्माप्रतिरोधतः।। ५२।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वे अपने – अपने अधिकृत भूभागमें 'जनता धर्मविरुद्ध आचरण न करे', इसकी निगरानी रखें। वे उनके द्वारा स्वधर्मके अविरुद्ध और सर्वथा अनुरूप आचरण करानेकी भावनासे नियमानुसार सदा अपने अधिकृत क्षेत्रमें पर्यटन किया करें।। ५१।।

स्व-स्वराष्ट्रप्रतिष्ठित्यै सञ्चारः स्वविधीयताम्।
मठे तु नियतो वास आचार्यस्य न युज्यते।। ५३।।

वे अपने – अपने राष्ट्र (क्षेत्र) की सुप्रतिष्ठितिके लिए परिव्राजकधर्मके अनुरूप परिभ्रमणशील बने रहें। मठमें नियत निवास आचार्यके लिए विहित नहीं है।। ५३।।

वर्णाश्रमसदाचारा अस्माभिर्ये प्रसाधिताः।
रक्षणीयाः सदैवैते स्वे - स्वे भागे यथाविधि।। ५४।।

मन्वादि मुनीन्द्रोंद्वारा निर्धारित उस मर्यादाका अनुमोदन तथा प्रतिपादन हमारे द्वारा भी भाष्य एवम् प्रकरण ग्रन्थोंमें किया गया है। वर्णाश्रमसम्बन्धी सदाचार जो हमारे द्वारा प्रसाधित हैं; वे अपने – अपने भूभागमें इन आचार्योंके द्वारा सदा अवश्य ही यथावत् रक्षा करने योग्य हैं।। ५४।।

पूर्व देहके परित्यागके अव्यवहित पूर्वक्षणमें मनुष्यशरीरके अनुकूल प्रायणकालिक उद्बुद्ध गुण – कर्मके अनुरूप उत्तर देहगत वर्णकी समुपलब्धि सुनिश्चित है। वर्णानुरूप आश्रमकी विधा भी निर्धारित है। सर्व शरीरोंके पाञ्च भौतिक तथा आत्माके सदृश होने पर भी वेदविहित भेदक वर्णाश्रममर्यादा समस्त भेदभूमियोंका सदुपयोग एवम् निर्भेद ब्रह्मात्मतत्त्वमें मनःस्थितिके प्रयोजनकी सिद्धिका एकमात्र उपाय है।

यतो विनष्टिर्महती धर्मस्यास्य प्रजायते।
मान्द्यं संत्याज्यमेवात्र दाक्ष्यमेव समाश्रयेत्।।५५।।

सनातन मनीषियोंके द्वारा चिर परीक्षित और प्रयुक्त अहिंसादि पञ्च

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीलसंज्ञक सामान्य मानवधर्म, वर्णाश्रमरूप विशेष धर्म तथा मोक्षधर्मका समवेतस्वरूप सनातन - वैदिक - आर्य धर्म है। यद्यपि यह दार्शनिक, वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक धरातलपर सदा सर्वत्र सर्वहितप्रद है; तथापि क्षीणसत्त्व मोघदर्शियोंकी दुरभिसन्धिके कारण इसका अतिशय विलोप हो रहा है। ऐसी स्थितिमें संत्याज्य मन्द मति तथा गतिका परित्याग कर दक्षताका ही समाचरण अपेक्षित है।। ५५।।

परस्परविभागे तु प्रवेशो न कदाचन।
परस्परेण कर्त्तव्या ह्याचार्येण व्यवस्थितिः।। ५६।।

हमारे द्वारा निर्धारित परस्पर विभाजित क्षेत्रोंमें अधिकारके अतिक्रमणकी भावनासे अन्य आचार्यको कभी भी प्रवेश नहीं करना चाहिए। आचार्योंके द्वारा परस्पर सद्भावपूर्ण सम्वादके माध्यमसे विषम परिस्थितियोंका धर्मानुकूल समाधान कर लेना चाहिए।। ५६।।

मर्यादाया विनाशेन लुप्येरन्नियमाः शुभाः।
कलहाङ्गारसम्पत्तिरतस्तां परिवर्जयेत्।। ५७।।

श्रुतिसम्मत धर्मसेतुरूपा मर्यादाके विनाशसे समस्त शुभ नियमोंका विलोप तथा सर्वत्र कलहकी वृद्धि भी सुनिश्चित है। अतः मर्यादासूचक नियमोंके विलोपसे सम्भव कलहका परित्याग अवश्य करना चाहिए।।५६।।

परिव्राडार्यमर्यादां मामकीनां यथाविधि।
चतुष्पीठाधिगां सत्तां प्रयुञ्ज्याच्च पृथक् पृथक्।। ५८।।

मेरे द्वारा निर्धारित आर्योचित श्रेष्ठ मर्यादाका यथोचित परिपालन होना चाहिए तथा चारों पीठोंके पृथक् - पृथक् अस्तित्व और अधिकारादिको यथावत् प्रयुक्त रखना चाहिए।। ५८।।

अस्मिँल्लोकेऽथवामुस्मिन् मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।
दृष्टा योगाः प्रयुक्ताश्च पुंसां श्रेयः प्रसिद्धये।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तानातिष्ठति यः सम्यगुपायान् पूर्वदर्शितान् ।
अवरः श्रद्धयोपेत उपेयान् विन्दतेऽञ्जसा ।।
ताननादृत्य योऽविद्वानर्थानारभते स्वयम् ।
तस्य व्यभिचरन्त्यर्था आरब्धाश्च पुनः पुनः ।।
(श्रीमद्भागवत ४.१८.३-५)

"तत्त्वदर्शी मुनियोंने इस लोक और परलोकमें मनुष्योंके कल्याण करनेके लिये कृषि, अग्निहोत्रादि बहुतसे उपाय निकाले और काममें लाये हैं । उन प्राचीन ऋषियोंके बताये हुए उपायोंका इस समय भी जो श्रद्धापूर्वक भलीभाँति आचरण करता है, वह सुगमतासे अभीष्ट फल प्राप्त कर लेता है । परन्तु जो अज्ञानी उनका अनादर करके अपने मनःकल्पित उपायोंका आश्रय लेता है, उसके सभी उपाय और प्रयत्न पुनः–पुनः निष्फल होते हैं ।।"

तत्त्वदर्शी महर्षियों और मुनियों द्वारा दृष्ट और प्रयुक्त लौकिक तथा पारलौकिक उत्कर्षके साधनोंको परिस्कृत और क्रियान्वित करनेमें हम अवश्य ही अधिकृत हैं; परन्तु कृषि, भवन, वाणिज्य, यज्ञ, दान, तप आदिसे सम्बद्ध सनातन विज्ञानका परित्याग कर नवीन उद्भावना और प्रयोगका आलम्बन लेनेपर विकासके स्थानपर विनाशका पथ ही प्रशस्त कर सकते हैं । अत एव प्राचीन दर्शनका देश, काल, परिस्थितिके अनुरूप अवबोध और क्रियान्वयनका प्रक्रम ही सर्वहितप्रद और सुखप्रद है।

सनातनकुलमें समुत्पन्न एवम् वेद और वेदसम्मत धर्म तथा ब्रह्ममें परम्परासे आस्थान्वित महानुभाव **वैदिक** हैं।

शीलसम्पन्न कुलीन होनेके कारण वैदिक **आर्य** हैं। शास्त्रनिन्दित अकर्त्तव्यका अनाचरण करनेवाले अर्थात् सम्प्राप्त विवेकका सर्वथा समादर करते हुए ही व्यवहार करनेवाले **आर्य** कहे जाते हैं – **"कर्त्तव्यमाचरन्**

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यमकर्त्तव्यमनाचरन् तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृतः।"

सनातन शास्त्रोंमें आर्य पद श्रेष्ठ द्विजादिके लिये प्रयुक्त होता है, न कि संस्कारविहीन दस्यु आदिके लिये, यह तथ्य – **"न यो रे आर्यं नाम दस्यवे" (ऋक् शा.संहिता १०.४९.३)**के अनुशीलनसे सिद्ध है। –

"मानं त्यक्त्वा यो नरो वृद्धसेवी
विद्वान् क्लीबः पश्यति प्रीतियोगात्।
दाक्ष्येण हीनो धर्मयुक्तो नदान्तो
लोकेऽस्मिन् वै पूज्यते सद्भिरार्यः।।"
(महाभारत - शान्तिपर्व २९२.२३)

"जो विद्वान् अभिमानका त्याग करके वृद्ध पुरुषोंकी सेवा करता, विषयोपभोगमें अनासक्त होकर सबको प्रेमभावसे देखता, मनमें चतुराई न रखकर धर्ममें संलग्न रहता, दूसरेका दमन नहीं करता, वह मनुष्य इस लोकमें आर्य (श्रेष्ठ) है तथा सत्पुरुष भी उसका समादर करते हैं।।"

"सदाहमार्यान्निभृतोऽप्युपासे
न मे विधित्सोत्सहते न रोषः।
न वाप्यहं लिप्समानः परैमि
न चैव किञ्चिद् विषयेण यामि।।"
(महाभारत - शान्तिपर्व २९९.१९)

"यद्यपि मैं सब प्रकारसे परिपूर्ण हूँ, मेरा कुछ जानना, पाना तथा करना शेष नहीं है, तथापि मैं आर्य (श्रेष्ठ) पुरुषोंकी उपासना करता रहता हूँ। मुझपर न तृष्णाका वश चलता है और न रोषका ही। मैं कुछ पानेके लोभसे धर्मका उल्लङ्घन नहीं करता और न विषयोंकी प्राप्तिके लिए ही कहीं आता – जाता हूँ।।"

"यस्योदकं मधुपर्कं च गां च
न मन्त्रवित् प्रतिगृह्णाति गेहे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोभाद् भयादथ कार्पण्यतो वा
तस्यानर्थं जीवितमाहुरार्याः।।"

(महाभारत – उद्योगपर्व ३८.३)

"मन्त्रवेत्ता जिसके घर दाताके लोभ, भय या कृपणताके कारण जल, मधुपर्क और गौको स्वीकार नहीं करता, आर्य पुरुषोंने उस गृहस्थका जीवन व्यर्थ बताया है।।"

उत्पत्ति, अनुग्रह, संस्कारादि हेतुओंसे श्रेष्ठता, भद्रता अर्थात् उत्कर्षको प्राप्त व्यक्ति तथा वस्तुका नाम वैदिक वाङ्मयमें आर्य है। –

"इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् " (ऋक् ९.६३.५) – यहाँ यज्ञमें प्रयुक्त तथा यज्ञफलमें विनियुक्त सर्वसंज्ञक सोम सोमाभिमानी देवोंके अनुग्रहसे आर्यत्वसम्पन्न अर्थात् श्रेष्ठता – उत्कृष्टता प्राप्त होने योग्य हैं, इस आशयको व्यक्त किया गया है।

शुचिर्जितेन्द्रियो वेदवेदाङ्गादिविशारदः।
योगज्ञः सर्वतन्त्राणामस्मदास्थानमाप्नुयात् ।।
(योगज्ञः सर्वशास्त्राणां स मदास्थानमाप्नुयात्।।) ५९।।

शुचिता तथा जितेन्द्रियतासम्पन्न ऋगादि वेद तथा शिक्षाकल्पादि वेदाङ्गादि सर्वशास्त्रोंमें पारङ्गत और यमादि अष्टाङ्ग योगका मर्मज्ञ ही मेरे द्वारा प्रतिष्ठित पीठका अधिपति आचार्य हो सकता है।। ५९।।

उक्तलक्षणसम्पन्नः स्याच्चेन्मत्पीठभाग्भवेत्।
अन्यथाऽऽरूढपीठोऽपि निग्रहार्हो मनीषिणाम्।।६०।।

यदि उक्त लक्षणसम्पन्न हो तब मेरे द्वारा प्रतिष्ठित पीठपर आरूढ हो सकता है; अन्यथा नहीं। कदाचित् कोई उक्त लक्षणविहीन होनेपर भी मेरे स्थानपर आरूढ हो जाय, तब भी वह सत्य तथा अनृतके पक्षधर अधिकृत मनीषियोंके द्वारा अवश्य ही निग्रहयोग्य अर्थात् पदच्युत करने योग्य है।।६०।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. मठाम्नाय-महानुशासनम्

न जातु मठमुच्छिन्द्यादधिकारिण्युपस्थिते।
विघ्नानपि बाहुल्यादेष धर्म्मः सनातनः।।६१।।

अधिकारीके विद्यमान होने पर भी किसी व्याजसे (बहाने) मठकी प्रशस्त परम्पराका उच्छेद कभी भी नहीं करना चाहिए। अभिप्राय यह है कि एकपीठ पर अभिषिक्त अधिपतिको अन्य पीठपर अभिषिक्त नहीं होना चाहिये। विघ्नबहुलताकी स्थितिमें भी विघ्नोंका निराकरणकर इस मर्यादाका दक्षतापूर्वक निर्वाह करे; यह धर्म सनातन है।। ६१।।

अस्मत्पीठे समारूढः परिव्राडुक्तलक्षणः।
अहमेवेतिविज्ञेयो यस्य देव इति श्रुतिः।।६२।।

मेरे द्वारा प्रतिष्ठित पीठपर आरूढ उक्त लक्षणसम्पन्न संन्यासी परमेश्वरमें भक्तितुल्य गुरुमें भक्तिकी प्रतिपादिका **'यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ' (श्वेताश्वतरोपनिषत् ६.२३)** इस श्रुतिके अनुसार मुझ शिवका रूप अर्थात् शिवस्वरूप ही मान्य है।। ६२।।

एक एवाभिषेच्यः स्यादन्ते लक्षणसम्मतः।
तत्तत्पीठे क्रमेणैव न बहु युज्यते क्वचित्।।६३।।

पीठपर पदासीन संन्यासीका देहावसान हो जानेपर उक्त लक्षणसमन्वित एक यतिका ही अभिषेक करना चाहिए। एक पीठपर बहुतोंको पदासीन करना या एक पीठपर बहुतोंका समासीन होना सर्वथा अनुचित है।। ६३।।

सुधन्वनः समौत्सुक्यनिर्वृत्त्यै धर्महेतवे।
देवराजोपचारांश्च यथावदनुपालयेत्।।६४।।

राजा सुधन्वाकी उत्सुकताकी निवृत्तिके लिए एवम् धर्मरक्षाकी भावनासे देवेन्द्रके महाराजोचित छत्रादि उपचारोंको आगमसम्मत विधाके अनुसार स्वीकार (धारण) कर उसका अनुपालन करना चाहिए ।। ६४।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. मठाम्नाय-महानुशासनम्

रेणुकातन्त्रमें श्रीविद्यारण्य यतीन्द्रके प्रति श्रीलक्ष्मी तथा सरस्वतीके सन्निहित वचनके अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है कि देवभावभावित मूर्धाभिषिक्त - भाष्यसिंहासन तथा मन्त्रसिंहासनपर आरूढ यतिशेखर मण्डलाधिप राजसिंहासनारूढ राजाके तुल्य श्रीब्रह्माजीके द्वारा तदर्थ विनिर्मित गजेन्द्रपर सामान्य यतियोंके लिए निषिद्ध होनेपर भी आरूढ हो सकते हैं और छत्रादि चिह्नोंको धारण कर सकते हैं। -

छत्रचामरमुख्यानि विरुदादीनि धारय।
देविरूपेण चात्मानं सदा भावय नान्यथा।।
त्वया धृतानि सर्वाणि देव्या एवेति भावय।
मण्डलाधिप चिह्नानि धारयास्मन्मतानुगः।।
निषिद्धान्यपि सर्वाणि सामान्ययतिगान्यपि।
एवं त्वया प्रकर्त्तव्यं नात्रकार्या विचारणा।।
गजेन्द्रारोहमात्रन्तु यतेः! कुरु मदाज्ञया।
यानादीनामधिक्षेपो न कर्त्तव्यः कदाचन।।
गजेन्द्रारोहणे हेतुः वर्त्तते वक्ष्यते शृणु।
मूर्द्धाभिषिक्तपुरुषः श्रेष्ठाय यतिशेखर।।
सिंहासनवते ब्रह्मा सृष्टवान् दन्तिशेखरम्।
मूर्द्धाभिषिक्तास्त्रिविधास्तथा सिंहासनं त्रिधा।
मन्त्रसिंहासनं चैव त्रिविधं निर्मितं पुरा।।
अतो मूर्धाभिषिक्तस्त्वं गजारोहणमाचर।

केवलं धर्ममुद्दिश्य विभवो बाह्यचेतसाम्।
विहितश्चोपकाराय पद्मपत्रनयं व्रजेत्।। ६५।।

केवल धर्मसञ्चयकी भावनासे बहिर्मुख व्यक्तियोंके उपकारके लिए वैभवका ग्रहण, उपयोग तथा विनियोग विहित है; न कि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषयरसरसिकताकी स्फूर्तिकी भावनासे। सन्यासीको आत्माकी असङ्गताका अनुशीलन करते हुए स्वयं पद्मपत्रकी जलसे अलिप्तताके तुल्य असङ्ग रहना चाहिए।।६५।।

बहिर्मुख जनकी मनःस्थिति बहुत विचित्र होती है। वे बहुधा अवधूतशिरोमणियोंको उन्मत्त समझ लेते हैं। भिक्षावृत्तिसे उदरपूर्ति करनेवाले अकिञ्चन तपोधन परिव्राजकोंको कङ्गाल मान लेते हैं, लोकानुग्रहके लिए वैभव स्वीकार करनेवाले मुनीन्द्रोंको अपनेसे भी अधिक भोगी समझ लेते हैं। तथापि उनकी आस्थाका केन्द्र हुए बिना उन्हें श्रुतिसेतुके पालनमें संलग्न रखना सर्वथा असम्भव है। अत एव उन्हें सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, सम्पन्न, सेवापरायण, सर्वहितैषी और स्वस्थ करनेकी भावनासे ही वैभवादिका सङ्कलन तथा उपयोग कर्त्तव्य है।

निर्णयोऽसौ सुविज्ञेयश्चतुष्पीठाधिकारिणा।
नात्र व्यत्यय आदेयः कदाचिदपि शीलिना।।६६।।

चारों पीठोंके अधिकारी सुविज्ञ आचार्योंके द्वारा यह निर्णय सुविज्ञेय है। शीलनिधि उनके द्वारा विषम परिस्थितिमें भी इसके विपरीत आचरण अपनाने योग्य नहीं है।। ६६।।

मठाश्चत्वार आचार्याश्चत्वारश्च धुरन्धराः।
सम्प्रदायश्च चत्वार एषा धर्मव्यवस्थितिः।।६७।।

मेरे द्वारा प्रतिष्ठित चार मठ हैं। धुरन्धर आचार्य भी चार ही हैं। तदनुरूप सम्प्रदाय भी चार ही हैं। यह चतुराम्नाय चतुष्पीठसे सम्बद्ध धर्ममर्यादा है।। ६७।।

सुधन्वा हि महाराजस्तदन्ये च नरेश्वराः।
धर्मपारम्परीमेतां पालयन्तु निरन्तरम्।।६८।।

धर्ममार्गपर धैर्यपूर्वक प्रयाण करते हुए जनसामान्यको धर्ममार्गपर आरूढ करने सम्बन्धी नियमोंका पालन केवल शङ्कराचार्योंके लिए ही

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विहित नहीं है; अपितु सुधन्वा तथा अन्य नरेन्द्र भी इस सनातन धर्मका निरन्तर पालन करें।। ६८।।

चातुर्वर्ण्यं यथायोग्यं वाङ्मनःकायकर्मभिः।
गुरोः पीठं समर्चेत विभागानुक्रमेण वै।। ६९।।

व्यासपीठ तथा राजपीठसे सम्बद्ध मनीषियोंका ही नहीं; बल्कि चारों वर्णोंका यह दायित्व है कि यथायोग्य विभागक्रमानुरूप मन, वाणी, शरीरसम्बन्धी कर्मोंसे गुरुके पीठकी समर्चा करें।। ६९।।

धरामालम्ब्य राजानः प्रजाभ्यः करभागिनः।
कृताधिकाराः आचार्या धर्मतस्तद्वदेव हि।। ७०।।

जिस प्रकार राजाओंका यह अधिकार है कि वह पृथ्वीकी रक्षा करते हुए अपनी प्रजासे कर प्राप्त करें, उसी प्रकार पीठासीन आचार्योंका यह अधिकार है कि अपने क्षेत्रकी प्रजासे श्रुतिसेतुकी रक्षाकी भावनासे धर्मार्थविहित कर प्राप्त करें।। ७०।।

धर्मो मूलं मनुष्याणां स चाचार्यावलम्बनः।
तस्मादाचार्यसुमणेः शासनं सर्वतोधिकम्।। ७१।।

धर्म मनुष्योंका मूल है ; वह पालक तथा उपदेशक आचार्योंपर निर्भर है। अत एव श्रेष्ठ आचार्योंका शासन ही सब शासनसे उत्कृष्ट है।।७१।।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शासनं सर्वसम्मतम्।
आचार्यस्य विशेषेण ह्यौदार्यभरभागिनः।।७२।।

अत एव सर्वसम्मत शासनका सब तरहसे पालन करना चाहिए; विशेषकर उस आचार्यका जो परम उदार हो।। ७२।।

आचार्याक्षिप्तदण्डास्तु कृत्वा पापानि मानवाः।
निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा।।७३।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप करनेवाले मनुष्य भी आचार्यके द्वारा दण्डित होने पर निष्पाप होकर उसी प्रकार स्वर्गमें जाते हैं, जिस प्रकार सुकर्मा सत्पुरुष।। ७३।।

इत्येवं मनुरप्याह गौतमोऽपि विशेषतः।
विशिष्टशिष्टाचारोऽपि मूलादेव प्रसिद्ध्यति।। ७४।।

ऐसा मनुने भी कहा है और विशेषकर गौतमने भी इस तथ्यका भलीभाँति प्रतिपादन किया है कि विशेष शिष्टाचार भी मूलसे ही प्रसिद्धि प्राप्त करता है। अभिप्राय यह है कि सत्पुरुषों द्वारा समनुष्ठित धर्म शिष्टाचार बन जाता है और शिष्टाचार जनसामान्यका आचरण बन जाता है। अतः धर्मनिष्ठ आचार्य और राजाके द्वारा प्रचार - प्रसारके कारण ख्याति प्राप्त धर्म जनजीवन बन जाय, ऐसा प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।। ७४।।

तानाचार्योपदेशाँश्च राजदण्डाँश्च पालयेत्।
तस्मादाचार्यराजानावनवद्यौ न निन्दयेत्।।७५।।

आचार्योपदेश तथा राजदण्ड प्रजापालक हैं। सृष्टिसंरक्षणके लिए आचार्य और राजाका सर्वाधिक महत्त्व अवश्य ही मान्य है। अतः धर्माचार्य और प्रजापालक राजा निर्दोष हैं, इनकी निन्दा न करें।। ७५।।

(७०-७५)

धर्मस्य ब्राह्मणो मूलमग्रं राजन्य उच्यते।
तस्मात्समागमे तेषामेनो विख्याप्य शुद्ध्यति।।
ब्राह्मणः सम्भवेनैव देवानामपि दैवतम्।
प्रमाणं चैव लोकस्य ब्रह्मात्रैव हि कारणम्।।
तेषां वेदविदो ब्रूयुस्त्रयोऽप्येनः सुनिष्कृतम्।
सा तेषां पावनाय स्यात्पवित्रा विदुषां हि वाक्।।
(मनुस्मृति ११. ८३-८५)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
३. मठाम्नाय-महानुशासनम्

" महर्षियोंने ब्राह्मणोंको धर्मका मूल तथा क्षत्रियको उसका अग्रभाग कहा है। अतः उन दोनोंकी समुपस्थितिमें अपने पापका पश्चात्तापपूर्वक प्रकाश करनेपर वह पापी अवभृत स्नान करनेसे शुद्ध हो जाता है।।"

"ब्राह्मण जन्मसे ही देवोंका भी देव है। वह मनुष्योंका प्रत्यक्षतुल्य प्रमाण है। सर्वजीवघनात्मक हिरण्यगर्भके मुखरूप उसकी श्रेष्ठतामें स्वयं वेद ही प्रमाण है।।"

"उन सदाचार - संयम - सम्पन्न , वेदज्ञ ब्राह्मणोंमें तीन ब्राह्मण पापशुद्धिके लिए जिस प्रायश्चित्तका विधान करें, वह उनका निवारक मान्य है। कारण यह है कि उन अमलात्मा विद्वानोंकी वाणी पवित्र होती है।। "

स्वे स्वे धर्मे निविष्टानां सर्वेषामनुपूर्वशः।
वर्णानामाश्रमाणां च राजा सृष्टोऽभिरक्षिता।।

(मनुस्मृति ७.३५)

"अपने - अपने धर्ममें संलग्न सब वर्णों तथा आश्रमोंकी रक्षा करनेवाले राजाको ब्रह्माने बनाया है।।"

राजा सर्वस्येष्टे ब्राह्मणवर्जं साधुकारी स्यात् । ....तानाचार्योपदेशो दण्डश्च पालयते, तस्माद्राजाचार्यावनिन्द्या-वनिन्द्यौ।

(गौतमस्मृतिः ११)

"ब्राह्मणातिरिक्त सब पर शासन करके राजा सबका कल्याणकारी सिद्ध होता है। ...आचार्यका उपदेश और राजदण्ड ब्राह्मणादि प्रजाका पालन करते हैं। अत एव राजा तथा आचार्य अनिन्द्य हैं; अनिन्द्य हैं।।"

ब्राह्मणो हि महद्दैवं कथितं वेदपारगैः।।
द्विजाश्च सर्वभूतानां धर्मकोशस्य गुप्तये।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. मठाम्नाय–महानुशासनम्

उत्पत्तिरेव विप्रस्य मूर्तिर्धर्मस्य शाश्वती।
स हि धर्मार्थमुत्पन्नो ब्रह्मभूयाय कल्पते।।
(वृद्धगौतमस्मृतिः ३.७०,७०.१/२, ७३)

"वेदोंके पारदर्शी मनीषियोंके द्वारा ब्राह्मण परम देव कहे गये हैं। सब प्राणियोंके धर्मकोशकी रक्षाके लिए ही द्विजोंका जन्म है, यह सुनिश्चित सिद्धान्त है।।"

"धर्मकी सनातनी मूर्त्ति ब्राह्मणकी उत्पत्ति ही धर्मके लिए है। स्वधर्मपरिपालक वे निस्सन्देह जीवभावविनिर्मुक्त ब्रह्मरूप होनेमें समर्थ हैं।।"

"धर्मेति धारणे धातुर्महत्त्वे चैव उच्यते।
अधारणेऽमहत्त्वे वाधर्मः स तु निरुच्यते।।
तत्रेष्टप्रापको धर्म आचार्यैरुपदिश्यते।
अधर्मश्चानिष्टफलं आचार्यैर्नोपदिश्यते।।
वृद्धाश्चालोलुपाश्चैव आत्मवन्तो ह्यदाम्भिकाः।
सम्यग्विनीता मृदवस्तानाचार्यान् प्रचक्षते।।"
(मत्स्यपुराण १४५.२७ –२९)

"'धृ' – धातु धारण करने तथा महत्त्वके अर्थमें प्रयुक्त होती है। अधारण तथा अमहत्त्वमें प्रयुक्त अधर्म शब्दका अर्थ इसके विपरीत है।।"

"आचार्यवृन्द इष्टकी प्राप्ति करानेवाले धर्मका ही उपदेश करते हैं। अनिष्ट फलप्रद अधर्मका उपदेश आचार्यगण नहीं करते।।"

"जो वृद्ध, निर्लोभ, संयमी तथा आत्मज्ञ, दम्भहीन, परम विनीत, मृदु – स्वभाव होते हैं; उन्हें **'आचार्य '** कहा जाता है।।"

आचिनोति हि शास्त्रार्थानाचारस्थापनादपि।
स्वयमाचरते यस्तु तस्मादाचार्य उच्यते ।।
(द्वयोपनिषत्)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. मठाम्नाय-महानुशासनम्

"जो शास्त्रके तात्पर्यका पूर्णरूपसे चयन करता है, अन्योंके आचरणमें उसे स्थापित करता है, स्वयं भी आचरण करता है; अत एव वह आचार्य कहा गया है।।"

"धर्मज्ञैर्विहितो धर्मः श्रौतस्मार्तो द्विजातिभिः।
दाराग्निहोत्रसम्बन्धमिज्या श्रौतस्य लक्षणम्।।"
"स्मार्तो वर्णाश्रमाचारो यमैश्च नियमैर्युतः।
पूर्वेभ्यो वेदयित्वेह श्रौतं सप्तर्षयोऽब्रुवन्।।"
(मत्स्यपुराण १४५. ३०)

"जो वृद्ध, निर्लोभ, आत्मज्ञानी, निष्कपट, अत्यन्त विनम्र तथा मृदुल स्वभाववाले होते हैं, उन्हें **आचार्य** कहा जाता है।।"

"धर्मके ज्ञाता द्विजातियोंद्वारा श्रौत और स्मार्त धर्मका विधान किया गया है। इनमें दारसम्बन्ध (विवाह), अग्निहोत्र और यज्ञ –ये **श्रौत धर्म**के लक्षण हैं।।"

"यम, नियमोंसे युक्त वर्णाश्रमाचार **स्मार्तधर्म** कहलाता है। सप्तर्षियोंने पूर्ववर्ती ऋषियोंसे श्रौतधर्मका ज्ञान प्राप्त करके पुनः उसका उपदेश किया था।।"

नानाविधानि कार्याणि कर्त्ता कारयिता च यः।
सर्वधर्मविधिज्ञश्च स आचार्य इत्युच्यते।।

"जो करने योग्य विविध कार्योंको स्वयं करता हो और अधिकृत व्यक्तियोंसे कराता हो, सामान्य तथा विशेष सर्व धर्मोंका विधिज्ञ हो, वह आचार्य इस नामसे कहा जाता है ।।"

आचार्यः त्रिविधः ।
चोदको दर्शयेन्मार्गं बोधकः स्थानमाचरेत् ।
मोक्षदस्तु परं तत्त्वं यज्ज्ञात्वा परमश्नुते ।।

"चोदक (नोदक, प्रेरक), बोधक तथा मोक्षद - भेदसे तीन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरहके आचार्य मान्य हैं। सन्मार्गदर्शक चोदक कहे जाते हैं, तदनुकूल यथोचित आचरणवाले बोधक कहे जाते हैं तथा परम तत्त्वके उपदेशके द्वारा निरावरण आत्माकी स्फूर्त्तिरूप मोक्षकी समुपलब्धि करानेवाले मोक्षद कहे जाते हैं।।''

''ऋषिर्हिंसागतौ धातुर्विद्या सत्यं तपः श्रुतम्।
एष सन्निचयो यस्मात् ब्रह्मणस्तु ततस्त्वृषिः।।''
(मत्स्यपुराण १४५. ८१)

''ऋषि –धातुका हिंसा और गति (गमन, ज्ञान, मोक्ष) – अर्थमें प्रयोग होता है। इसीसे ऋषि – शब्द निष्पन्न हुआ है। क्योंकि उसे ब्रह्माजीसे विद्या, सत्य, तप, शास्त्र –ज्ञानादि समूहोंकी प्राप्ति होती है, इसलिये उसे ऋषि कहते हैं।।''

''ऋचो यजूंषि सामानि ब्रह्मणोऽङ्गानि वै श्रुतिः।
मन्वन्तरस्यातीतस्य स्मृत्वा तन्मनुरब्रवीत्।।''
''तस्मात्स्मार्तः स्मृतो धर्मो वर्णाश्रमविभागशः।
एवं वै द्विविधो धर्मः शिष्टाचारः स उच्यते।।''
''शिषेर्धातोश्च निष्ठान्ताच्छिष्टशब्दं प्रचक्षते।
मन्वन्तरेषु ये शिष्टा इह तिष्ठन्ति धार्मिकाः।।''
''मनुः सप्तर्षयश्चैव लोकसन्तानकारिणः।
तिष्ठन्तीह च धर्मार्थं ताञ्छिष्टान् सम्प्रचक्षते।।''
''तैर्शिष्टैश्चलितो धर्मः स्थाप्यते वै युगे युगे।
त्रयी वार्ता दण्डनीतिः प्रजावर्णाश्रमेप्सया।।''
''शिष्टैराचर्यते यस्मात्पुनश्चैव मनुक्षये।
पूर्वैः पूर्वैर्मतत्वाच्च शिष्टाचारः स शाश्वतः।।''
''दानं सत्यं तपोऽलोभो विद्येज्या पूजनं दमः।
अष्टौ तानि चरित्राणि शिष्टाचारस्य लक्षणम्।।''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. मठाम्नाय–महानुशासनम्

"शिष्टा यस्माच्चरन्त्येनं मनुः सप्तर्षयश्च ह।
मन्वन्तरेषु सर्वेषु शिष्टाचारस्ततः स्मृतः।।"
"विज्ञेयः श्रवणाच्छ्रौतः स्मरणात् स्मार्त उच्यते।
इज्यावेदात्मकः श्रौतः स्मार्तो वर्णाश्रमात्मकः।।"

(मत्स्यपुराण १४५. ३२ – ४०)

"ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद – ये ब्रह्माके अङ्ग हैं। व्यतीत हुए मन्वन्तरके धर्मोंका स्मरण करके मनुने उनका उपदेश किया है।।"

"इसलिये वर्णाश्रमके विभागानुसार प्रयुक्त हुआ धर्म स्मार्त कहलाता है। इस प्रकार श्रौत और स्मार्तरूप द्विविध धर्मको **शिष्टाचार** कहते हैं।।"

"शिष् –धातुसे निष्ठासंज्ञक **क्त** – प्रत्ययका संयोग होनेपर **शिष्ट**–शब्द निष्पन्न होता है। प्रत्येक मन्वन्तरमें इस भूतलपर जो धार्मिक महानुभाव वर्तमान रहते हैं, उन्हें शिष्ट कहा जाता है।।"

"इस प्रकार लोककी वृद्धि करनेवाले सप्तर्षि और मनु इस भूतलपर धर्मका प्रचार करनेके लिये स्थित रहते हैं, अतः वे शिष्ट शब्दसे अभिहित होते हैं।।"

" वे शिष्टगण प्रत्येक युगमें मार्गभ्रष्ट हुए धर्मकी पुनः स्थापना करते हैं। अतएव शिष्टगण दूसरे मन्वन्तरमें प्रजाओंके वर्णाश्रमधर्मकी सिद्धिके लिये पुनः वेदत्रयी (ऋक्, यजुः, साम), वार्ता (कृषि, वाणिज्य) और दण्डनीतिका आचरण करते हैं। इस प्रकार पूर्वके युगोंमें उपस्थित पूर्वजोंद्वारा अभिमत होनेके कारण यह शिष्टाचार सनातन होता है।।"

"दान, सत्य, तप, अलोभ, विद्या, यज्ञानुष्ठान, पूजन और इन्द्रियनिग्रह– ये आठ आचरण शिष्टाचारके लक्षण हैं।।"

"क्योंकि मनु और सप्तर्षि आदि शिष्टगण सब मन्वन्तरोंमें इस लक्षणके अनुसार आचरण करते हैं, इसलिये इसे शिष्टाचार कहा जाता है।।"

"इस प्रकार पूर्वानुक्रमसे श्रवण किये जानेके कारण श्रुतिसम्बन्धी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्मको श्रौत जानना चाहिये और स्मरण होनेके कारण स्मृतिप्रतिपादित धर्मको स्मार्त कहा जाता है। श्रौतधर्म यज्ञ और वेदस्वरूप है तथा स्मार्तधर्म वर्णाश्रमात्मक है।।"

"श्रुतिस्मृतिभ्यां विहितो धर्मो वर्णाश्रमात्मकः।
शिष्टाचारप्रवृद्धश्च धर्मोऽयं साधुसम्मतः।।"
(मत्स्यपुराण १४५.५२)

"जो धर्म श्रुतियों और स्मृतियोंद्वारा प्रतिपादित वर्णाश्रमके आचारसे युक्त तथा शिष्टाचारद्वारा परिवर्द्धित होता है, वही साधु - सम्मत धर्म कहलाता है।।"

धर्म्मस्य पद्धतिर्ह्येषा जगतः स्थितिहेतवे।
सर्वं वर्णाश्रमाणां हि यथाशास्त्रं विधीयते।।७६।।

यह धर्मपद्धति है। जगत् की स्थितिमें हेतु है। तदर्थ सनातन वर्ण और आश्रम धर्मकी रक्षाके लिए श्रुति - स्मृति - पुराण - इतिहास तथा नीतिशास्त्रोंका अनुशीलनकर इसकी संरचना की गयी है। आचार्य तथा राजा दोनोंके लिए यह अनुपालनीय है।। ७६।।

कृते विश्वगुरुर्ब्रह्मा त्रेतायां ऋषिसत्तम।
द्वापरे व्यास एव स्यात् कलावत्र भवाम्यहम्।।७७।।

इति श्रीमठाम्नायसेतु - महानुशासनम्

सत्ययुगमें स्वयं ब्रह्मा, त्रेतामें विष्णु, द्वापरमें व्यासदेव विश्वगुरु थे। इस कलियुगमें मैं शङ्कराचार्य जगद्गुरु हूँ।। ७७।।

ब्रह्मा कृतयुगे पूज्यस्त्रेतायां यज्ञ उच्यते।
द्वापरे पूज्यते विष्णुरहं पूज्यश्चतुर्ष्वपि।।
(वायुपुराण २ . ३२. २१)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्

३. मठाम्नाय-महानुशासनम्

सत्ययुगमें ब्रह्मा पूज्य हैं, त्रेतामें यज्ञ अर्थात् यज्ञप्रवर्तक वसिष्ठ पूज्य हैं, द्वापरमें विष्णुके कलावतार व्यास पूज्य हैं । चारों युगोंमें पूज्य मैं महेश्वर कलियुगमें विशेषरूपसे पूज्य हूँ।।

कृते तु भगवान् सत्यस्त्रेतायां दत्त एव च।
द्वापरे भगवान् व्यासः कलौ श्रीशङ्करः स्वयम्।।
आद्ये सत्त्वमुनिः सतां वितरति ज्ञानं द्वितीये युगे
दत्तो द्वापरनामके तु सुमतिर्व्यासः कलौ शङ्करः।
इत्येवं स्फुटमीरितोऽस्य महिमा शैवे पुराणे यत-
स्तस्य त्वं सुमते मते त्ववतरेः संसारवार्धिं तरेः।।

(शङ्करदिग्विजय ९.२२)

सत्ययुगमें भगवान् सत्य (ब्रह्मा/दक्षिणामूर्त्ति /कपिल), त्रेतामें दत्तात्रेय, द्वापरमें भगवान् व्यास और कलिमें स्वयम् शङ्कर विश्वगुरु मान्य हैं।।

सत्ययुगमें सत्त्वगुणका उत्कर्ष होता है; अतः दक्षिणामूर्त्ति मौन रहते हुए भी मनसे ही उपदेश देकर शिष्यको कृतार्थ कर देते हैं। त्रेतामें मलिन सत्त्वगुणका उत्कर्ष होता है; अतः दत्तात्रेय सूत्रशैलीमें उपदेश देकर शिष्यको कृतार्थ कर देते हैं। द्वापर रजः प्रधान होता है; अतः व्यासदेव वेदोंका विभाग करते हैं ; महाभारत, पुराण, ब्रह्मसूत्रोंकी संरचना करते हैं तथा शिष्योंको प्रशिक्षण देते हैं, नैमिषारण्यमें व्यासपीठकी स्थापना करते हैं। कलि तमःप्रधान होता है; अतः शङ्कराचार्य भाष्यादि ग्रन्थोंका प्रणयन, परकायप्रवेश और व्यासपीठ तथा राजपीठका शोधन करनेमें अपार परिश्रम करते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. मठाम्नायोपनिषत्

ॐऊर्ध्वाम्नायगुरूपदेशभुवनाकारसिंहासनसिद्धाचारवन्दितं समस्तवेदवेदान्तसारनिर्माणं परात्परं निरञ्जनज्ञानार्थषट्चक्रजाग्रतीमयं परावाचा परात्परं सर्वसाक्षिधृतं चिन्मयं ज्योतिर्लिङ्गं निराकारं गलितं पूर्णप्रभाशोभितं शान्तं चन्द्रोदयनिभं भज मनस्तच्छ्रीगुरुचैतन्यं प्रणमामि।।

वेदबीज ओङ्कार स्मरणीय है। वेदान्तवेद्य ऊर्ध्वसंज्ञक सच्चिदानन्द ब्रह्म है। वह वेदाम्नायका अभिव्यञ्जक संस्थान है। वेदाम्नायसहित वेदैकसमधिगम्य ब्रह्मका अधिगम गुरुके उपदेशसे सम्भव है। भुवनाकार सिंहासन है। उस पर समासीन तथा सिद्धोंके आचरणसे वन्दित समस्त वेदवेदान्तोंके सारस्वरूप अविद्याकालुष्यविरहित परमोत्कृष्ट निरञ्जनदेव है। उसके बोधके लिए परा वाक् से सम्पन्न परमोत्कृष्ट सर्व साक्षी सर्वेश्वरसे समुद्भूत चिन्मय निराकार ज्योतिर्लिङ्गाकार मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञासंज्ञक षट्चक्रका उद्दीपन अर्थात् कुण्डलीशक्तिका जागरण आवश्यक है। पूर्णप्रभाशोभित शान्त चन्द्रोदयसदृश समस्तश्रीसमलङ्कृत चैतन्यस्वरूप गुरुको प्रणाम करता हूँ। रे मन! उनका भजन कर।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

चराचर जिससे व्याप्त है, जो अखण्ड मण्डलाकार है; उस परम पदको जिन्होंने दर्शाया उन गुरुके लिए (/गुरुको) नमस्कार है।

ॐ प्रथमे पश्चिमाम्नायः शारदामठः कीटवारिसम्प्रदायः, तीर्थाश्रमपदं द्वारकाक्षेत्रं सिद्धेश्वरो देवः भद्रकाली देवी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मस्वरूपाचार्यः गङ्गागोमतीतीर्थं स्वरूपब्रह्मचारी सामवेदप्रपठनं 'तत्त्वमसि' इत्यादिवाक्यविचारः; नित्यानित्यविवेकेनात्मनोपास्तिं आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे सन्न्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।।

पहला पश्चिमाम्नाय, शारदामठ है। उसका कीटवारि सम्प्रदाय है। वहाँके सन्यासियोंके तीर्थ तथा आश्रम पद हैं। उसका द्वारका क्षेत्र है। सिद्धेश्वर देव और भद्रकाली देवी हैं। ब्रह्मस्वरूप (विश्वरूप) आचार्य हैं। गङ्गा - गोमती तीर्थ है। स्वरूपसंज्ञक ब्रह्मचारी हैं। साम वेद है। तत्त्वमसि इत्यादि वाक्योंका विचार तत्त्वबोधके लिए निर्धारित है।

नित्य तथा अनित्यके विवेकसे आत्मोपासना विहित है। आत्मतीर्थमें आत्मसाक्षात्काररूप आत्मोद्धारके लिए सन्यास ग्रहण करता हूँ।

ॐ द्वितीये पूर्वाम्नायः गोवर्द्धनमठः भोगवारिसम्प्रदायः, वनारण्ये पुरुषोत्तमं क्षेत्रं जगन्नाथः विमला देवी भद्रपद्मपादाचार्यः, महोदधितीर्थं प्रकाशब्रह्मचारी ऋग्वेदप्रपठनं तमेवैक्यं जानथ 'प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म' इत्यादिवाक्यविचारः; नित्यानित्यविवेकेनात्मनोपास्तिं आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे सन्न्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।।

दूसरा पूर्वाम्नाय मठ है। उसका भोगवारि सम्प्रदाय है। वहाँके सन्यासियोंके वन और अरण्य पद हैं। उसका पुरुषोत्तमं क्षेत्र है। जगन्नाथ उसके देव हैं और विमला उसकी देवी हैं। भद्रपद्मपाद उसके आचार्य हैं। महोदधि उसका तीर्थ है। प्रकाशसंज्ञक ब्रह्मचारी हैं। ऋक् वद है। प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म इत्यादि वाक्योंका विचार तत्त्वबोधके लिए निर्धारित है।

नित्य तथा अनित्यके विवेकसे आत्मोपासना विहित है। आत्मतीर्थमें आत्मसाक्षात्काररूप आत्मोद्धारके लिए सन्यास ग्रहण करत ँ।

ॐ तृतीये उत्तराम्नायः ज्योतिर्मठः, आनन्दवारिसम्प्रदायः,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गिरिपर्वतसागरपदानि, बदरिकाश्रमक्षेत्रं, नारायणो देवता, पूर्णगिरी देवी। त्रोटकाचार्यः, अलकनन्दातीर्थं, आनन्दब्रह्मचारी, अथर्वणवेदपठनं, तमेवैक्यं जानथ 'अयमात्मा ब्रह्म' इत्यादिवाक्यविचारः; नित्यानित्यविवेकेनात्मनोपास्तिं आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे सन्न्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।।

तीसरा उत्तराम्नाय है। ज्योतिर्मठ है । आनन्दवारि उसका सम्प्रदाय है। वहाँके सन्यासियोंके गिरि - पर्वत - सागर पद हैं। बदरिकाश्रम उसका क्षेत्र है। नारायण देव और पूर्णगिरी देवी हैं। त्रोटक आचार्य हैं। अलकनन्दा तीर्थ है। आनन्द ब्रह्मचारी हैं। अथर्वण वेद है। **'तमेवैक्यं जानथ', 'अयमात्मा ब्रह्म'** इत्यादि वाक्योंका विचार तत्त्वबोधके लिए निर्धारित है।

नित्य तथा अनित्यके विवेकसे आत्मोपासना विहित है। आत्मतीर्थमें आत्मसाक्षात्काररूप आत्मोद्धारके लिए सन्यास ग्रहण करता हूँ।

प्रणवप्रतिपाद्य विश्व-तैजस-प्राज्ञ तथा तुरीयसंज्ञक नारायणके लिए नमस्कार।

ॐ चतुर्थे दक्षिणाम्नायः, शृङ्गेरीमठः, भूरिवारिसम्प्रदायः, सरस्वती - भारती - पुरी चेतिपदानि, रामेश्वरक्षेत्रं, आदिवराहो देवता, कामाक्षी देवी, शृङ्गी ऋषिः, पृथ्वीधराचार्यः, तुङ्गभद्रातीर्थं चैतन्यब्रह्मचारी, यजुर्वेदप्रपठनं तमेवैक्यं जानथ 'अहं ब्रह्मास्मि' इत्यादिवाक्यविचारः; नित्यानित्यविवेकेनात्मनोपास्तिं आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे सन्न्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।।

चौथा दक्षिणाम्नाय शृङ्गेरी मठ है । भूरिवारि उसका सम्प्रदाय है। वहाँके सन्यासियोंके भारती तथा पुरी पद हैं। रामेश्वर उसका क्षेत्र है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदिवराह उसके देवता और कामाक्षी उसकी देवी हैं। शृङ्गी ऋषि और हस्तामलकसंज्ञक पृथ्वीधर आचार्य हैं। तुङ्गभद्रा तीर्थ है। चैतन्य ब्रह्मचारी हैं। यजुः वेद है। **'तमेवैक्यं जानथ', 'अहं ब्रह्मास्मि'** इत्यादि वाक्योंका विचार तत्त्वबोधके लिए निर्धारित है।

नित्य तथा अनित्यके विवेकसे आत्मोपासना विहित है। आत्मतीर्थमें आत्मसाक्षात्काररूप आत्मोद्धारके लिए सन्यास ग्रहण करता हूँ।

प्रणवप्रतिपाद्य विश्व–तैजस–प्राज्ञ तथा तुरीयसंज्ञक नारायणके लिए नमस्कार।

ॐ पञ्चमे ऊर्ध्वाम्नायः, सुमेरुमठः, काशीसम्प्रदायः, जनक -याज्ञवल्क्यादिशुकवामदेवादिजीवन्मुक्ताः एतत्सनक-सनन्दनकपिलनारदादिब्रह्मनिष्ठाः, नित्यब्रह्मचारी, कैलासक्षेत्रं, मानससरोवरं तीर्थं, निरञ्जनो देवता, माया देवी, ईश्वराचार्यः, अनन्तब्रह्मचारी, शुकदेववामदेवादिजीवन्मुक्तानां सुसंवेदप्रपठनं, परोरजसेसावदों 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' इत्यादिवाक्यविचारः; नित्यानित्यविवेकेनात्मनोपास्तिं आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे सन्न्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।।

पाँचवाँ ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरुमठ है। उसका काशी सम्प्रदाय है। वहाँके जनक - याज्ञवल्क्यादि शुक - वामदेवादि जीवन्मुक्त एवम् सनक-सनन्दनकपिलनारदादिब्रह्मनिष्ठ आदर्श हैं। कैलास इसका क्षेत्र है। ईश्वर आचार्य हैं। निरञ्जन देव और माया देवी हैं। मानस सरोवर तीर्थ है। नित्य तथा अनन्त ब्रह्मचारी हैं। शुकवामदेवादि जीवन्मुक्तोंके लिए स्मर्य तथा गेय प्रणव महावाक्यात्मक वेद है। **' परोरजसे सावदों '**, **'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म '** इत्यादि वाक्योंका विचार तत्त्वबोधके लिए निर्धारित है।

नित्य तथा अनित्यके विवेकसे आत्मोपासना विहित है। आत्मतीर्थमें आत्मसाक्षात्काररूप आत्मोद्धारके लिए सन्यास ग्रहण करता हूँ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
४. मठाम्नायोपनिषत्

प्रणवप्रतिपाद्य विश्व–तैजस–प्राज्ञ तथा तुरीयसंज्ञक नारायणके लिए नमस्कार।

ॐ षष्ठे आत्माम्नायः, परमात्मामठः , सत्यसुसम्प्रदायः, नाभिकुण्डलिक्षेत्रं, त्रिकुटी तीर्थं, हंसो देवी, परमहंसो देवता, अजपासोऽहं महामन्त्रः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वराद्याः, जीवब्रह्मचारी , हंसविद उपास्तिः, उपाधिभेदसन्न्यासार्थं ज्ञानसन्न्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।।

छठा आत्माम्नाय और परमात्मा मठ है । सत्य (सत्त्वतोष) उसका सम्प्रदाय है। (योग वहाँके सन्यासियोंका पद है)। उसका नाभिकुण्डलि (नभसरोवर) क्षेत्र है। परमहंस देवता और हंस (मानसी माया) देवी हैं। ब्रह्मा, विष्णु , महेश संज्ञक त्रिदेवादि (चेतन) आचार्य हैं। त्रिकुटी (त्रिपुटी) तीर्थ है। जीव ब्रह्मचारी है। हंसोपनिषदादिसम्मत **अजपा सोऽहं महामन्त्र** (महावाक्य) हैं। हंसविद् उपास्य हैं।

तत्त्वभेदक (ब्रह्मात्मतत्त्वमें भेदका आधान करनेवाली विद्या तथा अविद्यारूप) उपाधिभेदके सन्यासके लिए ज्ञानसन्यास ग्रहण करता हूँ।

प्रणवप्रतिपाद्य विश्व–तैजस–प्राज्ञ तथा तुरीयसंज्ञक नारायणके लिए नमस्कार।

ॐ सप्तमे जम्बूद्वीपः सम्यग्ज्ञानं शिखा न सूत्रं वेद्यवेदकः श्रद्धा नदी विमलातीर्थं आत्मलिङ्गशान्त्यर्थे विचारः, नित्यानित्य-विवेकेनात्मनोपास्तिं आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे सन्न्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।।

सातवाँ जम्बूद्वीप है। वेद्य ब्रह्मतत्त्वका वेदक ज्ञान है, उसके अतिरिक्त न शिखा है न सूत्र ही। श्रद्धा नदी है, विमला तीर्थ है। आत्मभेदक उपाधिके निरसनके लिए विचार कर्त्तव्य है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. मठाम्नायोपनिषत्

नित्य तथा अनित्यके विवेकसे आत्मोपासना विहित है। आत्मतीर्थमें आत्मसाक्षात्काररूप आत्मोद्धारके लिए सन्यास ग्रहण करता हूँ।

प्रणवप्रतिपाद्य विश्व–तैजस–प्राज्ञ तथा तुरीयसंज्ञक नारायणके लिए नमस्कार।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता मठाम्नायोपनिषत्समाप्ता।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. राजा सुधन्वाकी ताम्रपत्रविज्ञप्ति

(युधिष्ठिरशक २६४९ मार्गशीर्षशुक्लदशमीके दिन सम्राट् श्रीसुधन्वाने श्रीशङ्कराचार्यसे दीक्षा प्राप्त की। श्रीभगवत्पादने युधिष्ठिरशक २६५० वैशाखशुक्ल तृतीयासे युधिष्ठिरशक २६६२ पौषकृष्ण अमावास्यापर्यन्त दिग्विजययात्रा सम्पन्न की। उसी समय उन्होंने चारों धामोंसे सम्बद्ध चतुराम्नाय चतुष्पीठकी स्थापना कर पुरीमें गोवर्द्धनमठकी, शृङ्गेरी और द्वारकामें शारदामठकी और बदरीवनमें ज्योतिर्मठकी स्थापना की। श्रीभगवत्पाद शिवावतार शङ्कराचार्यमहाभागने द्वारकामें युधिष्ठिरशक २६४९ माघशुक्लसप्तमीके दिन श्रीसुरेश्वरको, शृङ्गेरी और ज्योतिर्मठमें युधिष्ठिरशक २६५४ पौषशुक्लपूर्णिमाके दिन क्रमशः हस्तामलक तथा तोटकको एवम् गोवर्द्धनमठमें युधिष्ठिरशक २६५५ वैशाखशुक्लदशमीके दिन अपने प्रथम शिष्य पद्मपादको प्रथम श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्यपदपर प्रतिष्ठित किया। श्रीसुधन्वाने युधिष्ठिरशक २६६३ आश्विनशुक्ल पूर्णिमाके दिन श्रीभगवत्पादको ताम्रपत्र समर्पित किया।)

श्रीमहाकालनाथाय नमः

श्रीमहाकाल्यै नमः

श्रीमत्सदाशिवापरावतारमूर्त्ति-चतुःषष्टिकलाविलास-विहारमूर्त्ति-बौद्धादिसर्ववादिदानवनृसिंहमूर्त्ति-वर्णाश्रम-वैदिकसिद्धान्तोद्धारकमूर्त्ति-मामकीनसाम्राज्यव्यवस्थापनमूर्त्ति-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. राजा सुधन्वाकी ताम्रपत्रविज्ञप्ति

विश्वेश्वरविश्वगुरुपदजगज्जेगीयानमूर्त्ति-निखिलयोगिचक्रवर्ति-श्रीमच्छङ्करभगवत्पादपद्मयोः भ्रमरायमाणसुधन्वनो मम सोमवंश-चूडामणियुधिष्ठिरपारम्पर्य्यपरिप्राप्तभारतवर्षस्याञ्जलिबन्धपूर्विकेयं राजन्यस्य विज्ञप्तिः।

भगवद्भिर्दिग्विजयोऽकारि। सर्वे वादिनः पराकृताः। सर्वे वर्णा आश्रमाश्च कृतयुगवत्पूर्णे वैदिकाध्वनि नियोजिताः सन्तो यथाशास्त्रमाचरन्ति हि धर्मम्। ब्रह्मविष्णुमहेश्वरमहेश्वरीस्थानान्य-शेषदेशवर्तीन्युद्धृतानि। सर्वं ब्रह्मकुलमुद्धारितम्। विशिष्यास्मद्राज्य-कुलमान्वीक्षिक्याद्यशेषराजतन्त्रपरिशीलनेनोन्नीतं भवति। ब्रह्मक्षत्राद्यस्मत्प्रमुखनिखिलविनेयलोकसम्प्रार्थनया चतस्रो धर्मराजधान्यो जगन्नाथ-बदरी-द्वारका-शृङ्गर्षिक्षेत्रेषु भोगवर्द्धन-ज्योतिश्शारदाशृङ्गेरीमठापरसञ्ज्ञकाः संस्थापिताः। तत्रोत्तरा दिशो योगिजनप्राधान्येन धर्ममर्यादारक्षणं सुकरमेवेति ज्योतिर्मठे श्रीतोटकापरनाम्नः प्रतर्दनाचार्यानथ शृङ्गर्ष्याश्रमे शृङ्गर्षिसम-स्वभावान्पृथ्वीधराभिधेयहस्तामलकाचार्यान् भोगवर्द्धने स्वत एवाभिमतत्त्वेनात्यन्तोग्रस्वभावानपि सर्वज्ञकल्पपद्मपादापरनाम-सनन्दनाचार्यानथ बौद्धकापालिकादिसकलवादिभूयिष्ठपश्चिमस्यां द्रिशिवादिदैत्याङ्कुरः पुनर्मा भवत्त्विति शारदापीठे किल द्वारकायां जैनैरुत्सादितवज्रनाभनिर्मितभगवदालयादिदुर्दशां दूरीकृत्य भगवद्भिस्त्रिलोकसुन्दरनाम्ना पुनस्सन्निबद्धभगवदालयश्रीकृष्णादि-सकलमर्यादासुसंस्कृतायमधिगताशेषलौकिकवैदिकतन्त्र-विश्वविख्यातकीर्तिसर्वज्ञानमयान्विश्वरूपापरनामसुरेश्वराचार्या-श्चास्मत्सर्वलोकाभिमतिपूर्वकमभिषिच्यैवं चतुर्भ्य आचार्य्येभ्य-श्चतस्रो दिश आदिष्टाः भारतवर्षस्य। त एते तत्तत्पीठप्रणाड्या निज-निजमेव मण्डलं गोपायन्तो वैदिकमार्गमुद्भासयन्तु। सर्वे वयं

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. राजा सुधन्वाकी ताम्रपत्रविज्ञप्ति

तत्तन्मण्डलस्था ब्रह्मक्षत्रा दयस्तत्तन्मण्डलस्यैवाचार्यस्याधिकारिकृता वर्तिष्यामहे च। महद्विनिर्णयप्रसक्तौ तु सुरेश्वराचार्य्या एवोक्तलक्षणतः सर्वत्रैव व्यवस्थापका भवन्तु भगवतामनुशासनाच्च। अस्मद्राजसत्तेव निरङ्कुशं गुरुसत्ताप्युक्तमर्यादया जगत्यविचलं विचलतु। परिव्राजको हि महाकुलीनत्ववैदुष्यादिविशिष्टाचार्यलक्षणैरन्वित एव हि श्रीभगवत्पादपीठानामधिकारमर्हति न तु विनिमयेनेत्येवमादि नियमबन्धो भगवदाज्ञासमवबुद्धस्समस्तैरथास्मदादिब्रह्मक्षत्रादि-वंशोद्भवैः परमप्रेम्णोत्तमाङ्गेनाद्रियत इत्येतां विज्ञप्तिमङ्गीकुर्वन्तु भगवन्त इति। स्वस्त्यस्तु लोकेभ्यः।

युधिष्ठिरशके २६६३; आश्विनशुक्ल १५।

–सुधन्वासार्वभौमः

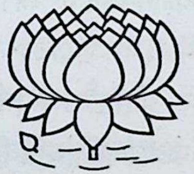

श्रीमहाकालनाथको नमस्कार। श्रीमहाकालीको नमस्कार।

श्रीमत् सदाशिवकी अपरावतारमूर्ति, चौसठ कलाओंके विलासकी विहारमूर्ति, बौद्धादि समस्त वादिरूप दानवोंके लिए नृसिंहमूर्ति, वर्णाश्रमयुक्त वैदिक सिद्धान्तकी उद्धारकमूर्ति, मेरे साम्राज्यकी व्यवस्थापकमूर्ति, विश्वेश्वर और जगद्गुरुपदसे जगत् द्वारा गेयमूर्ति, सम्पूर्ण योगियोंके चक्रवर्ती श्रीमत् – शङ्कर भगवत्पादके पादपद्मोंके भ्रमर मुझ राजा सुधन्वाकी जिसे सोमवंशचूडामणि युधिष्ठिरकी परम्परासे भारतवर्षकी राजसत्ता प्राप्त है, करबद्ध विज्ञप्ति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. राजा सुधन्वाकी ताम्रपत्रविज्ञप्ति

भगवत्पादने दिग्विजय कर ली है। सब वादियोंको पराजित कर दिया है। सब वर्ण और आश्रम सत्ययुगके सदृश पूर्णरूपसे वैदिक मार्गपर नियोजित रहते हुए शास्त्रसम्मत धर्मका आचरण करते हैं। श्रीभगवत्पाद सम्पूर्ण देशमें स्थित ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा महेश्वरीके अर्चाविग्रहसहित आलयोंका उद्धार कर चुके हैं; तद्वत् सम्पूर्ण ब्राह्मणवंशका भी उद्धार कर चुके हैं। सम्पूर्ण तर्कशास्त्र, धर्मशास्त्र तथा दण्डनीतिके साहचर्यसे सिद्ध राजतन्त्रके परिशीलनसे यह तथ्य सुनिश्चित है कि हमारे राजकुलका भगवत्पादके अमोघ प्रयाससे विशेष उत्कर्ष हुआ है।

ब्राह्मण, क्षत्रियादि हम शिष्यवर्गकी प्रार्थनाको स्वीकार कर श्रीभगवत्पादने जगन्नाथ, बदरी, द्वारका तथा रामेश्वरम् से सम्बद्ध शृङ्ग – ऋषि क्षेत्रको धर्मराजधानी उद्घोषितकर इनमें क्रमशः भोगवर्द्धन, ज्योतिः, शारदा और शृङ्गेरी – मठकी स्थापना की। आपने उन चार धामोंमें 'योगिजनप्रधान उत्तरदिशामें धर्ममर्यादाकी रक्षा सुगमतासे सम्भव है', ऐसा समझकर ज्योतिर्मठमें श्रीतोटक जिन्हें प्रतर्दनाचार्यके नामसे भी जाना जाता है, उन्हें आचार्यपदपर प्रतिष्ठित किया; ऋषि शृङ्गके आश्रममें तदनुकूल स्वभाववाले श्रीहस्तामलकाचार्य जिन्हें पृथ्वीधरके नामसे भी जाना जाता है उन्हें आचार्यपदपर अभिषिक्त किया; पूर्व दिशास्थित भोगवर्द्धनमें स्वतः ही सिद्ध तथा प्रसिद्ध स्वाभिमतसिद्धिमें अभिनिविष्ट अत्यन्त उग्रस्वभावके होते हुए भी सर्वज्ञकल्प श्रीसनन्दनाचार्य जिनकी प्रसिद्धि पद्मपादके नामसे भी है; उन्हें प्रतिष्ठित किया। द्वारकामें भगवान् श्रीकृष्णके प्रपौत्र वज्रनाभके द्वारा विनिर्मित तथा जैनोंके द्वारा ध्वस्त मन्दिरकी दुर्दशाको दूर करनेकी भावनासे त्रैलोक्यसुन्दर भगवदालय विनिर्मित कर उसमें श्रीकृष्णादिको निगमागमसम्मत विधिसे सुसंस्कृतकर प्रतिष्ठित किया। तद्वत् बौद्ध–कापालिकादि समस्त वादियोंसे परिपूर्ण पश्चिमदिशाका शोधनकर श्रीभगवत्पादने वैदिक समग्र सिद्धान्तकी प्रस्थापना की; उसमें वाददैत्यरूप

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अङ्कुर पुनः उज्जीवित न हो जाय, इस भावनासे सम्पूर्ण लौकिक तथा वैदिक-सिद्धान्तमें निष्णात सर्वज्ञमय विश्वविख्यातकीर्ति विश्वरूपाचार्य जिन्हें सुरेश्वराचार्यके नामसे भी जाना जाता है , उन्हें शारदापीठ द्वारकामें हम अनुगत शिष्योंके सर्वसम्मत अनुरोधपर आचार्यपदपर अभिषिक्त किया।

उक्त रीतिसे श्रीभगवत्पादने भारतवर्षकी चार दिशाओंमें चार आचार्योंको अधिष्ठित किया । उन्हें उन्होंने आदेश दिया कि वे इन पीठोंमें उस - उस पीठकी प्रणालीके अनुसार अपने - अपने ही मण्डलकी रक्षा करते हुए वैदिक मार्गको उद्भासित करें और उस - उस मण्डलसे सम्बद्ध हम सब ब्राह्मण - क्षत्रियादि उस - उस मण्डलाधिपति आचार्यकी आज्ञाका पालन करते हुए व्यवहार करें। महत्त्वपूर्ण निर्णयकी स्थितिमें सर्वत्र उक्त लक्षणयुक्त होनेके कारण सुरेश्वराचार्य व्यवस्थापक (निर्णायक) हों; यह श्रीभगवत्पादका अनुशासन है। हमारी राजसत्ताके समान ही निरङ्कुश गुरुसत्ता भी उक्त मर्यादाके अनुसार जगत् में अविचल अनवरत चलती रहे , ऐसी हमारी भावना है।

महाकुलीनत्व तथा वैदुष्यादिविशिष्ट आचार्योचित लक्षणसे समन्वित परिव्राजक ही श्रीभगवत्पादद्वारा प्रतिष्ठित पीठके अधिपति होनेमें अधिकृत हैं, न कि किसी प्रकारके विनिमयसे अर्थात् सौदेबजी या उत्पातसे कोई अन्य।

श्रीभगवत्पादकी आज्ञामें पूर्णरूपसे आस्थान्वित ब्राह्मण-क्षत्रियादि वंशमें समुद्भूत हम परमप्रेमपूर्ण सद्भावसम्पन्न हृदयसंज्ञक उत्तमाङ्गसे इस आज्ञाको स्वीकार करते हैं। इस विज्ञप्तिको भगवन्त स्वीकार करें।

सर्व लोकोंका कल्याण हो!

युधिष्ठिरशक २६६३, आश्विनशुक्ल १५.

— सुधन्वासार्वभौमः.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६. विवरण

भगवत्पाद श्रीशिवावतार शङ्कराचार्य महाभागद्वारा विरचित **'मठाम्नायसेतुमहानुशासनम्'** धर्म तथा ब्रह्मरूप वेदार्थका परिपोषक सेतु तथा महानुशासन है। यह तथ्य **'तत्र धर्मं समाचरेत् ३, प्रयोक्तव्याः स्वधर्मेषु ५०, स्वधर्माप्रतिरोधतः५१, केवलं धर्ममुद्दिश्य ६४, धर्मपारम्परीमेतां ६५, धर्मो मूलं मनुष्याणां ७०, धर्म्मस्य पद्धतिर्ह्येषा ७५, स्व - स्वरूपं विजानाति स्वधर्मपरिपालकः ९, जीवात्मपरमात्मैक्यबोधो यत्र भविष्यति, तत्त्वमसि महावाक्यं ५, स्वयञ्ज्योतिर्विजानाति योगयुक्तिविशारदः, तत्त्वज्ञानप्रकाशेन १७, तत्त्वसागर - गम्भीर - ज्ञानरत्नपरिग्रहः, २५, अहं ब्रह्मास्मि तत्रैव महावाक्यं ३१'** आदि वचनोंके अनुशीलनसे सिद्ध है। यह सनातन परम्पराप्राप्त वर्णाश्रमधर्मका पक्षधर तद्वत् राजपीठ तथा आचार्यपीठका संरक्षक है। यह तथ्य **'वर्णाश्रमसदाचारा अस्माभिर्ये प्रसाधिताः। रक्षणीयाः सदैवैते स्वे - स्वे भागे यथाविधि।। ५३, तानाचार्योपदेशांश्च राजदण्डांश्च पालयेत्। तस्मादाचार्यराजानावनवद्यौ न निन्दयेत्।। ७४'** आदि वचनोंके अनुशीलनसे सिद्ध है। यह तत्त्वदृष्टिसमन्वित भक्तिभावभावित चर्मचक्षुपरिलक्षित देवी तथा देवताके अर्चाविग्रहकी पूजा तथा प्रतिष्ठाका विधायक है। तद्वत् वन, अरण्य; तीर्थ, आश्रम; गिरि, पर्वत, सागर और पुरियोंके अस्तित्व तथा आदर्शका संरक्षक है। यह सरस्वती तथा भारती संज्ञक उच्च, मध्यम एवम् अवर शिक्षणसंस्थानोंकी सनातनपद्धतिका निर्वाहक है। यह पूर्वादि दिक् में प्रतिष्ठित

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीठोंके ऋगादि वेद तथा वेदाङ्गोंका संरक्षक और वर्द्धक है। तद्वत् यह लुप्त ज्ञान – विज्ञानका आविर्भावक एवम् विकृत ज्ञान – विज्ञानका विशोधक है।

❁

'चतुःपीठसमाकीर्णं चतुराम्नायदीपकम्' (योगशिखोपनिषत् ५. ३ ; १.६७) आदि वचनोंके अनुसार आज्ञाचक्रस्थ उड्याणपीठ, विशुद्धचक्रस्थ जालन्धरपीठ, अनाहतचक्रस्थ पूर्णगिरिपीठ और मूलाधारस्थ कामरूप योनिपीठसंज्ञक चतुराम्नाय पीठोंकी आध्यात्मिक धरातलपर उद्भावना प्राप्त है।

ओड्याख्यं प्रथमं पीठं द्वितीयं जालशैलकम्।
तृतीयं पूर्णपीठं तु कामरूपं चतुर्थकम्।।
(कालिकापुराण ६४.४३)

विमला पुरुषोत्तमे (मत्स्यपुराण १३. ३५; देवीभागवत ७.३०.६४)

उत्कले नाभिदेशस्तु विरजाक्षेत्रमुच्यते।
विमला सा महादेवी जगन्नाथस्तु भैरवः।।
(तन्त्रचूडामणि-पाठनिर्णयाध्याय)

औड्रपीठं पश्चिमे तु तथैवोड्रेश्वरीं शिवाम्।
कात्यायनीं जगन्नाथमोड्रेशं च प्रपूजयेत्।।
(कालिकापुराण ६४.४३)

१. द्विदल आज्ञाचक्र – पूर्वाम्नाय –पुरी – विमला – उड्याणपीठ
२. षोडशदल विशुद्धचक्र – पश्चिमाम्नाय – द्वारका – भद्रकाली – जालन्धरपीठ
३. द्वादशदल अनाहतचक्र – उत्तराम्नाय – ज्योतिर्मठ – पूर्णगिरिपीठ
४. चतुर्दल मूलाधार चक्र – दक्षिणाम्नाय –शृङ्गेरी – कामाक्षी –कामरूपपीठ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उड्याणपीठं जगदाकर्षणसिद्धिदं भवति।

जालन्धरपीठं मोक्षप्रदं भवति।

पूर्णगिरिपीठं सर्वेच्छासिद्धिसाधनं भवति।

कामरूपं पीठं सर्वकामप्रदं भवति।

(सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषत्)

(१) मूलाधारचक्र - यह गुद और लिङ्गके मध्य जो कि मनुष्यशरीरका मध्य मान्य है, उसमें सन्निहित चतुर्दल रक्तवर्ण है। चन्द्रविन्दुसहित व, श, ष, स - दलगत चार अक्षर हैं। इस चक्रके मध्यमें सिद्धवन्दिता कामाख्या नामक योनि है। यह दक्षिणाम्नाय **कामरूप योनिपीठ** है। योनिमध्यमें पश्चिमाभिमुख (ऊर्ध्वमुख) लिङ्ग है। उसका मस्तक तप्त सुवर्णके सदृश विद्युल्लेखाकी स्फूर्तिके सम्पन्न मणिके तुल्य छिद्रयुक्त है। यह शरीरान्तर्गत यज्ञवेदीपर स्थित अग्नितुल्य शिवलिङ्ग मूलाधारके ऊर्ध्व और मेढ्रसंज्ञक स्वाधिष्ठानके अधः स्थित है।

(२) स्वाधिष्ठानचक्र - यह लिङ्गमूलमें सन्निहित अर्द्धचन्द्राकार षड्दल सिन्दूरवत् कान्तियुक्त है। चन्द्रविन्दुसहित ब, भ, म, य, र, ल - दलगत अक्षर हैं। स्वका अर्थ प्राण है। मेढ्रसंज्ञक प्राणाश्रयका नाम स्वाधिष्ठान है। सूत्रमें मणिगणके तुल्य इसमें सन्निहित प्राणवायुसे शरीर व्याप्त है।

(३) मणिपूरकचक्र - यह नाभिमण्डलमें सन्निहित त्रिकोण चक्र नीलवर्ण दशदल है। चन्द्रविन्दुसहित ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ - दलगत दस अक्षर हैं।

(४) अनाहतचक्र - यह हृदयमें स्थित चक्र द्वादशदल (द्वादशार) पिङ्गलवर्ण षट्कोण महाचक्र है। चन्द्रविन्दुसहित क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ - दलगत बारह अक्षर हैं। यह उत्तराम्नाय **पूर्णगिरिपीठ** है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६. विवरण

(५) विशुद्ध – यह कण्ठकूपमें स्थित पूर्णचन्द्राकार चक्र धूम्रवर्ण षोडशदल है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, लॄ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः – दलगत सोलह अक्षर हैं। इनमें अ से औ पर्यन्त चन्द्रबिन्दुघटित अः – दलगत सोलह अक्षर हैं। इनमें अ से औ पर्यन्त चन्द्रबिन्दुघटित अक्षर हैं । यह पश्चिमाम्नाय **जलन्धर या जालन्धरपीठ** है।

(६) आज्ञा – यह भ्रू – मध्य / मस्तकमें स्थित चक्र श्वेतवर्ण द्विदल है। चन्द्रविन्दुसहित ह, क्ष – दलगत दो अक्षर हैं। यह पूर्वाम्नाय **उड्याण** (उड्डीयाण, उद्रीयाण, ओड्र) – पीठ है।

उक्तरीतिसे षट्चक्रपद्मके आरोहक्रमसे ४+६+१०+१२+ १६+ ˆ =५० दल होते हैं। अ से अः – पर्यन्त १६ वर्ण हैं; क से म – पर्यन्त २५ वर्ण हैं ; य, व, र, ल, श, ष, स, ह, क्ष – ९ वर्ण हैं। इस प्रकार, अ से क्ष – पर्यन्त १६ + २५ + ०९ = ५० अक्षर सिद्ध होते हैं। इनकी २० वार आवृत्तिसे सहस्र (१०००) की सिद्धि होती है।

(७) मेरुदण्डके शिरोभागपर महापथ ब्रह्मरन्ध्रमें कर्पूरवर्ण सहस्रदल **सहस्रारचक्र** स्थित है। यह परम शिवका संस्थान है। यह परमेन्दुचक्र है। इसमें शुद्धश्लेष्मद्रवात्मक नभोजलामृत सन्निहित है। जिसका जलबिन्दु अमृतवर्षिणी शाकिनी नाडीके द्वारा आज्ञाचक्रस्थ प्राज्ञात्मक जीवचन्द्रसे एकीभूत होकर तैजस रविमण्डलमें प्रविष्ट होकर शुष्क हो जाता है। रविमण्डल आधारस्थित विश्व – वैश्वानररूप अग्निमण्डलसे सदा उद्दीप्त रहता है। मूलाधारस्थ अग्निमण्डल **ब्रह्मग्रन्थि** है। अनाहतभावापन्न मणिपूरकरूप नाभिचक्रस्थ रविमण्डल **विष्णुग्रन्थि** है। भ्रूमध्यस्थ आज्ञाचक्रस्थ चन्द्रमण्डल **रुद्रग्रन्थि** है। प्रणवगत अकार वैश्वानररूप अग्निसंस्थान है। प्रणवगत उकार हिरण्यगर्भरूप सूर्यसंस्थान है। प्रणवगत मकार प्राज्ञेश्वररूप चन्द्रसंस्थान है। ओङ्कारगत अकारस्थ ब्रह्मा, उकारस्थ विष्णु तथा मकारस्थ रुद्र शिवात्मक हैं। मकाररूप-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रके भी चन्द्र सदाशिव सहस्रारमें सन्निहित हैं।

उक्त रीति से क्रमशः विशुद्ध, अनाहत, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, मूलाधार और आज्ञा नामक षट्चक्रमें 'अ' से 'क्ष' पर्यन्त वर्णाम्नाय सन्निहित है । वर्णक्रमसे चक्रोंका यह क्रम विवक्षावशात् प्राप्त है । इनमें 'त्र' और 'ज्ञ' का उल्लेख नहीं है । बावन शक्तिपीठकी दृष्टिसे आज्ञाचक्रमें ही 'त्र' तथा 'ज्ञ' को सन्निहित करनेपर भ्रूचक्रको चतुर्दल मानना युक्त है।

चन्द्र तथा सौरकलाओं से सम्बद्ध अमृता, मानदा, बोधिनी, धारणी तथा क्षमा नामक पाँच निवृत्तिकलाओंके अन्तर्गत अ ; आ; ञ, ण ; ट, ढ; ठ, ड – अक्षरोंकी स्थिति विशुद्ध, अनाहत और मणिपूरकमें है ।

कुण्डलिनीशक्ति ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि और रुद्रग्रन्थिका भेदनकर तुरीयेन्दुमें प्रवेश करे तथा तुरीयेन्दुमण्डलसे टपकनेवाला अमृतद्रव वह्निभावापन्न रविमण्डलसे दग्ध न हो, इस अभिप्रायसे योगकुण्डल्युपनिषत्, योगशिखोपनिषत्, योगचूडामण्युपनिषत् तथा योगतत्त्वोपनिषदादिमें मूलबन्ध (योनिबन्ध), उड्यानबन्ध, जलन्धर/जालन्धर तथा महाबन्ध एवम् खेचरी (नभोमुद्रा, शान्तोभवी) मुद्रादिका वर्णन है। कुण्डलिनी शक्ति नाभिमण्डलमें पञ्चावर्त या अष्टावर्त स्थित है। गन्ध, रस, रूप, स्पर्श तथा शब्द–तन्मात्रात्मक अपञ्चीकृत पञ्च महाभूतसहित अहम्, महत्, अव्यक्तरूपा अष्टधा प्रकृतिकी दृष्टिसे पञ्चावर्त या अष्टावर्तका समुल्लेख है। अ से अः – पर्यन्त स्वरवर्ण, क से ङ – पर्यन्त कवर्ग, च से ञ - पर्यन्त चवर्ग, ट से ण – पर्यन्त टवर्ग, त से न – पर्यन्त तवर्ग, प से म- पर्यन्त पवर्ग, य से व – पर्यन्त अन्तःस्थ, श से ह – पर्यन्त उष्म वर्ण- वर्णाम्नायकी दृष्टिसे अष्टधा प्रकृतिरूपा कुण्डलिनी–शक्ति है। तद्वत अन्तःप्रणवके अकार, उकार, मकार, अर्धमात्रा, नाद, विन्दु, कला, शक्ति – संज्ञक अष्ट प्रभेद (नारदपरिव्राजकोपनिषत् ७) अष्टधा प्रकृतिरूपा कुण्डलिनी शक्ति है। आवर्ताकार नागरूपिणी यह शक्ति हठयोगके

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारा वायुके आघातसे ऋजु होकर ऊर्ध्वमुख होती है। यह सहस्रारस्थित परमशिवसे सङ्गम लाभकर पुनः नाभिचक्रमें सन्निहित होती है। प्रणव तथा त्रिगुणात्मिका प्रकृतिकी सीतोपनिषदादिके अनुशीलनसे एकरूपता सिद्ध है। अतः साङ्ख्यसम्मत पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, अहम्, महत्, अव्यक्त - से अकार, उकार, मकार, अर्धमात्रा, नाद, विन्दु, कला, शक्ति - संज्ञक प्रणवात्मिका अष्ट प्रकृतिकी एकरूपता है।

मूलाधारमें चतरस्र पृथ्वीमण्डलकी धारणा विहित है। **'लं'** इसका बीजमन्त्र है। स्रष्टा ब्रह्मा इसके अधिदैव हैं। स्वाधिष्ठानमें अर्द्धचन्द्राकार जलतत्त्व सन्निहित है। **'वं'** इसका बीज है। पालक विष्णु इसके अधिदैव हैं। मणिपूरकमें त्रिकोण तेजस्तत्त्व सन्निहित है। **'रं'** इसका बीज है। संहारक रुद्र इसके अधिदैव हैं। अनाहतमें षट्कोण वायु प्रतिष्ठित है। **'हं'** इसका बीज है। शक्तिभावापन्न निग्रहकर्त्ता ईशान इसके अधिदैव हैं। विशुद्धमें वृत्ताकार आकाश स्थित है। **'यं'** इसका बीज है। गणपतिभावापन्न अनुग्रहप्रधान सदाशिव इसके अधिदैव हैं। आज्ञाचक्र साङ्ख्यसम्मत अहमात्मक मनोमण्डल तथा महदात्मक बुद्धिमण्डल एवम् वेदान्तसम्मत उच्छूनावस्थापन्न अव्यक्तमण्डल है। अहम् - गत अकार अग्नितत्त्वात्मक प्रकाश है। अहम् - गत मकार सोमतत्त्वात्मक विमर्श है। दोनोंके संयोगसे विन्दुरूप रविसंज्ञक हिरण्यगर्भात्मक मध्यवर्ती हकारका उदय होता है।

'मूलाधारादिषट्चक्रं शक्तिस्थानमुदीरितम् । कण्ठादुपरि मूर्धान्तं शाम्भवं स्थानमुच्यते।।' (वराहोपनिषत् ५. ५३) के अनुसार यह शरीर शिव तथा शक्तिका संस्थान है। कण्ठपर्यन्त मूलाधार, स्वाधिष्ठान, नाभि, मणिपूरक, अनाहत तथा विशुद्ध - संज्ञक षट्चक्र शक्तिसंस्थान हैं। कण्ठके ऊपर आज्ञा, तालु और सहस्रार या आज्ञा और सहस्रार शिवस्थान हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
६. विवरण

शाक्तागमकी दृष्टिसे पिण्डात्मक शरीर नाडियोंका अभिव्यञ्जक संस्थान है। पीपल आदिके पत्तोंमें संलग्न नसोंके सदृश शरीरमें आपादमस्तक नाडियाँ व्याप्त हैं। –**'यथाऽश्वत्थादिपत्रं शिराभिर्व्याप्तमेवं शरीरं नाडिभिर्व्याप्तम्'** (शाण्डिल्योपनिषत् १.१५)। नाडियाँ प्राणोंके आश्रय हैं। प्राण जीवके अभिव्यञ्जक संस्थानरूप आश्रय हैं। जीव अपना वास्तवरूप हंससंज्ञक आत्माका अभिव्यञ्जक संस्थानरूप आश्रय है। हंस पराचितिस्वरूपा शक्तिका अभिव्यञ्जक संस्थानरूप आश्रय है। –

'नाडीनामाश्रयः पिण्डो नाड्यः प्राणस्य चाश्रयः।
जीवस्य निलयः प्राणो जीवो हंसस्य चाश्रयः।।
हंसः शक्तेरधिष्ठानं .... ।'

(वराहोपनिषत् १.१४,१५)

जिस प्रकार, रसतन्मात्रमें रसनामक गुणमें तथा जल नामक द्रव्यमें नाममात्र भेद है; उसी प्रकार, मौलिक धरातलपर शक्ति तथा शक्तिमान् शिवमें नाममात्र भेद है । इस दृष्टिसे शक्तिधाम सहस्रारका सर्वोत्कृष्ट महत्त्व है। शक्तिमार्गरूप मूलाधार, स्वाधिष्ठान और शक्तिद्वार मणिपूरकमें देवीकी आराधना करनेवाले अभिमत भोगोंको प्राप्त करते हैं। शक्तिनगर अनाहतमें देवीका भजन करनेवाले सालोक्यसुख प्राप्त करते हैं। शक्तिभवन विशुद्धमें भगवतीका ध्यान करनेवाले शक्तिसामीप्यसम्भव ऋद्धि – सिद्धियोंको सुलभ करते हैं। शक्तिसमकक्ष आज्ञाचक्रमें अम्बाके समर्चक सार्ष्टिमोक्ष (विपुल ऐश्वर्य, तुल्यभोग) प्राप्त करते हैं। शक्तिकक्ष सहस्रारमें परा चितिके समर्चक क्रमशः स्थूल सूक्ष्म तथा कारणसंज्ञक उपाधिभूमिमें सायुज्य – लाभकर तुरीयभूमिमें ऐक्यानुभवके बलपर सूतसंहितामें निगदित कैवल्यात्मक सायुज्यमुक्तिको प्राप्त करता हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ऋग्यजुःसामाथर्वाख्यान् वेदान् पूर्वादिभिर्मुखैः ' **(श्रीमद्भागवत ३. १२. ३७)** के अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है कि सर्वजीवघनात्मक वेदमूर्त्ति ब्रह्माजीके पूर्वादिमुखसे ऋगादि वेदोंकी स्फूर्ति हुई। **'ऋग्वेदोऽस्याः प्रथमः पादो भवति। यजुर्वेदः द्वितीयः पादः। सामवेदस्तृतीयः पादः। अथर्ववेदश्चतुर्थः। पूर्वादिक् प्रथमा कुक्षिर्भवति। दक्षिणा द्वितीया कुक्षिर्भवति। पश्चिमा तृतीया कुक्षिर्भवति। उत्तरा चतुर्थी कुक्षिर्भवति। ऊर्ध्वा पञ्चमी कुक्षिर्भवति। अधः षष्ठी कुक्षिर्भवति।' (गायत्रीरहस्योपिनषत्)** के अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है कि ऋक् , यजुः, साम तथा अथर्व गायत्रीके चार पाद हैं। पूर्व , दक्षिण, पश्चिम , उत्तर, ऊर्ध्व और अधः क्रमसे छह कुक्षियोंका वर्णन विवक्षावशात् पूर्वसे ऋक् का, दक्षिणसे यजुःका, पश्चिमसे सामका और उत्तरसे अथर्वका सम्बन्ध सिद्ध करता है।

'दक्षिणायां दिशि मुक्तिस्थानं तन्मुक्तिमण्डपसंज्ञितम्।' (भस्मजावालोपनिषत् २) के अनुरूप ही श्रीभगवत्पाद शङ्कराचार्यमहाभागने श्रीजगन्नाथमन्दिरमें **मुक्तिमण्डप** की स्थापना की।

भगवत्पाद श्रीशिवावतार शङ्कराचार्य महाभागने ऋग्वेद तथा स्कन्दपुराणादिके कथनानुरूप ही नीलाद्रिधाम, श्री - शङ्ख - पुरुषोत्तमक्षेत्र पुरीमें दारुब्रह्म श्रीजगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा तथा सुदर्शनचक्रकी प्रतिष्ठा की।-

अदो यद्दारुप्लवते सिन्धोः पारे अपूरुषम् ।
तदारभस्व दुहणो तेन गच्छ परस्तरम्।।
(ऋग्वेद १०. १५५. ३)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
६. विवरण

"सुदूर उत्कलक्षेत्रमें विद्यमान सर्व प्रथम स्वयं वृक्षरूपमें अवतीर्ण अत एव पुरुष अनिर्मित दारुमय श्रीपुरुषोत्तम भगवान्‌का श्रीविग्रह समुद्रके तटपर विद्यमान है। हे अमरपदके इच्छुक मनुष्य! तू उनकी शरणमें जा और उनकी उपासनाके अमोघ प्रभावसे सर्वोत्कृष्ट वैष्णवपदको प्राप्त कर।।"

यत्र देवो जगन्नाथः परपारं महोदधेः।
बलभद्रः सुभद्रा च तत्र माममृतं कृधि।।
(ऋग्वेदपरिशिष्ट)

"समुद्रके किनारे जहाँ देवाधिदेव श्रीजगन्नाथजी, बलभद्रजी तथा सुभद्राजी विद्यमान हैं, मुझे उस स्थलमें अमरपदभागी बनाइये।।"

नीलाचलगुहान्तस्थो विभ्रद्दारुमयं वपुः।
आस्ते लोकोपकाराय बलेन च सुभद्रया।।
सुदर्शनेन चक्रेण दारुणा निर्मितेन च।
सहितः प्रणतार्त्तीनां नाशनः करुणार्णवः।।
यं दृष्ट्वा पापबन्धेन सुदृढेन विमुच्यते।
सुकर्मौघपरीपाको युगपत्समुपस्थितः।।
पश्यतां भो मुनिश्रेष्ठास्तापत्रयसुधानिधिम्।
(स्कन्दपुराण – वैष्णवान्तर्गत उत्कलखण्ड ४.६६-६८.१/२)

"लोकोपकारके लिए दारुनिर्मित बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शनसहित शरणागतके दुःखोंको नष्ट करनेवाले करुणासिन्धु श्रीजगन्नाथजी नीलाचलकी गुहामें स्थित हैं। जिनका दर्शन करके दर्शक सुदृढ पापबन्धसे विमुक्त होता है। तापत्रयके शमनके लिए बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शनसहित श्रीजगन्नाथजीके दर्शनका सुयोग तो तभी सधता है, जब पुण्यपुञ्ज फल देनेके लिए समुपस्थित हो।।"

द्यतिसंसारदुःखानि ददाति सुखमव्ययम्।।
तस्माद्दारुमयं ब्रह्म वेदान्तेषु प्रगीयते।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(स्कन्दपुराण - वैष्णवान्तर्गत उत्कलखण्ड ४.७३-७३.१/२)

" संसार - दुःखोंका दलन करता है और अक्षय सुख प्रदान करता है; अतः वेदान्तोंमें श्रीहरिको दारुमय ब्रह्म कहा जाता है।।"

नीलाभ्रश्यामलं विष्णुं शङ्खेन्दुधवलं बलम्।
रक्तं सुदर्शनं चक्रं सुभद्रां कुकुमारुणाम् ।।

(स्कन्दपुराण - वैष्णवान्तर्गत उत्कलखण्ड १९.२१)

"नील मेघमण्डलके सदृश श्रीजगन्नाथ हैं, शङ्ख तथा चद्रमाके सदृश श्रीबलभद्र हैं, लाल वर्णके सुदर्शन हैं और कुकुमके सदृश अरुणा श्रीसुभद्रा हैं।।"

शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता।।

(श्रीमद्भागवत ११.२७. १२)

"शिलामयी, दारुमयी, धातुमयी, लेपकेद्वारा विनिर्मित मृण्मयी - चन्दनमयी, चित्रमयी, बालुकामयी, मनोमयी और मणिमयी - **आठ** प्रकारकी प्रतिमा कही गयी है।।"

'मठाम्नाय - सेतु - महानुशासनम्' के अनुसार श्रीभगवत्पादने ऋग्वेदसे सम्बद्ध पूर्वाम्नाय गोवर्द्धनमठ - पुरीपीठका **काश्यप**, यजुर्वेदसे सम्बद्ध दक्षिणाम्नाय शृङ्गेरीपीठका गोत्र **भूर्भुवः**, सामवेदसे सम्बद्ध पश्चिमाम्नाय द्वारकापीठका **अविगत** तथा अथर्ववेदसे सम्बद्ध उत्तराम्नाय ज्योतिर्मठका **भृगु** - गोत्र निर्धारित किया है। **'वंशोऽन्ववायो गोत्रं स्यात्कुलान्यभिजनान्वयौ' (अग्निपुराण ३६५.१)** के अनुसार वंश, अन्ववाय, गोत्र, कुल, अभिजन और अन्वय - ये वंशके नाम हैं। वशिष्ठ, कश्यप, भृगु और अङ्गिरा सृष्टिविस्तारक प्रजापति हैं। यह सम्पूर्ण जगत् इन्हींकी सन्तति है।-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"भार्गवाङ्गिरसौ लोके लोकसन्तानलक्षणौ।।
एते हि प्रसवाः सर्वे प्रजानां पतयस्त्रयः।
सर्वं सन्तानमेतेषामिदमित्युपधारय।।"
(महाभारत – अनुशासनपर्व ८५.१२६ – १२७)

"मूलगोत्राणि चत्वारि समुत्पन्नानि पार्थिव।
अङ्गिराः कश्यपश्चैव वसिष्ठो भुगुरेव च।।
कर्मतोऽन्यानि गोत्राणि समुत्पन्नानि पार्थिव।
नामधेयानि तपसा तानि च ग्रहणं सताम्।।"
(महाभारत – शान्तिपर्व २९६.१७,१८)

"पृथ्वीनाथ! पहले अङ्गिरा, कश्यप, वसिष्ठ और भृगु – ये ही चार मूल गोत्र प्रकट हुए थे। अन्य गोत्र कर्मानुसार कालान्तरमें समुत्पन्न हुए। वे गोत्र और उनके नाम उन गोत्रप्रवर्तक महर्षियोंकी तपस्यासे ही साधुसमाजमें सुविख्यात एवं सम्मानित हुए हैं।।"

भगवान् कर्दमकन्या कलागर्भसमुद्भूत श्रीमरीचिनन्दन कश्यपके नामकी निरुक्ति इस प्रकार है।–

"कुलं कुलं च कुवमः कुवमः कश्यपो द्विजः।
काश्यः काशनिकाशत्वादेतन्मे नाम धारय।।"
(महाभारत – अनुशासनपर्व ९३.८६)

"कश्य नाम है शरीरका, जो इसका पालन करता है, उसे कश्यप कहते हैं। मैं प्रत्येक कुल संज्ञक शरीरमें अन्तर्यामीरूपसे प्रवेश करके उसकी रक्षा करता हूँ ; अतएव कश्यप हूँ । कु – नामक पृथ्वीपर वम अर्थात् वर्षा करनेवाला सूर्य भी मेरा ही स्वरूप है, अतः मुझे कुवम भी कहते हैं। मेरे शरीरका रङ्ग काशके पुष्पके सदृश उज्ज्वल है, अतः मैं काश्य कहलाता हूँ ; तुम मेरे नामकी निरुक्तिको समझ लो।।"

कश्यपः सवितुर्विद्वांस्तेन स ब्रह्मणः समः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्वन्तरेण सर्वेषु ब्रह्मणांशेन जायते।।
हाश्चेकसा हि विज्ञेया वाङ्मनः कश्य उच्यते।
कश्यं मद्यं स्मृतं विप्रैः कश्यपानात्तु कश्यपः।।
(वायुपुराण ३.६५. ११४, ११६)

"मरीचिनन्दन अरिष्टनेमिका दूसरा नाम कश्यप था। वे सविताके जनक थे। वे सब मन्वन्तरमें ब्रह्माके अंशसे उत्पन्न होते हैं। कश्य नाम वाक् तथा मनका है। हाश्चेकसा (प्रज्ञा तथा प्राण) भी कश्य कहा जाता है। मादक मद्यतुल्य देहेन्द्रियप्राणान्तःकरणको सुषुप्ति आदिमें पान करनेवाला अन्तर्यामी सर्वेश्वर कश्यप कहा जाता है।।"

भृग् अर्थात् अग्निज्वालासे समुद्भूत महर्षिका नाम **भृगु** हुआ। -

सह ज्वालाभिरुत्पन्नो भृगुस्तस्माद् भुगुः स्मृतः।।
(महाभारत - अनुशासनपर्व ८५. १०६)

स्कन्दपुराण - ब्राह्मखण्ड - धर्मारण्यमाहात्म्यके अनुसार मुख्य चौबीस गोत्रोंके नाम इस प्रकार हैं। -

भारद्वाज, वत्स (प्रथम), कौशिक, कुश, शाण्डिल्य, काश्यप, गौतम, छान्दन, जातूकर्ण्य, वत्स (द्वितीय), वशिष्ठ, धारण, आत्रेय, भाण्डिल, लौकिक, कृष्णायन, उपमन्यु, गार्ग्य, मुद्गल, मौषक, पुण्यासन, पराशर, कौण्डिन्य तथा गङ्गासन। प्रत्येक गोत्रकी रक्षा तथा पुष्टि करनेवाली एक - एक कुलदेवी योगिनी देवोंद्वारा प्रतिष्ठित हैं। यथा -

श्रीमाता, तारणीदेवी, गोत्रपा, आशापूरी, इच्छार्तिनाशिनी, **पिप्पली**, विकारवशा, जगन्माता, महामाता, सिद्धा, भट्टारिका, कदम्बा, विकरा, मीठा, सुपर्णा, वसुजा, महादेवी, मातङ्गी, वाणी, मुकुटेश्वरी, भद्री, महाशक्ति संहारी, महाबला और महादेवी चामुण्डा।

पुरीपीठसे सम्बद्ध काश्यप गोत्रकी रक्षा तथा पुष्टि करनेवाली कुलदेवी योगिनी **पिप्पली** हैं; अधिक सम्भव है, पुरीके सन्निकट पिप्पली

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्हींके नामसे चर्चित है। बालेश्वरमें योगिनी **पिप्पलीका अर्चाविग्रह** प्रतिष्ठित है, विश्वस्तसूत्रसे ऐसी जानकारी मिली है।

वंशप्रवर्तक तथा परम्परासे ख्यातिप्राप्त वंशके श्रेष्ठ ऋषि **प्रवर** कहे जाते हैं। सामान्यतया गोत्रके श्रेष्ठतम महर्षि या महर्षियोंका प्रवररूपसे उल्लेख किया जाता है। यद्यपि क्षत्रियोंका मनु तथा वैश्योंका भालन्दन गोत्र माननेकी प्रथा चल पड़ी है, परन्तु ऐसा मान लेनेपर सब क्षत्रिय और वैश्य सगोत्र सिद्ध होनेके कारण उनका परस्पर विवाह असङ्गत सिद्ध होता है। अतः पुरोहित या आचार्यका गोत्र ही क्षत्रियों , वैश्यों एवम् वर्णसङ्करो तथा शूद्रोंका गोत्र सिद्ध है।–

"क्षत्रियवैश्यशूद्राणां गोत्रं च प्रवरादिकम्।
तथाऽन्यवर्णसङ्कराणां येषां विप्राश्च याजकाः।।
(अग्निपुराण)

'गोत्रस्य त्वपरिज्ञाने काश्यपं गोत्रमिष्यते " – 'गोत्रका परिज्ञान न होनेपर काश्यप गोत्र मानना चाहिये "– यह निर्णय श्राद्धादि – विषयक समझना चाहिये।

मत्स्यपुराण और महाभारत – अनुशासनपर्वके अनुसार पूर्वकालमें वैवस्वत मन्वन्तरमें श्रीमहादेवके शापसे देहत्यागकर महर्षिगण अग्निसंस्पृष्ट ब्रह्मशुक्रसे समुत्पन्न हुए। एक समय सर्वेश्वर शिव जलाधिपति वरुणका स्वरूप धारणकर यज्ञ कर रहे थे। यज्ञदर्शनार्थ समुपस्थित देवाङ्गनाओंके सहित देवगण भी पधारे । देवमाता तथा देवपत्नीरूपा देवाङ्गनाओंके दर्शनसे भूमिपर स्खलित अमोघ ब्रह्मवीर्यसंसिक्त धूलिकणोंको दोनों हाथोंद्वारा भूमिसे उठाकर **पूषा**ने अग्निकुण्डमें डाल दिया। तदनन्तर पुनः स्खलित निज वीर्यको स्रुवेमें लेकर अभिमन्त्रितकर स्वयं ब्रह्माजीने उसे घृततुल्य हवन कर दिया। सर्व जीवघनात्मक शब्दब्रह्मात्मक सर्वार्थमय ब्रह्माजीके उस त्रिगुणात्मक वीर्यके सत्त्वभावापन्न तैजस (राजस) अंशसे अण्डज, स्वेदज, जरायुज – संज्ञक जङ्गम प्राणियोंकी समुत्पत्ति हुई तथा सत्त्वसन्निविष्ट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तामस अंशसे तरु, लता, गुल्मादि उद्भिज्ज - संज्ञक स्थावर प्रणियोंकी समुत्पत्ति हुई। इनके अतिरिक्त सात्त्विक अंशसे **भृगु, अङ्गिरा, अत्रि, मरीचि, पुलस्त्य, पुलह तथा कवि** - नामक सात तेजस्वी महर्षियोंका उद्भव हुआ। भृग् अर्थात् अग्निज्वालासे समुद्भूत महर्षिका नाम **भृगु** हुआ। अङ्गारोंसे समुद्भूत महर्षिका नाम **अङ्गिरा** हुआ। अङ्गारसंलग्न भुगु-रूपा ज्वालासे प्रादुर्भूत महर्षिका नाम **कवि** हुआ। अग्निकी अर्चियों (शिखाओं) से **अत्रि** समुत्पन्न हुए। तद्वत् केशोंसे कपिशवर्णके महातपस्वी **पुलस्त्य**, प्रलम्ब (लम्बे) केशोंसे **पुलह** समुत्पन्न हुए। प्रसङ्गानुसार अग्नि-अंशुका (रश्मि) नाम **केश** है।

सूर्य, अग्नि और सोमकी उद्दीप्त रश्मि (अंशु) भगवान् वासुदेवके केश कहे जाते हैं। -

"सूर्यस्य तपतो लोकानग्नेः सोमस्य चाप्युत।
अंशवो यत् प्रकाशन्ते ममैते केशसंज्ञिताः॥"
(महाभारत - शान्तिपर्व ३४१. ४८)

महर्षि भृगुका विवाह महर्षि पुलोमाकी दिव्य पुत्रीसे हुआ। उससे भुवन, भौमन, सुजन्य, सुजन, क्रतु, वसु, मूर्धा, त्याज्य, वसुद, प्रभव, अव्यय और दक्ष - संज्ञक देवतुल्य बारह **देवभृगु** संज्ञक पुत्र हुए। उनसे कनिष्ठ च्यवन तथा आप्नुवान नामक दो अन्य पुत्र हुए। आप्नुवानके पुत्र और्व हुए। और्वके पुत्र जमदग्नि हुए।

भृगुवंशके प्रथम चरणमें भृगु, च्यवन, आप्नुवान, और्व और जमदग्नि - संज्ञक पाँच प्रवर हैं।

"भृगुश्च च्यवनश्चैव आप्नुवानस्तथैव च।
और्वश्च जमदग्निश्च पञ्चैते प्रवराः मताः॥"
(मत्स्यपुराण १९५. २९)

मत्स्यपुराणके अनुसार ब्रह्माजीके पुत्रोंमें **भू, भुव और भूर्भुव** तीन मानस पुत्र हुए। श्रीब्रह्माजीकी प्रेरणासे समीपस्थ श्रीमन्नारायण और साङ्ख्याचार्य कपिलने भू तथा भुवको क्रमशः **'यत्सत्यं यदृतं तत्तु परं**

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदमनुस्मर' (१७१.१२) 'जो सत्य है, जो ऋत है, वही परम पद है, उसका स्मरण करो ' यह उपदेश दिया। वे दोनों इन्द्रियसंयम तथा तपोयोगसे उपदेशको आत्मसात् कर परमगतिको प्राप्त हुए।

'भूर्भुव'- संज्ञक तृतीय मानसपुत्रके सम्बन्धमें **साङ्ख्यप्रवृत्तिकुशल, विभु** तथा **गोपति** शब्दोंका प्रयोग किया गया है।-

''तस्मिन्नपि गते पुत्रे तृतीयमसृजत् प्रभुः।
साङ्ख्यप्रवृत्तिकुशलं भूर्भुवं नामतो विभुम्।।
गोपतित्वं समासाद्य तयोरेवागमद् गतिम्।''
(मत्स्यपुराण १७१. १७.१७.१/२)

'अविगत'का लाक्षणिक अर्थ अच्युत है। श्रुतिसम्मत विरति तथा विवेक-समन्वित हरिभक्तोंका गोत्र अच्युत मान्य है। अविगतका अर्थ विवक्षावशात् अच्युत करने पर भगवद्भक्तोंका गोत्र अच्युत सिद्ध होता है। श्रीमद्भागवतके निम्नलिखित वचनोंके अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है। -

सर्वत्रास्खलितादेशः सप्तद्वीपैकदण्डधृक्।
अन्यत्र ब्राह्मणकुलादन्यत्राच्युतगोत्रतः।।
(श्रीमद्भागवत ४. २१. १२)

''महाराजाधिराज पृथुका शासन ब्राह्मणवंश और अच्युतगोत्र अर्थात् भगवद्भक्तोंको छोड़कर सबपर अबाध था।।''

ध्यान रहे, युधिष्ठिरसम्वत् २६३१, तदनुसार ५०७ बी. सी. वैशाखशुक्ल पञ्चमी रविवारके दिन श्रीभगवत्पाद शिवावतार शङ्कराचार्य महाभाग अवतीर्ण हुए । स्वयं श्रीशङ्कराचार्यके द्वारा विरचित मठाम्नायमें एवम् लीलासम्वरणके एक मास पूर्व उन्हें राजर्षि सुधन्वाके द्वारा **युधिष्ठिरशक २६६३, आश्विनशुक्ल १५.** के दिन समर्पित विज्ञप्तिमें ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय गोवर्द्धनमठको भोगवर्द्धनमठ कहा गया है; जब कि इसका सम्प्रदाय भोगवारि है। गोवंशका परिपालन तथा वर्द्धन यज्ञादिके द्वारसे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिमत भोगकी सिद्धिमें हेतु है; यह तथ्य विश्वविदित है। मत्स्यपुराण ११४. ४९.१/२ में **'भोगवर्द्धनाः'** कह कर दक्षिणापथ जनपदोंके अन्तर्गत इसका उल्लेख है। अतः पुरुषोत्तमक्षेत्रको भोगवर्द्धनक्षेत्रान्तर्गत मानना उचित है।

यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि दशनामी संन्यासियोंके पद अर्थात् योगपट्टमें वन तथा अरण्य; सरस्वती और भारती एवम् गिरि तथा पर्वत यद्यपि पर्यायवाचक माने जाते हैं; तथापि इनमें बृहत् तथा लघु - संज्ञक अवान्तर भेद अभिमत है। यह तथ्य **'श्रीमहाभारते वनपर्वणि अरण्यपर्वणि' (श्रीमहाभारत-पुष्पिका), 'गिरयः पर्वताश्चैव सन्ति तत्र समासतः' (श्रीमहाभारत - आश्वमेधिकपर्व २७. २०)** आदि वचनोंके अनुशीलनसे सिद्ध है।

बदरी, पुरी, रामेश्वरम् और द्वारका क्रमशः उत्तर, पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिमके शास्त्रसम्मत लोकप्रसिद्ध धाम हैं। पूर्वाम्नायकी पुरीमें तथा पश्चिमाम्नायकी द्वारकामें साक्षात् प्रतिष्ठा है; रामेश्वरम् से सम्बद्ध दक्षिणाम्नायकी शृङ्गेरीमें तथा बदरीनाथसे सम्बद्ध उत्तराम्नायकी ज्योतिर्मठमें प्रतिष्ठा है । चतुराम्नाय - चतुष्पीठके आद्याचार्योंमें श्रीपद्मपादविरचित विश्वविदित पञ्चपादिका है, श्रीहस्तामलकाचार्यविरचित श्लोकोंपर स्वयं भगवत्पादका भाष्य है, श्रीतोटकाचार्यविरचित १७४ तोटक हैं। श्रीसुरेश्वराचार्यविरचित नैष्कर्म्यसिद्धि, तैत्तिरीयभाष्यवार्तिक, बृहदारण्यकभाष्यवार्तिक, मानसोल्लासनामक श्रीदक्षिणामूर्त्तिश्लोकवार्तिक, पञ्चीकरणवार्तिक, याज्ञवल्क्यस्मृति - बालक्रीडाव्याख्या, श्राद्धकालिका, विधिविवेक, काशीस्मृतिमोक्षविचार, विभ्रमविलास, भावनाविवेक, मीमांसासूत्रानुक्रमणी नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७. चतुष्पीठ - दिग्दर्शन

संस्थापित

द्वारका - शारदामठ

मठस्थापन - युधिष्ठिरसम्वत् २६४८ कार्तिककृष्ण ५
तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४९०

आचार्याभिषेक - युधिष्ठिरसम्वत् २६४९ माघकृष्ण ७
/युधिष्ठिरसम्वत् २६४९ माघ शुक्ल ७
तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४८९

शृङ्गेरी - शारदामठ

मठस्थापन - युधिष्ठिरसम्वत् २६४८ कार्तिकशुक्ल ७
/फाल्गुनशुक्ल ९, तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४९०

आचार्याभिषेक - युधिष्ठिरसम्वत् २६५४ पौषशुक्ल पूर्णिमा १५
तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४८४ (शङ्कराचार्यनो समय)
/युधिष्ठिरसम्वत् २६५४ वैशाखशुक्ल १०
(विमर्श)

ज्योतिर्मठ

मठस्थापन - युधिष्ठिरसम्वत् २६४६ तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४९२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७. चतुष्पीठ-दिग्दर्शन

आचार्याभिषेक - युधिष्ठिरसम्वत् २६५४ तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४८४
पौष शुक्ल १५ (शङ्कराचार्यनो समय)
/युधिष्ठिरसम्वत् २६५४ वैशाखशुक्ल १०(विमर्श)

गोवर्द्धनमठ

मठस्थापन - युधिष्ठिरसम्वत् २६५२ कार्तिक शुक्ल ५
तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४८६

श्रीजगन्नाथादिप्रतिष्ठा- युधिष्ठिरसम्वत् २६५५वैशाखशुक्ल १०
तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४८३

आचार्याभिषेक - युधिष्ठिरसम्वत् २६५५वैशाखशुक्ल १०
तुल्य ईसवी सन् पूर्व ४८३

卐

दिशा	मठ	पीठ	वेद
१.पूर्व	भोगवर्द्धन - गोवर्द्धन	विमला	ऋक्
२.दक्षिण	शृङ्गेरी - शारदा	कामाक्षी	यजुः
३.पश्चिम	द्वारका - शारदा	भद्रकाली	साम
४.उत्तर	ज्योतिर्मठ	पूर्णागिरि	अथर्व

ध्यान रहे; जिस मठकी जो आराध्या देवी हैं, उन्हींके नामपर उस मठकी पीठसंज्ञा है। अत: भोगवर्द्धनमठको विमलापीठ, शृङ्गेरीमठको कामाक्षीपीठ, द्वारकामठको भद्रकालीपीठ और ज्योतिर्मठको पूर्णागिरिपीठ कहते हैं।

आचार्य	संन्यासी	ब्रह्मचारी
१.पद्मपाद	वन, अरण्य	प्रकाश
२.हस्तामलक/सुरेश्वर	सरस्वती, भारती, पुरी	चैतन्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

३.सुरेश्वर/ हस्तामलक	तीर्थ, आश्रम	स्वरूप
४.तोटक	गिरि, पर्वत, सागर	आनन्द

आम्नाय	आराध्य देव -देवी		महावाक्य
१. पूर्वाम्नाय	जगन्नाथ,	विमला	प्रज्ञानं ब्रह्म
२. दक्षिणाम्नाय	आदिवराह,	कामाक्षी	अहं ब्रह्मास्मि
३. पश्चिमाम्नाय	सिद्धेश्वर,	भद्रकाली	तत्त्वमसि
४. उत्तराम्नाय	नारायण,	पूर्णागिरि	अयमात्मा ब्रह्म

गोत्र	सम्प्रदाय	तीर्थ	क्षेत्र
१.काश्यप	भोगवारि (र)	महोदधि	पुरुषोत्तम
२.भूर्भुवः	भूरिवारि	तुङ्गभद्रा	रामेश्वरम्
३.अविगत	कीटवारि	गङ्गा-गोमती	द्वारका
४.भृगु	आनन्दवारि	अलकनन्दा	बदरिकाश्रम

शृङ्गेरिद्वारिकाज्योतिर्गोवर्द्धनमठाख्यया।
चत्वारि धर्मपीठानि चतुर्दिक्षु स्वतिष्ठिपत्।।
शिष्यान् सुरेश्वरादीन्स्वान् ब्रह्मिष्ठान्वेदपारगान्।
तत्तन्मठपतीन् कृत्वाऽऽदिशद्धर्मप्रचारणाम्।।
तीर्थाश्रमवनारण्यगिरिपर्वतसागराः ।
सरस्वती भारती च पुरी नामानि दशैव हि।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

श्रीगोवर्द्धनमठकी स्थापना गतकलि २६१५ कार्तिकशुक्लपञ्चमी, तदनुसार पूर्व विक्रमसंवत् ४२८ - ४२९ बी. सी. ४८६ में हुई। भगवत्पाद श्रीशिवावतार शङ्कराचार्यमहाभागने गत कलि २६१७ वैशाखशुक्ल दशमीके दिन अपने चिन्मय करकमलोंसे मूर्त्तिभञ्जकोंके शासनकालमें उच्छिन्न श्रीजगन्नाथादिको पुनः प्रतिष्ठित किया तथा गोवर्द्धनमठमें गोवर्द्धननाथको प्रतिष्ठित करनेके अनन्तर अपने प्रथम शिष्य श्रीसनन्दनसंज्ञक पद्मपादको श्रीगोवर्द्धनमठ - भोगवर्द्धनक्षेत्र - पुरुषोत्तमधाम - पुरीपीठपर अभिषिक्त किया।

८.१.पूर्वाम्नाय - गोवर्द्धनमठ - गुरुपरम्परा

नारायण महाविष्णो श्रीधरानन्त केशव।
वासुदेव जगन्नाथ हृषीकेश नमो नमः।।१।।

हे नारायण ! महाविष्णो! श्रीधर! अनन्त ! केशव! वासुदेव ! जगन्नाथ! हृषीकेश ! आपको नमस्कार है, नमस्कार है।।

त्वय्यात्मनि जगन्नाथे मन्मनो रमतामिह।
कदा ममेदृशं जन्म मानुषं सम्भविष्यति।।२।।

आप आत्मस्वरूप जगन्नाथमें मेरा मन रमण करता रहे, ऐसा यह मनुष्य जन्म मुझे कब सुलभ होगा ?

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।।३।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं हस्तामलकं च शिष्यम्।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि।।४।।

श्रीमन्नारायण, ब्रह्मा, वसिष्ठ, शक्ति, उनके पुत्र पराशर, व्यास, शुक, महामहिम गौडपाद, योगीन्द्र गोविन्द, उनके शिष्य शङ्कराचार्य एवम् उनके शिष्य पद्मपाद, हस्तामलक, तोटक तथा वार्तिककार सुरेश्वर तद्वत् इनकी परम्परामें अन्य हमारे गुरुओंको मैं सतत नमस्कार करता हूँ।।

माधवस्य सुतः श्रीमान् सनन्दन इति श्रुतः।
श्रीमत्परमहंसादिविरुदैरखिलैः सह।।५।।
श्रीपद्मपादः प्रथमाचार्यत्वेनाभिषिच्यतः।
भोगवारः सम्प्रदायो वनारण्ये पदे स्मृते।।६।।

द्विजोत्तम माधवके पुत्र श्रीमान् 'सनन्दन' – इस नामसे सुने गये हैं। उन्हींका अन्वर्थनाम श्रीपद्मपाद है। जिनको श्रीशिवावतार भगवत्पाद शङ्कराचार्यने गोवर्द्धनमठके प्रथम जगद्गुरु – शङ्कराचार्यपदपर अभिषिक्त किया और तदनुरूप श्रीमत्परमहंसादि समस्तविरुदावलिसे समलङ्कृत किया। इसका सम्प्रदाय भोगवार है। उससे सम्बद्ध शुभप्रद सन्न्यासियोंके पद अर्थात् योगपट्ट 'वन' तथा 'अरण्य' हैं।।

पुरुषोत्तमं तु क्षेत्रं स्याज्जगन्नाथोऽस्य देवता।
विमलाख्या हि देवी स्यान्महासत्तेति योच्यते।।७।।

इसका क्षेत्र 'पुरुषोत्तम' नामक है। इसके 'जगन्नाथ' देवता हैं। 'विमला' नामकी इसकी देवी हैं; जो कि महासत्ता कही जाती हैं।।

तीर्थं महोदधिः प्रोक्तं ब्रह्मचारी प्रकाशकः।
महावाक्यं च तत्र स्यात् प्रज्ञानं ब्रह्म चोच्यते।।८।।

महोदधि इसका 'तीर्थ' कहा गया है। इसके ब्रह्मचारी प्रकाश हैं। ऋग्वेदसे सम्बद्ध ऐतरेयोपनिषत् ५/३ में सन्निहित 'प्रज्ञानं ब्रह्म' इस मठका महावाक्य कहा जाता है।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋग्वेदपठनं चैव काश्यपो गोत्रमुच्यते।
अङ्गबङ्गकलिङ्गाश्च मगधोत्पलबर्बराः।
गोवर्द्धनमठाधीना देशाः प्राचीव्यवस्थिता:।।९।।

'ऋक्' इसका वेद है। काश्यप इसका 'गोत्र' कहा जाता है। अङ्ग (भागलपुर), बङ्ग (बङ्गाल), कलिङ्ग (दक्षिणपूर्व भारत), मगध, उत्कल (ओडिशा), बर्बर (जाङ्गलप्रदेश) नामक पूर्वदिशासे सम्बद्धक्षेत्र इस मठकी अधिकारसीमामें सन्निहित हैं।।"

तस्मिन् गोवर्द्धनमठे शङ्कराचार्यपीठगान्।
जगद्गुरून् क्रमाद्वक्ष्ये जन्ममृत्युनिवृत्तये।।१०।।

उस गोवर्द्धनमठमें शङ्कराचार्यपीठपर कालक्रमसे प्रतिष्ठित जगद्गुरुओंके नामका कथन जन्म - मृत्युकी निवृत्तिके लिए क्रमशः करता हूँ।।

१ २ ३
पद्मपादः शूलपाणिस्ततो नारायणाभिधः।
४ ५ ६
विद्यारण्यो वामदेवः पद्मनाभाभिधस्ततः।। ११।।
७ ८
जगन्नाथः सप्तमः स्यादष्टमो मधुरेश्वरः।
९ १० ११
गोविन्दः श्रीधरस्स्वामी माधवानन्द एव च।।१२।।
१२ १३
कृष्णो ब्रह्मानन्दनामा रामानन्दाभिधस्ततः।
१४ १५ १६
वागीश्वरः श्रीपरमेश्वरो गोपालनामकः ।।१३।।
१७ १८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनार्दनस्तथा ज्ञानानन्दश्चाष्टादशः स्मृतः।

१९

एकोनविंश आचार्यो बृहदारण्यनामकः।

मध्यकाले स्थितानेतान्नाचार्याख्यान्नमाम्यहम्।।१४।।

अथ तीर्थाभिधान् श्रीमद्गोवर्द्धनमठे स्थितान्।

निरञ्जनार्यपर्यन्तान् गुरून् नाम्ना स्मराम्यहम्।

२० २१

महादेवोऽथ परमो ब्रह्मानन्दस्ततः स्मृतः।।१५।।

२२ २३

रामानन्दस्ततो ज्ञेयस्त्रयोविंशः सदाशिवः।

२४ २५

हरीश्वरानन्दतीर्थो बोधानन्दस्ततः परम्।।१६।।

२६ २७

श्रीरामकृष्णतीर्थोऽथ चिद्बोधात्माभिधस्ततः।

२८ २९

तत्त्वाक्षरमुनिः पश्चादूनत्रिंशत्तु शङ्करः।।१७।।

३० ३१ ३२

श्रीवासुदेवतीर्थश्च हयग्रीवः श्रुतीश्वरः।

३३ ३४

विद्यानन्दस्त्रयस्त्रिंशो मुकुन्दानन्द एव च।।१८।।

३५ ३६

हिरण्यगर्भस्तीर्थश्च नित्यानन्दस्ततः परम्।

३७ ३८ ३९

सप्तत्रिंशत् शिवानन्दो श्रीयोगीश्वरः सुदर्शनः।। १९।।

४० ४१

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथश्री व्योमकेशाख्यो ज्ञेयो दामोदरस्ततः।
४२ ४३
योगानन्दाभिधस्तीर्थो गोलकेशस्ततः परम्।।२०।।
४४ ४५
श्रीकृष्णानन्दतीर्थश्च देवानन्दोऽभिधस्तथा।
४६ ४७
चन्द्रचूडाभिधः षट्चत्वारिंशोऽथ हलायुधः।।२१।।
४८ ४९ ५०
सिद्धसेव्यस्तारकात्मा ततो बोधायनाभिधः।
५१ ५२ ५३
श्रीधरो नारायणश्च ज्ञेयश्चान्यः सदाशिवः।।२२।।
५४ ५५ ५६
जयकृष्णो विरूपाक्षो विद्यारण्यस्तथा परः।
५७ ५८
विश्वेश्वराभिधस्तीर्थो विबुधेश्वर एव च ।।२३।।
५९ ६०
महेश्वरस्तूनषष्टितमोऽथ मधुसूदनः।
६१ ६२ ६३ ६४
रघूत्तमो रामचन्द्रो योगीन्द्रश्च महेश्वरः।।२४।।
६५ ६६
ओङ्काराख्यः पञ्चषष्टितमो नारायणोऽपरः।
६७ ६८ ६९
जगन्नाथः श्रीधरश्च रामचन्द्रस्तथाऽपरः।।२५।।
७० ७१
अथ ताम्राक्षतीर्थस्स्यात्तत उग्रेश्वरस्स्मृतः।
७२ ७३ ७४

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्दण्डतीर्थस्ततः सङ्कर्षणजनार्दनौ।।२६।।

७५

अखण्डात्माभिधस्तीर्थः पञ्चसप्ततिसङ्ख्यकः।

७६ ७७ ७८

दामोदरः शिवानन्दस्ततः श्रीमद्गदाधरः।।२७।।

७९ ८० ८१

विद्याधरो वामनश्च ततः श्रीशङ्करोऽपरः।

८२ ८३ ८४

नीलकण्ठो रामकृष्णस्तथा श्रीमद्रघूत्तमः।।२८।।

८५ ८६

दामोदरोऽन्यो गोपालः षड्शीतितमो गुरुः।

८७ ८८ ८९

मृत्युञ्जयोऽथ गोविन्दो वासुदेवस्तथापरः।।२९।।

९० ९१

गङ्गाधराभिधस्तीर्थस्ततः श्रीमत् सदाशिवः।

९२ ९३ ९४ ९५

वामदेवश्चोपमन्युः हयग्रीवो हरिस्तथा।। ३०।।

९६ ९७

रघूत्तमाभिधस्त्वन्यः पुण्डरीकाक्ष एव च।

९८

परश्शङ्करतीर्थश्च शतादूनः प्रकथ्यते।।३१।।

९९ १००

वेदगर्भाभिधस्तीर्थस्ततो वेदान्तभास्करः।

१०१ १०२ १०३

विज्ञानात्मा शिवानन्दतीर्थः महेश्वरस्ततः।।३२।।

१०४

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामकृष्णाभिधस्त्वन्यत् चतुश्शततमो मतः।

१०५ १०६ १०७

वृषभध्वजः शुद्धबोधस्ततः सोमेश्वराभिधः॥३३॥

१०८

अष्टोत्तरशततमो वोपदेवः प्रकीर्त्तितः।

१०९ ११० १११

शम्भुतीर्थो भृगुश्चाथ केशवानन्दतीर्थकः॥३४॥

११२ ११३

विद्यानन्दाभिधस्तीर्थो वेदानन्दाभिधस्ततः।

११४ ११५

श्रीयोगानन्दतीर्थश्च सुतपानन्द एव च॥३५॥

११६ ११७

ततः श्रीधरस्तीर्थोऽन्यस्तथा चान्यो जनार्दनः।

११८

कामनाशानन्दतीर्थः शतमष्टादशाधिकम् ॥३६॥

११९ १२०

ततो हरिहरानन्दो गोपालाख्योऽपरः स्ततः।

१२१ १२२

कृष्णानन्दाभिधस्त्वन्यो माधवानन्द एव च॥३७॥

१२३ १२४ १२५

मधुसूदनतीर्थोऽन्यो गोविन्दोऽथ रघूत्तमः।

१२६ १२७ १२८

वामदेवो हृषीकेशस्ततो दामोदरोऽपरः॥३८॥

१२९ १३०

गोपालानन्दतीर्थश्च गोविन्दाख्योपरस्ततः।

१३१ १३२

तथा रघूत्तमश्चान्यों रामचन्द्रस्ततः परः॥३९॥

१३३ १३४ १३५

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोविन्दो रघुनाथश्च रामकृष्णस्ततोऽपरः।
१३६ १३७
मधुसूदनतीर्थश्च तथा दामोदरोऽपरः।।४०।।
१३८ १३९ १४० १४१
रघूत्तमः शिवो लोकनाथो दामोदरस्ततः।
१४२
मधुसूदनतीर्थाख्यस्तत आचार्य उच्यते।।४१।।
१४३
भारतीकृष्णतीर्थाख्यो गणितज्ञः प्रकीर्त्तितः।
१४४
महामहिमगोभक्तो देवतीर्थो निरञ्जनः।।४२।।
१४५
यतीन्द्रो निश्चलानन्दसरस्वती ततः स्मृतः।
आजन्मब्रह्मचारी यो भाति गोवर्द्धने मठे।।४३।।

पूर्व कर्मानुरूप नरजन्म तथा जन्मानुरूप वर्ण और वर्णानुरूप आश्रमकी व्यवस्था सनातन श्रौत – स्मार्त धर्म है। तदनुसार केवल ब्राह्मण चारों आश्रमोंमें अधिकृत हैं– 'ब्राह्मणाः प्रव्रजन्ति' (बृहदारण्यकोपनिषत् ४.५.२२) 'मुखजानामयं धर्मः यद्विष्णोर्लिङ्ग (वैष्णवं लिङ्ग) – धारणम्। बाहुजातोरुजातानां नायं धर्मो विधीयते।।' (देवल/ दत्तात्रेय), ' चत्वार आश्रमा ब्राह्मणस्य त्रयो राजन्यस्य द्वौ वैश्यस्य।।' (स्मृति), 'ब्राह्मणस्य तु चत्वारस्त्वाश्रमा विहिताः प्रभो । वर्णास्तान् नानुवर्तन्ते त्रयो भारतसत्तम।।' (महाभारत - शान्तिपर्व ६२.२) आदि वचनोंके अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है। सन्यासके दशविध प्रभेद श्रीशिवावतार भगवत्पाद शङ्कराचार्यद्वारा ख्यापित हैं। अतः उनके श्रीपद्मपादादि सन्यासी शिष्य और श्रीपद्मपादादिके पीठासीन होनेके पूर्वके सन्यासी शिष्य दशनामी नहीं हो सकते। श्रीतोटक जिन्हें

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतर्दनाचार्यके नामसे भी जाना जाता है, उन्हें विद्योपलब्धिके पूर्व जडताके कारण गिरि नामसे पुकारा जाता था। पुरीपीठसे सम्बद्ध वन, अरण्य; शृङ्गेरीपीठसे सम्बद्ध भारती, सरस्वती, पुरी; द्वारकापीठसे सम्बद्ध तीर्थ, आश्रम; ज्योतिष्पीठसे सम्बद्ध गिरि, पर्वत, सागर नामा सन्यासियोंमें एक पीठसे सम्बद्ध अरण्यादि किसी एक ही सन्यासी न होनेके कारण पीठासीन श्रीपद्मपादादिको किसी एक या एकाधिक नामसे ख्यापित करना सम्भव नहीं। अतः दशनामी सन्यासियोंको ख्यापित करनेमें एक – दो पीढ़ीका अन्तराल स्वाभाविक था।

इस सन्दर्भमें द्वारकापीठके चौथे आचार्य श्रीब्रह्मान्दतीर्थ, शृङ्गेरीपीठके पाँचवें आचार्यश्री.ज्ञानगिर्याचार्य एवम् श्रीगोवर्द्धनमठके चौथे आचार्य श्रीविद्यारण्यके समीक्षणसे यह तथ्य सिद्ध है।

श्रीगोवर्द्धनमठके चौथे आचार्य श्रीविद्यारण्य और उन्नीसवें श्रीबृहदारण्य हुए हैं; अतः देहलीदीपन्यायसे पाँचवेंसे अट्ठारहवेंतक अरण्यनामा रहे हों, यह अधिक सम्भव है। बीसवें श्रीमहादेवतीर्थसे एक सौ चौवालीसवें श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थ पर्यन्त तीर्थ नामा सन्यासी हुए हैं।

श्रीगोवर्द्धनमठ – भोगवर्द्धन – पुरुषोत्तमशङ्खक्षेत्र – विमलापीठका १४५ वाँ श्रीमज्जगद्गुरु – शङ्कराचार्य मैं सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट् श्रीहरिहरानन्दसरस्वती **'करपात्री'** जीका सन्यासी शिष्य हूँ। भगवत्कृपासे मुझे धर्मसम्राट् और पुरीपीठाधीश्वर पूर्वाचार्यसे वेदान्तादि विविध शास्त्रोंके अध्ययनका कई वर्षोंतक अद्भुत सुयोग सधा हैं। श्रीहरिगुरुकरुणाके अमोघ प्रभावसे पुरीपीठाधीश्वर – श्रीमज्जगद्गुरु – शङ्कराचार्य निरञ्जनदेवतीर्थजीने अपने चिन्मय करकमलोंसे मेरा अभिषेक कर मुझे इस आचार्यपदपर प्रतिष्ठित किया है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

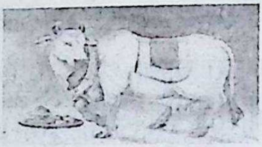

८.२. श्रीगोवर्द्धनमठ – पुरीकी आचार्य – परम्परा

युधिष्ठिरशक २६३१ वैशाखशुक्ल पञ्चमीके दिन अवतीर्ण श्रीशिवावतार भगवत्पाद शङ्कराचार्यने युधिष्ठिरशक २६५५; तदनुसार गतकलि २६१७ वैशाखशुक्ल दशमीके दिन अपने चिन्मय करकमलोंसे मूर्त्तिभञ्जकोंके शासनकालमें उच्छिन्न श्रीजगन्नाथादिको पुनः प्रतिष्ठित किया तथा अपने प्रथम शिष्य श्रीसनन्दनसंज्ञक पद्मपादको श्रीगोवर्द्धनमठ – पुरुषोत्तमक्षेत्र – पुरीपीठपर अभिषिक्त किया। गतकलि २६१७ से गतकलि २६४२ तक श्रीपद्मपाद पदासीन रहे। अतः लगभग २५ वर्षोंतक उनका पीठासीन कार्यकाल सिद्ध होता है। श्रीगोवर्द्धनमठकी स्थापना गतकलि २६१५ कार्तिकशुक्लपञ्चमी, तदनुसार पूर्व विक्रमसंवत् ४२८ – ४२९ बी. सी. ४८६ में हुई। अतः पीठसंरक्षणकाल बी. सी. ४८६ से बी. सी. ४५९ तक २७ वर्ष सिद्ध होता है।

क्रम नाम	पर्यन्त	अवधि – लगभग
०१.अनन्तश्री पद्मपाद	युधिष्ठिरशक २६५५; तदनुसार गतकलि २६१७; तुल्य ई.सन् पूर्व ४८४ से गतकलिसम्वत् २६४२; तुल्य ई.सन् पूर्व ४५९	२५ वर्ष
०२.अनन्तश्री शूलपाणि	गतकलिसम्वत् २६६२ तुल्य ई.सन् पूर्व ४३९	२० वर्ष
०३.अनन्तश्री नारायण	गतकलिसम्वत् २६७९ तुल्य ई.सन् पूर्व ४२२	१७वर्ष
०४.अनन्तश्री विद्यारण्य	गतकलिसम्वत् २६९७ तुल्य ई.सन् पूर्व ४०४	१८ वर्ष
		८० वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

०५.अनन्तश्री वामदेव	गतकलिसम्वत् २७१३	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ३८८	१६ वर्ष
०६.अनन्तश्री पद्मनाभ	गतकलिसम्वत् २७२८	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ३७३	१५ वर्ष
०७.अनन्तश्री जगन्नाथ	गतकलिसम्वत् २७४२	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ३५९	१४ वर्ष
०८.अनन्तश्री मधुरेश्वर	गतकलिसम्वत् २७५२	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ३४०	१० वर्ष
०९.अनन्तश्री गोविन्द (१)	गतकलिसम्वत् २७७३	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ३२८	२१वर्ष
१०.अनन्तश्री श्रीधर	गतकलिसम्वत् २७९१	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ३१०	१८वर्ष
११.अनन्तश्री माधवानन्द	गतकलिसम्वत् २८०८	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २९३	१७ वर्ष
१२.अनन्तश्री कृष्णब्रह्मानन्द	गतकलिसम्वत् २८२६	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २७५	१८ वर्ष
१३.अनन्तश्री रामानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् २८४२	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २५९	१६ वर्ष
१४.अनन्तश्री वागीश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् २८५७	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २४४	१५ वर्ष
१५.अनन्तश्री परमेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् २८७१	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २३०	१४ वर्ष
१६अनन्तश्री गोपालतीर्थ	गतकलिसम्वत् २८८३	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २१८	१२ वर्ष
१७.अनन्तश्री जनार्दनतीर्थ	गतकलिसम्वत् २८९७	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २०४	१४ वर्ष
१८.अनन्तश्री ज्ञानानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् २९१७	
	तुल्य ई.सन् पूर्व १८४	२० वर्ष
		२२० वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

१९.अनन्तश्री बृहदारण्य	गतकलिसम्वत् २९३६	
	तुल्य ई.सन् पूर्व १६५	१९ वर्ष
२०.अनन्तश्री महादेवतीर्थ	गतकलिसम्वत् २९५४	
	तुल्य ई.सन् पूर्व १४७	१८ वर्ष
२१.अनन्तश्री ब्रह्मानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् २९७०	
	तुल्य ई.सन् पूर्व १३१	१६ वर्ष
२२.अनन्तश्री रामानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् २९८५	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ११६	१५ वर्ष
२३.अनन्तश्री सदाशिवतीर्थ	गतकलिसम्वत् २९९९	
	तुल्य ई.सन् पूर्व १०२	१४ वर्ष
२४.अनन्तश्री हरीश्वरानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३०११	
	तुल्य ई.सन् पूर्व वर्ष ९०	१२ वर्ष
२५.अनन्तश्री बोधानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३०२५	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ७६	१४ वर्ष
२६.अनन्तश्री रामकृष्णतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३०४५	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ५६	२० वर्ष
२७.अनन्तश्री चिद्बोधात्मतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३०५५	
	तुल्य ई.सन् पूर्व ४६	१० वर्ष
२८.अनन्तश्री तत्त्वाक्षरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३०७३	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २८	१८ वर्ष
२९.अनन्तश्री शङ्करतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३०८९	
	तुल्य ई.सन् पूर्व १२	१६वर्ष
३०.अनन्तश्री वासुदेवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३१०९	
	तुल्य ई.सन् ८	२०वर्ष
३१.अनन्तश्री हयग्रीवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३१२६	
	तुल्य ई.सन् २५	१७वर्ष
३२.अनन्तश्री श्रुतीश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३१४०	
	तुल्य ई.सन् ३९	१४ वर्ष
		२२३ वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

३३.अनन्तश्री विद्यानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३१६०	
	तुल्य ई.सन् ५९	२० वर्ष
३४.अनन्तश्री मुकुन्दानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३१७८	
	तुल्य ई.सन् ७७	१८ वर्ष.
३५.अनन्तश्री हिरण्यगर्भतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३१९७	
	तुल्य ई.सन् ९६	१९ वर्ष.
३६.अनन्तश्री नित्यानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३२१५	
	तुल्य ई.सन् ११४	१८ वर्ष.
३७.अनन्तश्री शिवानन्द तीर्थ	गतकलिसम्वत् ३२३१	
	तुल्य ई.सन् १३०	१६ वर्ष.
३८.अनन्तश्री श्रीयोगीश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३२४९	
	तुल्य ई.सन् १४८	१८वर्ष.
३९.अनन्तश्री सुदर्शन तीर्थ	गतकलिसम्वत् ३२६४	
	तुल्य ई.सन् १६३	१५ वर्ष.
४०.अनन्तश्री व्योमकेशतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३२८१	
	तुल्य ई.सन् १८०	१७ वर्ष.
४१.अनन्तश्री दामोदरतीर्थ (१)	गतकलिसम्वत् ३३०२	
	तुल्य ई.सन् २०१	२१ वर्ष.
४२.अनन्तश्री योगानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३३२२	
	तुल्य ई.सन् पूर्व २२१	२० वर्ष.
४३.अनन्तश्री गोलकेश तीर्थ	गतकलिसम्वत् ३३४३	
	तुल्य ई.सन् २४२	२१वर्ष.
४४.अनन्तश्री श्रीकृष्णानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३३६१	
	तुल्य ई.सन् २६०	१८वर्ष.
४५.अनन्तश्री देवानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३३८४	
	तुल्य ई.सन् २८३	२३वर्ष.
४६.अनन्तश्री चन्द्रचूडतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३३९९	
	तुल्य ई.सन् २९८	१५ वर्ष.
		२५९वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

४७.अनन्तश्री हलायुधतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३४१३	
	तुल्य ई.सन् ३१२	१४वर्ष
४८.अनन्तश्री सिद्धसेव्यतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३४२८	
	तुल्य ई.सन् ३२७	१५वर्ष
४९.अनन्तश्री तारकात्मातीर्थ	गतकलिसम्वत् ३४४८	
	तुल्य ई.सन् ३४७	२०वर्ष
५०.अनन्तश्री. बोधायनतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३४६९	
	तुल्य ई.सन् ३६८	२१वर्ष
५१.अनन्तश्री.श्रीधरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३४८८	
	तुल्य ई.सन् ३८७	१९वर्ष
५२.अनन्तश्री. नारायणतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३५०६	
	तुल्य ई.सन् ४०५	१८ वर्ष
५३.अनन्तश्री.सदाशिवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३५२१	
	तुल्य ई.सन् ४२०	१५वर्ष
५४. अनन्तश्री.जयकृष्णतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३५३४	
	तुल्य ई.सन् ४३३	१३ वर्ष
५५.अनन्तश्री. विरूपाक्षतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३५४५	
	तुल्य ई.सन् ४४४	११वर्ष
५६.अनन्तश्री.विद्यारण्यतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३५५२	
	तुल्य ई.सन् ४५१	०७वर्ष
५७. अनन्तश्री.विश्वेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३५७२	
	तुल्य ई.सन् ४७१	२०वर्ष
५८.अनन्तश्री.विबुधेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३५९५	
	तुल्य ई.सन् ४९४	२३ वर्ष
५९.अनन्तश्री.महेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३६१६	
	तुल्य ई.सन् ५१५	२१ वर्ष
६०.अनन्तश्री मधुसूदनतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३६३५	
	तुल्य ई.सन् ५३४	१९वर्ष
		२३६वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

६१.अनन्तश्री. रघूत्तमतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३६५०		
	तुल्य ई.सन्	५४९	१५वर्ष
६२.अनन्तश्री. रामचन्द्रतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३६६३		
	तुल्य ई.सन्	५६२	१३ वर्ष
६३.अनन्तश्री.योगीन्द्रतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३६७४		
	तुल्य ई.सन्	५७३	११वर्ष
६४.अनन्तश्री.महेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३६८१		
	तुल्य ई.सन्	५८०	०७ वर्ष
६५.अनन्तश्री.ओङ्कारतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३७०८		
	तुल्य ई.सन्	६०७	२७ वर्ष
६६.अनन्तश्री.नारायणतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३७३०		
	तुल्य ई.सन्	६२९	२२ वर्ष
६७.अनन्तश्री. जगन्नाथतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३७५१		
	तुल्य ई.सन्	६५०	२१वर्ष
६८. अनन्तश्री.श्रीधरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३७७०		
	तुल्य ई.सन्	६६९	१९ वर्ष
६९.अनन्तश्री.रामचन्द्रतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३७८३		
	तुल्य ई.सन्	६८२	१३ वर्ष
७०.अनन्तश्री. ताम्राक्षतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३७९५		
	तुल्य ई.सन्	६९४	१२ वर्ष
७१.अनन्तश्री.उग्रेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३८१०		
	तुल्य ई.सन्	७०९	१५ वर्ष
७२. अनन्तश्री.उद्दण्डतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३८२८		
	तुल्य ई.सन्	७२७	१८ वर्ष
७३. अनन्तश्री.सङ्कर्षणतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३८५०		
	तुल्य ई.सन्	७४९	२२ वर्ष
७४.अनन्तश्री. जनार्दनतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३८७१		
	तुल्य ई.सन्	७७०	२१ वर्ष
			२३६ वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७५.अनन्तश्री.अखण्डात्मतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३८८४ तुल्य ई.सन् ७८३	१३वर्ष
७६.अनन्तश्री. दामोदरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३८९६ तुल्य ई.सन् ७९५	१२वर्ष
७७.अनन्तश्री.शिवानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३९११ तुल्य ई.सन् ८१०	१५वर्ष
७८.अनन्तश्री.श्रीगदाधरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३९२९ तुल्य ई.सन् ८२८	१८वर्ष
७९.अनन्तश्री. विद्याधरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३९५१ तुल्य ई.सन् ८५०	२२वर्ष
८०.अनन्तश्री. वामनतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३९७२ तुल्य ई.सन् ८७१	२१वर्ष
८१.अनन्तश्री. श्रीशङ्करतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३९८६ तुल्य ई.सन् ८८५	१४वर्ष
८२.अनन्तश्री. नीलकण्ठतीर्थ	गतकलिसम्वत् ३९९७ तुल्य ई.सन् ८९६	११वर्ष
८३. अनन्तश्री.रामकृष्णतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४०१७ तुल्य ई.सन् ९१६	२०वर्ष
८४.अनन्तश्री. रघूत्तमतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४०३७ तुल्य ई.सन् ९३६	२०वर्ष
८५.अनन्तश्री. दामोदरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४०४७ तुल्य ई.सन् ९४६	१०वर्ष
८६.अनन्तश्री. गोपालतीर्थ(२)	गतकलिसम्वत् ४०६० तुल्य ई.सन् ९५९	१३वर्ष
८७.अनन्तश्री.मृत्युञ्जयतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४०८१ तुल्य ई.सन् ९८०	२१वर्ष
८८.अनन्तश्री. गोविन्दतीर्थ(२)	गतकलिसम्वत् ४१०३ तुल्य ई.सन् १००२	२२वर्ष
		२३२ वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

०८९.अनन्तश्री.वासुदेवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४११५	
	तुल्य ई.सन् १०१४	१२वर्ष
०९०.अनन्तश्री.गङ्गाधरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४१२७	
	तुल्य ई.सन् १०२६	१२वर्ष
०९१.अनन्तश्री.सदाशिवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४१४८	
	तुल्य ई.सन् १०४७	२१वर्ष
०९२.अनन्तश्री.वामदेवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४१७०	
	तुल्य ई.सन् १०६९	२२वर्ष
०९३.अनन्तश्री.उपमन्युतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४१८५	
	तुल्य ई.सन् १०८४	१५वर्ष
०९४.अनन्तश्री.हयग्रीवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४२०१	
	तुल्य ई.सन् ११००	१६वर्ष
०९५.अनन्तश्री.हरितीर्थ	गतकलिसम्वत् ४२१९	
	तुल्य ई.सन् १११८	१८वर्ष
०९६.अनन्तश्री.रघूत्तमतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४२३८	
	तुल्य ई.सन् ११३७	१९वर्ष
०९७.अनन्तश्री.पुण्डरीकाक्षतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४२४५	
	तुल्य ई.सन् ११४४	०७वर्ष
०९८.अनन्तश्री. पराशङ्करतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४२६१	
	तुल्य ई.सन् ११६०	१६वर्ष
०९९.अनन्तश्री.वेदगर्भतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४२७९	
	तुल्य ई.सन् ११७८	१८वर्ष
१००.अनन्तश्री.वेदान्तभास्कर	गतकलिसम्वत् ४२९९	
	तुल्य ई.सन् ११९८	२०वर्ष
१०१.अनन्तश्री. विज्ञानात्मा	गतकलिसम्वत् ४३१९	
	तुल्य ई.सन् १२१८	२० वर्ष
१०२.अनन्तश्री. शिवानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४३४०	
	तुल्य ई.सन् १२३९	२१वर्ष
		२३७ वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

१०३.अनन्तश्री.महेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४३६०	
	तुल्य ई.सन् १२५९	२०वर्ष
१०४.अनन्तश्री.रामकृष्णतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४३७९	
	तुल्य ई.सन् १२७८	१९वर्ष
१०५.अनन्तश्री.वृषभध्वजतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४३९३	
	तुल्य ई.सन् १२९२	१४वर्ष
१०६.अनन्तश्री. शुद्धबोध तीर्थ	गतकलिसम्वत् ४४०६	
	तुल्य ई.सन् १३०५	१३वर्ष
१०७.अनन्तश्री.सोमेश्वरतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४४२६	
	तुल्य ई.सन् १३२५	२०वर्ष
१०८.अनन्तश्री.वोपदेवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४४४७	
	तुल्य ई.सन् १३४६	२१वर्ष
१०९.अनन्तश्री.शम्भुतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४४६७	
	तुल्य ई.सन् १३६६	२०वर्ष
११०.अनन्तश्री.भृगुतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४४८०	
	तुल्य ई.सन् १३७९	१३वर्ष
१११.अनन्तश्री.केशवानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४४९२	
	तुल्य ई.सन् १३९१	१२वर्ष
११२.अनन्तश्री. विद्यानन्द तीर्थ	गतकलिसम्वत् ४५०६	
	तुल्य ई.सन् १४०५	१४वर्ष
११३.अनन्तश्री.वेदानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४५२२	
	तुल्य ई.सन् १४२१	१६वर्ष
११४.अनन्तश्री. श्रीयोगानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४५३७	
	तुल्य ई.सन् १४३६	१५वर्ष
११५.अनन्तश्री.सुतपानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४५६१	
	तुल्य ई.सन् १४६०	२४वर्ष
११६. अनन्तश्री.श्रीधर तीर्थ	गतकलिसम्वत् ४५७२	
	तुल्य ई.सन् १४७१	११वर्ष
		२३२ वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

११७.अनन्तश्री.जनार्दनतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४५९३	
	तुल्य ई.सन् १४९२	२१वर्ष
११८.अनन्तश्री.कामनाशानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४६०५	
	तुल्य ई.सन् १५०४	१२वर्ष
११९. अनन्तश्री.हरिहरानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४६२१	
	तुल्य ई.सन् १५२०	१६वर्ष
१२०.अनन्तश्री.गोपालतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४६३६	
	तुल्य ई.सन् १५३५	१५वर्ष
१२१.अनन्तश्री. कृष्णानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४६५२	
	तुल्य ई.सन् १५५१	१६वर्ष
१२२.अनन्तश्री.माधवानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४६७३	
	तुल्य ई.सन् १५७२	२१वर्ष
१२३.अनन्तश्री.मधुसूदनतीर्थ (१)	गतकलिसम्वत् ४६८६	
	तुल्य ई.सन् १५८५	१३वर्ष
१२४. अनन्तश्री.गोविन्दतीर्थ (३)	गतकलिसम्वत् ४७०२	
	तुल्य ई.सन् १६०१	१६वर्ष
१२५.अनन्तश्री.रघूत्तमतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४७२२	
	तुल्य ई.सन् १६२१	२०वर्ष
१२६.अनन्तश्री.वामदेवतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४७३७	
	तुल्य ई.सन् १६३६	१५वर्ष
१२७.अनन्तश्री.हृषीकेशतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४७५०	
	तुल्य ई.सन् १६४९	१३वर्ष
१२८.अनन्तश्री. दामोदरतीर्थ (३)	गतकलिसम्वत् ४७७५	
	तुल्य ई.सन् १६७४	२५वर्ष
१२९.अनन्तश्री. गोपालानन्दतीर्थ	गतकलिसम्वत् ४७८७	
	तुल्य ई.सन् १६८६	१२वर्ष
१३०.अनन्तश्री.गोविन्दतीर्थ (४)	गतकलिसम्वत् ४८०१	
	तुल्य ई.सन् १७००	१४वर्ष
		२२९वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

१३१.अनन्तश्री. रघूत्तमतीर्थ गतकलिसम्वत् ४८२०
तुल्य ई.सन् १७१९ १९वर्ष

१३२.अनन्तश्री.रामचन्द्रतीर्थ गतकलिसम्वत् ४८४१
तुल्य ई.सन् १७४० २१वर्ष

१३३.अनन्तश्री. गोविन्दतीर्थ (५) गतकलिसम्वत् ४८५६
तुल्य ई.सन् १७५५ १५वर्ष

१३४. अनन्तश्री.रघुनाथतीर्थ गतकलिसम्वत् ४८७१
तुल्य ई.सन् १७७० १५वर्ष

१३५.अनन्तश्री.रामकृष्णतीर्थ गतकलिसम्वत् ४८९२
तुल्य ई.सन् १७९१ २१वर्ष

१३६.अनन्तश्री.मधुसूदनतीर्थ(२)गतकलिसम्वत् ४९०५
तुल्य ई.सन् १८०४ १३वर्ष

१३७.अनन्तश्री.दामोदरतीर्थ (४)गतकलिसम्वत् ४९२८
तुल्य ई.सन् १८२७ २३वर्ष

१३८.अनन्तश्री. रघूत्तमतीर्थ गतकलिसम्वत् ४९५०
तुल्य ई.सन् १८४९ २२वर्ष

१३९.अनन्तश्री. शिवतीर्थ गतकलिसम्वत् ४९७१
तुल्य ई.सन् १८७० २१वर्ष

१४०.अनन्तश्री.लोकनाथतीर्थ गतकलिसम्वत् ४९८४
तुल्य ई.सन् १८८३ १३वर्ष

१४१.अनन्तश्री.दामोदरतीर्थ (५) गतकलिसम्वत् ४९९९
तुल्य ई.सन् १८९८ १५वर्ष

१४२.अनन्तश्री.मधुसूदनतीर्थ(३) गतकलिसम्वत् ५०२७
तुल्य ई.सन् १९२५ २७वर्ष

१४३.अनन्तश्री.भारतीकृष्णतीर्थ गतकलिसम्वत् ५०६१
तुल्य ई.सन् १९६० ३४वर्ष

२५९ वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

क्रम नाम	पदासीन	लगभग अवधि
१४४.अनन्तश्री. निरञ्जनदेवतीर्थ	आषाढकृष्णषष्ठी बुधवार विक्रमसम्वत् २०२१; शकसम्वत् १८८६; तदनुसार १ जुलाई, १९६४. से माघशुक्ल–षष्ठी रविवार; विक्रमसम्वत् २०४८; तदनुसार ९ फरबरी १९९२ पर्यन्त	२८वर्ष
१४५.अनन्तश्री.निश्चलानन्दसरस्वती	माघशुक्लषष्ठी रविवार; विक्रमसम्वत् २०४८; तदनुसार ९ फरबरी १९९२को अभिजित् मुहूर्तमें श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजीके करकमलोंसे अभिषिक्त ग्रन्थलेखनकाल सन् २०१२ पर्यन्त	२० वर्ष

अनन्तश्री – विभूषित भारतीकृष्णतीर्थजीका जन्म १४ मार्च सन् १८८४ ; तदनुसार चैत्रकृष्णतृतीया शुक्रवार विक्रमसंवत् १९४०, शकसम्वत् १८०५ तिनोवेलीमें हुआ। उनका नाम व्यङ्कटरमण रखा गया। वे तमिल, संस्कृत, इंगलिश, मराठी, गुजराती, हिन्दी आदि चौदह भाषाओंके ; तद्वत् व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद, यन्त्रशास्त्र एवम् गणित आदि विविध विषयोंके ख्यातिप्राप्त विद्वान् थे। १४ जुलाई, १९१९ तदनुसार श्रावणकृष्ण (शुक्लादि मासानुसार आषाढकृष्ण)प्रतिपदा सोमवार विक्रमसंवत् १९७८, शकसम्वत् १८४१ में वाराणसीमें द्वारकापीठाधीश्वर श्रीत्रिविक्रमतीर्थके द्वारा उनका सन्यास सम्पन्न हुआ। पुरीपीठके श्रीमज्जगद्गुरु–

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शङ्कराचार्य मधुसूदनतीर्थजीसे उन्होंने २८ जून १९२५; तदनुसार आषाढशुक्ल सप्तमी रविवार विक्रमसंवत् १९८२, शकसम्वत् १८४७ को मन्त्रोपदेश प्राप्त किया। बम्बईमें २ फरबरी १९६०; माघशुक्ल पञ्चमी - षष्ठी मङ्गलवार विक्रमसंवत् २०१६, शकसम्वत् १८८१ को डेढ़बजे दिनमें उन्होंने देहत्याग किया। समुद्रतटपर बाणगङ्गामें उन्हें माघशुक्लषष्ठीके दिन भूसमाधि दी गयी।

पुरीपीठके श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य मधुसूदनतीर्थजीसे उन्होंने २८ जून १९२५ के दिन मन्त्रोपदेश प्राप्त किया। उसी दिनसे उनका कार्यकाल मान्य है।

भारतीकृष्णतीर्थजीके ब्रह्मलीन होनेके पश्चात् उनकी भावनाके अनुसार ३० जून १९६४ तक द्वारका- शारदापीठके श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य अभिनव सच्चिदानन्दतीर्थ गोवर्द्धनमठका सञ्चालन करते रहे। ब्रह्मलीन भारतीकृष्णतीर्थजीके अन्तिम इच्छापत्रके अनुसार उन्होंने आषाढकृष्णषष्ठी बुधवार विक्रमसम्वत् २०२१; शकसम्वत् १८८६;तदनुसार १ जुलाई, १९६४को इस पीठपर श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजीका विधिवत् अभिषेक किया। औदिच्यकुलभूषण श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजीके पूर्वाश्रमका नाम श्रीचन्द्रशेखरदवे (द्विवेदी) था। पदासीन होनेके पूर्व उनका सन्यास द्वारका- शारदापीठके श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य अभिनव सच्चिदानन्दतीर्थ जीके द्वारा सम्पन्न हुआ ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदासीनकालगणना

ई . सन् पूर्व ४८३ से ई. सन् २०१२ तक

२०१२
\+ ०४८३
———
= २४९५ वर्ष

तद्वत्
०८०
\+ २२०
\+ २२३
\+ २५९
\+ २३६
\+ २३६
\+ २३२
\+ २३७
\+ २३२
\+ २२९
\+ २५९
\+ ००४
\+ ०२८
\+ ०२०
————
= २४९५ वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारका - शारदापीठपर अनन्तश्री सुरेश्वराचार्यमहाभाग युधिष्ठिरशक २६४९ तदनुसार कलिसम्वत् २६१३ ; ई.पूर्व ४८९-९०माघकृष्ण /शुक्ल ७को समासीन हुए। तबसे युधिष्ठिरशक ५१४९; ई.सन् २०११ पर्यन्त युधिष्ठिरशक ५१४९- युधिष्ठिरशक २६४९ = २५०० या ई.पूर्व ०४८९ + ई.सन् २०११=२५००वर्ष प्राचीन द्वारकाकी परम्परा सिद्ध होती है।

८.३.पश्चिमाम्नाय - द्वारकामठ - गुरुपरम्परा

क्रम योगपट्ट	पर्यन्त	पीठासीनकाल लगभग
०१. अनन्तश्री सुरेश्वराचार्य	युधिष्ठिरशक २६४९ माघकृष्ण /शुक्ल ७ ; ई.पूर्व ४८९से युधिष्ठिरशक २६९१ चैत्रकृष्ण ८; तुल्य ई.पूर्व ४४७ पर्यन्त	४२वर्ष.
०२.अनन्तश्री चित्सुखाचार्य	युधिष्ठिरशक २७१५ पौषशुक्ल ३ तुल्य ई. पूर्व ४२३	२४ वर्ष.
०३.अनन्तश्री सर्वज्ञानाचार्य	युधिष्ठिरशक २७७४ श्रावणशुक्ल ११ तुल्य ई. पूर्व ३६४	५९ वर्ष.
०४. अनन्तश्री ब्रह्मान्दतीर्थ	युधिष्ठिरशक २८२३ श्रावणशुक्ल १ तुल्य ई. पूर्व ३१५	४९ वर्ष.
०५.अनन्तश्री स्वरूपाभिज्ञानाचार्य	युधिष्ठिरशक २८९० ज्येष्ठ अमावास्या ; तुल्य ई. पूर्व २४८	६७ वर्ष.
		२४१ वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

०६.अनन्तश्री मङ्गलमूर्त्याचार्य	युधिष्ठिरशक २९४२ पौषशुक्ल १४ तुल्य ई. पूर्व १९६	५२वर्ष.
०७.अनन्तश्री भास्कराचार्य	युधिष्ठिरशक २९६५ पौषशुक्ल १२ तुल्य ई. पूर्व १७३	२३वर्ष.
०८.अनन्तश्री प्रज्ञानाचार्य	युधिष्ठिरशक ३००८ आषाढशुक्ल ७ तुल्य ई. पूर्व १३०	४३वर्ष.
०९.अनन्तश्री ब्रह्मज्योत्स्नाचार्य	युधिष्ठिरशक ३०४० चैत्रकृष्ण ४ तुल्य ई. पूर्व ९८	३२वर्ष.
१०.अनन्तश्री आनन्दाविर्भावाचार्य	विक्रमसम्वत् ९ फाल्गुनशुक्ल ९ तुल्य ई. पूर्व ४७	५१वर्ष.
११.अनन्तश्री कलानिधितीर्थ	विक्रमसम्वत् ८२ पौषशुक्ल ६ तुल्य ई.सन् २६	७३वर्ष.
१२.अनन्तश्री चिद्विलासाचार्य	विक्रमसम्वत् ११९ मार्गशीर्षशुक्ल १३ तुल्य ई. सन् ६३	३७वर्ष.
१३.अनन्तश्री विभूत्यानन्दाचार्य	विक्रमसम्वत् १५४ श्रावणकृष्ण ११ तुल्य ई.सन् ९८	३५ वर्ष.
१४.अनन्तश्री स्फूर्त्तिनिलयपाद	विक्रमसम्वत् २०३ आषाढशुक्ल ६ तुल्य ई. सन् १४७	४९ वर्ष.
		३९५वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

१५.अनन्तश्री वरतन्तुपाद	विक्रमसम्वत् २५९	
	आषाढकृष्ण ३	
	तुल्य ई.सन् २०३	०५६वर्ष.
१६.अनन्तश्री योगारूढाचार्य	विक्रमसम्वत् ३६०	
	मार्गशीर्षकृष्ण ११	
	तुल्य ई. सन् ३०४	१०१वर्ष.
१७.अनन्तश्री विजयडिण्डिमाचार्य	विक्रमसम्वत् ३९४	
	पौषकृष्ण ८	
	तुल्य ई. सन् ३३८	०३४वर्ष.
१८.अनन्तश्री विद्यातीर्थ	विक्रमसम्वत् ४३७	
	चैत्रशुक्ल १	
	तुल्य ई. सन् ३८१	०४३वर्ष.
१९.अनन्तश्री चिच्छक्तिदेशिक	विक्रमसम्वत् ४३८	
	आषाढशुक्ल १२	
	तुल्य ई. सन् ३८२	००१वर्ष.
२०.अनन्तश्री विज्ञानेश्वरतीर्थ	विक्रमसम्वत् ५११	
	आषाढशुक्ल १५	
	तुल्य ई. सन् ४५५	०७३वर्ष.
२१.अनन्तश्री ऋतम्भराचार्य	विक्रमसम्वत् ५७२	
	माघशुक्ल १०	
	तुल्य ई. सन् ५१६	०६१वर्ष.
२२.अनन्तश्री अमरेश्वरगुरु	विक्रमसम्वत् ६०८	
	भाद्रपदकृष्ण ६	
	तुल्य ई. सन् ५५२	०३६वर्ष.
२३.अनन्तश्री सर्वतोमुख तीर्थ	विक्रमसम्वत् ६६९	
	पौषशुक्ल ४	
	तुल्य ई. सन् ६१३	०६१वर्ष.
		४६६ वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

२४.अनन्तश्री आनन्ददेशिक	विक्रमसम्वत् ७२१	
	वैशाखकृष्ण ५	
	तुल्य ई. सन् ६६५	५२वर्ष.
२५. अनन्तश्री समाधिरसिक	विक्रमसम्वत् ७९९	
	फाल्गुन शुक्ल १२	
	तुल्य ई. सन् ७४३	७८वर्ष.
२६.अनन्तश्री नारायणाश्रम	विक्रमसम्वत् ८३६	
	चैत्रशुक्ल १४	
	तुल्य ई. ७८०	३७वर्ष.
२७.अनन्तश्री वैकुण्ठाश्रम	विक्रमसम्वत् ८८५	
	आषाढकृष्ण ६	
	तुल्य ई. सन् ८२९	४९वर्ष.
२८.अनन्तश्री विक्रमाश्रम	विक्रमसम्वत् ९११	
	आषाढशुक्ल ३	
	तुल्य ई. सन् ८५५	२६वर्ष.
२९.अनन्तश्री नृसिंहाश्रम	विक्रमसम्वत् ९६०	
	ज्येष्ठकृष्ण १४	
	तुल्य ई. सन् ९०४	४९वर्ष.
३०.अनन्तश्री त्र्यम्बकाश्रम	विक्रमसम्वत् ९६५	
	वैशाख अमावास्या	
	तुल्य ई. सन् ९०९	०५वर्ष.
३१.अनन्तश्री विष्णवाश्रम	विक्रमसम्वत् १००१	
	ज्येष्ठशुक्ल १	
	तुल्य ई. सन् ९४५	३६वर्ष.
३२.अनन्तश्री केशवाश्रम	विक्रमसम्वत् १०६०	
	माघकृष्ण ५	
	तुल्य ई. सन् १००४	५९वर्ष.
		३९१वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

३३.अनन्तश्री चिदम्बराश्रम	विक्रमसम्वत् १०८३	
	मार्गशीर्षकृष्ण ९	
	तुल्य ई. सन् १०२७	२३वर्ष.
३४.अनन्तश्री पद्मनाभाश्रम	विक्रमसम्वत् ११०९	
	ज्येष्ठशुक्ल १५	
	तुल्य ई. सन् १०५३	२६वर्ष.
३५.अनन्तश्री महादेवाश्रम	विक्रमसम्वत् ११४८	
	श्रावणकृष्ण ९	
	तुल्य ई. सन् १०९२	३९वर्ष.
३६.अनन्तश्री सच्चिदानन्दाश्रम	विक्रमसम्वत् १२०७	
	आश्विनकृष्ण ५	
	तुल्य ई. सन् ११५१	५९वर्ष.
३७.अनन्तश्री विद्याशङ्कराश्रम	विक्रमसम्वत् १२६५	
	आश्विनकृष्ण ४	
	तुल्य ई. सन् १२०९	५८ वर्ष.
३८.अनन्तश्री अभिनवसच्चिदानन्दाश्रम	विक्रमसम्वत् १२९३	
	वैशाखशुक्ल ६	
	तुल्य ई. सन् १२३७	२८वर्ष.
३९.अनन्तश्री शशिशेखराश्रम	विक्रमसम्वत् १३२६	
	वैशाखशुक्ल १	
	तुल्य ई. सन् १२७०	३३वर्ष.
४०.अनन्तश्री वासुदेवाश्रम	विक्रमसम्वत् १३६२	
	फाल्गुनकृष्ण १०	
	तुल्य ई. सन् १३०६	३६वर्ष.
४१अनन्तश्री पुरुषोत्तमाश्रम	विक्रमसम्वत् १३९४	
	माघकृष्ण ५	
	तुल्य ई. सन् १३३८	३२वर्ष.
		३३४वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

४२.अनन्तश्री जनार्दनाश्रम	विक्रमसम्वत् १४०८	
	भाद्रपदशुक्ल १५	
	तुल्य ई. सन् १३५२	१४वर्ष.
४३.अनन्तश्री हरिहराश्रम	विक्रमसम्वत् १४११	
	श्रावणशुक्ल ११	
	तुल्य ई. सन् १३५५	०३वर्ष.
४४.अनन्तश्री भवाश्रम	विक्रमसम्वत् १४२१	
	वैशाखकृष्ण ५	
	तुल्य ई. सन् १३६५	१०वर्ष.
४५.अनन्तश्री ब्रह्माश्रम	विक्रमसम्वत् १४३६	
	आषाढशुक्ल ९	
	तुल्य ई. सन् १३८०	१५वर्ष.
४६.अनन्तश्री वामनाश्रम	विक्रमसम्वत् १४५३	
	चैत्रकृष्ण १२	
	तुल्य ई. सन् १३९७	१७वर्ष.
४७.अनन्तश्री सर्वज्ञाश्रम	विक्रमसम्वत् १४८९	
	चैत्रकृष्ण ८	
	तुल्य ई. सन् १४३३	३६वर्ष.
४८.अनन्तश्री प्रद्युम्नाश्रम	विक्रमसम्वत् १४९५	
	चैत्रशुक्ल ७	
	तुल्य ई. सन् १४३९	०६वर्ष.
४९.अनन्तश्री गोविन्दाश्रम	विक्रमसम्वत् १५२३	
	ज्येष्ठकृष्ण ४	
	तुल्य ई. सन् १४६७	२८वर्ष.
५०.अनन्तश्री चिदाश्रम	विक्रमसम्वत् १५७६	
	फाल्गुन शुक्ल २	
	तुल्य ई. सन् १५२०	५३वर्ष.
		१८२वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

५१.अनन्तश्री विश्वेश्वराश्रम	विक्रमसम्वत् १६०८	
	मार्गशीर्षशुक्ल १	
	तुल्य ई. सन् १५५२	३२वर्ष.
५२.अनन्तश्री दामोदराश्रम	विक्रमसम्वत् १६१५	
	चैत्रकृष्ण ५	
	तुल्य ई. सन् १५५९	०७वर्ष.
५३.अनन्तश्री महादेवाश्रम	विक्रमसम्वत् १६१६	
	चैत्रशुक्ल १	
	तुल्य ई. सन् १५६०	०१वर्ष.
५४.अनन्तश्री अनिरुद्धाश्रम	विक्रमसम्वत् १६२५	
	माघकृष्ण ४	
	तुल्य ई. सन् १५६९	०९वर्ष.
५५.अनन्तश्री अच्युताश्रम	विक्रमसम्वत् १६२९	
	श्रावणकृष्ण ६	
	तुल्य ई. सन् १५७३	०४वर्ष.
५६.अनन्तश्री माधवाश्रम	विक्रमसम्वत् १६६५	
	माघकृष्ण ४	
	तुल्य ई. सन् १६०९	३६वर्ष.
५७.अनन्तश्री अनन्ताश्रम	विक्रमसम्वत् १७१६	
	चैत्रशुक्ल १२	
	तुल्य ई. सन् १६६०	५१वर्ष.
५८.अनन्तश्री विश्वरूपाश्रम	विक्रमसम्वत् १७२१	
	श्रावणकृष्ण २	
	तुल्य ई. सन् १६६५	०५वर्ष.
५९.अनन्तश्री चिद्घनाश्रम	विक्रमसम्वत् १७२६	
	माघशुक्ल ६	
	तुल्य ई. सन् १६७०	०५वर्ष.
		१५०वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

६०.अनन्तश्री नृसिंहाश्रम	विक्रमसम्वत् १७३५ वैशाखशुक्ल ४ तुल्य ई. सन् १६७९	०९वर्ष.
६१.अनन्तश्री मनोहराश्रम	विक्रमसम्वत् १७६१ भाद्रशुक्ल ९ तुल्य ई. सन् १७०५	२६वर्ष.
६२.अनन्तश्री प्रकाशानन्दसरस्वती	विक्रमसम्वत् १७९५ आश्विनकृष्ण ६ तुल्य ई. सन् १७३९	३४वर्ष.
६३.अनन्तश्री विशुद्धानन्दाश्रम	विक्रमसम्वत् १७९९ वैशाख अमावास्या तुल्य ई. सन् १७४३	०४वर्ष.
६४.अनन्तश्री वामनेन्द्राश्रम	विक्रमसम्वत् १८३१ श्रावणशुक्ल ६ तुल्य ई. सन् १७७५	३२वर्ष.
६५.अनन्तश्रीकेशवाश्रम	विक्रमसम्वत् १८३८ कार्तिककृष्ण ९ तुल्य ई. सन् १७८२	०७वर्ष.
६६.अनन्तश्री मधुसूदनाश्रम	विक्रमसम्वत् १८४८ माघशुक्ल ५ तुल्य ई. सन् १७९२	१०वर्ष.
६७.अनन्तश्री हयग्रीवाश्रम	विक्रमसम्वत् १८६२ तुल्य ई. सन् १८०६	१४वर्ष.
६८.अनन्तश्री प्रकाशाश्रम	विक्रमसम्वत् १८६३ तुल्य ई. सन् १८०७	०१वर्ष.
६९.अनन्तश्री हयग्रीवानन्दसरस्वती	विक्रमसम्वत् १८७४ तुल्य ई. सन् १८१८	११वर्ष.
		१४८वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

७०.अनन्तश्री श्रीधराश्रम	विक्रमसम्वत् १९१४	
	तुल्य ई. सन् १८५८	४०वर्ष.
७१.अनन्तश्री दामोदराश्रम	विक्रमसम्वत् १९२८	
	तुल्य ई. सन् १८७२	१४वर्ष.
७२.अनन्तश्री केशवाश्रम	विक्रमसम्वत् १९३५	
	आश्विनकृष्ण ७	
	तुल्य ई. सन् १८७९	०७वर्ष.
७३.अनन्तश्री राजराजेश्वर-		
शङ्कराश्रम	विक्रमसम्वत् १९५७	
	आषाढशुक्ल ५	
	तुल्य ई. सन् १९०१	२२वर्ष.
७४.अनन्तश्री माधवतीर्थ	विक्रमसम्वत् १९७२	
	भाद्रपद अमावास्या	
	तुल्य ई. सन् १९१६	१४वर्ष.
७५.अनन्तश्री शान्त्यानन्दसरस्वती	विक्रमसम्वत् १९८२	
	तुल्य ई. सन् १९२६	१०वर्ष.
७६.अनन्तश्री चन्द्रशेखराश्रम	विक्रमसम्वत् २००१	
	तुल्य ई. सन् १९४५	१९वर्ष.
७७.अनन्तश्री अभिनवसच्चिदानन्दतीर्थ	विक्रमसम्वत् २०३८	
	तुल्य ई. सन् १९८२	३७वर्ष.

(अभिषिक्त ज्येष्ठशुक्ल १०, विक्रमसम्वत् २००१,
२०जून तुल्य ई. सन् १९५४)

१६३वर्ष.

पदासीन – वर्तमान

७८.अनन्तश्री स्वरूपानन्दसरस्वती अभिषिक्त
विक्रमसम्वत् २०३८, ज्येष्ठशुक्ल ५ ; २७ मई
तुल्य ई. सन् १९८२
(ग्रन्थरचनावर्ष विक्रमसम्वत् २०६९; तुल्य ई. सन् २०११तक) ३०वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदासीनकालगणना

ई.सन् पूर्व ४८९से ई. सन् २०११ तक

२०११
\+ ०४८९
———
= २५०० वर्ष

तद्वत्

२४१+३९५+४६६+३९१+३३४+१८२+१५०+१४८
+१६३+०३०=२५०० वर्ष

७५.अनन्तश्री शान्त्यानन्दसरस्वती	विक्रमसम्वत् १९८२	
	तुल्य ई. सन् १९२६	१०वर्ष.
७६.अनन्तश्री चन्द्रशेखराश्रम	विक्रमसम्वत् २००१	
	तुल्य ई. सन् १९४५	१९वर्ष.
७७.अनन्तश्री अभिनवसच्चिदानन्दतीर्थ	विक्रमसम्वत् २०३८	
	तुल्य ई. सन् १९८२	३७वर्ष.

७५.श्रीत्रिविक्रमतीर्थ	ईसवी सन् १९२१ पर्यन्त	०५ वर्ष
७६.श्रीभारतीकृष्ण तीर्थ	ईसवी सन् १९२४पर्यन्त	०३वर्ष
७७.श्रीस्वरूपानन्दतीर्थं	ईसवी सन् १९४४पर्यन्त	२०वर्ष
७८.श्री अभिनवसच्चिदानन्दतीर्थ	ईसवी सन् १९८२पर्यन्त	३७वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विज्ञप्ति

द्वारकां - शारदापीठके ७४वें श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य श्रीमाधवतीर्थजीके पश्चात् श्रीत्रिविक्रमतीर्थजी इस पीठके ७५ वें आचार्य हुए। जैसा कि श्रीचतुर्थीलालशर्मा - विरचित **'आह्निककर्मपद्धति'** के प्रारम्भमें सन्निहित **'जगद्गुरुशारदापीठाधीश्वर - श्रीमाधवतीर्थाचार्य-पादकरकमलसञ्जात - त्रिविक्रमतीर्थः'** इस कथनके अनुशीलनसे सिद्ध है। श्रीत्रिविक्रमतीर्थजीसे सन् १९१९ में सन्न्यासदीक्षासम्प्राप्त विश्वविख्यात वैदिकगणितके रचयिता श्रीभारतीकृष्णतीर्थमहाभाग सन् १९२१में द्वारका - शारदापीठके ७६ वें श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य हुए। सन् १९२५ में श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठके १४२वें श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य मधुसूदनतीर्थजीके विशेष अनुरोध और प्रबल आग्रहपर श्रीभारतीकृष्णतीर्थमहाभागने पुरीपीठके आचार्यका दायित्व स्वीकार किया और द्वारका - शारदापीठपर श्रीस्वामी स्वरूपानन्दतीर्थको अभिषिक्त किया। श्रीस्वामी स्वरूपानन्दतीर्थजीके ब्रह्मलीन होनेपर श्रीभारतीकृष्णतीर्थमहाभागने द्वारका - शारदापीठपर विक्रमसम्वत् २००१ तुल्य ई. सन् १९४५ में श्री अभिनवसच्चिदानन्दतीर्थजीको अभिषिक्त किया। विपक्षके द्वारा श्रीमाधवतीर्थजीके पश्चात् द्वारका - शारदापीठपर श्रीस्वामी शान्त्यानन्दसरस्वती और उनके उपरान्त श्रीस्वामी चन्द्रशेखराश्रम जी मान्यता प्राप्त आचार्य हुए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.४.उत्तराम्नाय - ज्योतिर्मठ - गुरुपरम्परा

तोटको विजयः कृष्णः कुमारो गरुडः शुकः।
विन्ध्यो विशालो बकुलो वामनः सुन्दरोऽरुणः।।
श्रीनिवासः सुखानन्दो विद्यानन्दः शिवो गिरिः।
विद्याधरो गुणानन्दो नारायण उमापतिः।।
एते ज्योतिर्मठाधीशाः आचार्याश्चिरजीविनः।
य एतान् संस्मरेन्नित्यं योगसिद्धिं स विन्दति।।

(मन्त्ररहस्य - परिशिष्ट)

श्रीतोटक, विजय, कृष्ण, कुमार, गरुड, शुक, विन्ध्य, विशाल , बकुल , वामनः , सुन्दर , अरुणः , श्रीनिवासः, सुखानन्द , विद्यानन्द, शिव, गिरि, विद्याधर, गुणानन्द, नारायण और उमापति - नामक यति ज्योतिर्मठके आचार्य चिरजीवी हुए हैं। जो इनका नित्य संस्मरण करता है, वह योगसिद्धि लाभ करता है।

युधिष्ठिरसम्वत् २६३१ वैशाखशुक्लपञ्चमीके दिन ई. सन् से ५०७ वर्ष पूर्व भगवत्पाद श्रीशङ्कराचार्यका प्रादुर्भाव हुआ । युधिष्ठिरसम्वत् २६५४ पौषशक्लपूर्णिमाके दिन ई. सन् से ४८४ वर्ष पूर्व उन्होंने ज्योतिष्पीठपर योगीन्द्र श्रीतोटकाचार्यको प्रतिष्ठित किया। विक्रमसम्वत् १५००; तदनुसार ई. सन् १४४३ में स्वामी श्रीबालकृष्णमहाभाग ज्योतिष्पीठके बाईसवें श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्यपदपर प्रतिष्ठित किये गये। इस प्रकार ई. सन् से ०४८४ वर्ष पूर्व + ई. सन् १४४३ =१९२७ वर्षोंमें २१ आचार्योंमें प्रत्येकका कार्यकाल औसतन ९१ वर्ष सिद्ध होता है।

ध्यान रहे; द्वारकापीठके सोलहवें श्रीयोगारूढाचार्यके १०१,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पचीसवें श्रीसमाधिरसिकके ७८, तीसरे श्रीसर्वज्ञानाचार्यके ५९. छत्तीसवें श्रीसच्चिदानन्दाश्रमके ५९ वर्ष कार्यकालको देखते हुए ज्योतिष्पीठके २१ आचार्योंके औसतन ९१ वर्ष कार्यकालकी सहिष्णुता योगमाहात्म्यकी दृष्टिसे अर्जित करनी चाहिए।

ई. सन् से ०४८४ वर्ष पूर्व अभिषिक्त श्री. तोटकाचार्यसे ई. सन् २०१२ पर्यन्त ०४८.४ + २०१२= २४९६ वर्ष श्रीज्योतिष्पीठकी परम्परा सिद्ध है।

क्रम योगपट्ट

०१.अनन्तश्री. तोटक युधिष्ठिरसम्वत् २६५४ पौषशुक्लपूर्णिमाके दिन ई. सन् से ४८४ वर्ष पूर्व अभिषिक्त.

०२.अनन्तश्री. विजय

०३.अनन्तश्री. कृष्ण

०४.अनन्तश्री. कुमार

०५.अनन्तश्री.गरुड

०६.अनन्तश्री.शुक

०७.अनन्तश्री.विन्ध्य

०८.अनन्तश्री.विशाल

०९.अनन्तश्री.बकुल

१०.अनन्तश्री.वामन

११.अनन्तश्री.सुन्दर

१२.अनन्तश्री.अरुण:

१३.अनन्तश्री.श्रीनिवास

१४.अनन्तश्री.सुखानन्द

१५.अनन्तश्री.विद्यानन्द

१६.अनन्तश्री. शिव

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

१७.अनन्तश्री.गिरि

१८अनन्तश्री.विद्याधर

१९.अनन्तश्री.गुणानन्द

२०.अनन्तश्री.नारायण

२१.अनन्तश्री. उमापति — विक्रमसम्वत् १५००, तुल्य ई. सन् १४४३पर्यन्त

१९२७ वर्ष

क्रम योगपट्ट	पर्यन्त	पीठासीनकाल लगभग
२२.अनन्तश्री. बालकृष्ण	वि. स. १५००से १५५७ तुल्य ई. सन् १५००	५७.वर्ष.
२३.अनन्तश्री हरिब्रह्म	वि. स.१५५७ से १५५८ तुल्य ई. सन् १५०१	०१वर्ष.
२४.अनन्तश्री. हरिस्मरण	वि. स. १५५८ से १५६६ तुल्य ई. सन् १५०९	०८वर्ष.
२५.अनन्तश्री.वृन्दावन	वि. स.१५६६ से १५६८ तुल्य ई. सन् १५११	०२वर्ष.
२६.अनन्तश्री.अनन्तनारायण	वि. स.१५६८ से १५६९ तुल्य ई. सन् १५१२	०१वर्ष.
२७.अनन्तश्री. भवानन्द	वि. स.१५६९ से १५८३ तुल्य ई. सन् १५२६	१४वर्ष.
२८.अनन्तश्री.कृष्णानन्द	वि. स. १५८३ से १५९३ तुल्य ई. सन् १५३६	१०वर्ष.
२९.अनन्तश्री. हरिनारायण	वि. स. १५९३ से १६०१ तुल्य ई. सन् १५४४	०८वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३०.अनन्तश्री. ब्रह्मानन्द	वि. स.१६०१ से १६२१	
	तुल्य ई. सन् १५६४	२०वर्ष.
३१.अनन्तश्री.देवानन्द	वि. स. १६२१ से १६३६	
	तुल्य ई. सन् १५७९	१५वर्ष.
		१३ ६वर्ष.
३२.अनन्तश्री. रघुनाथ	वि. स. १६३६से १६६१	
	तुल्य ई. सन् १६०४	२५वर्ष.
३३.अनन्तश्री. पूर्णदेव	वि. स. १६६१से १६८७	
	तुल्य ई. सन् १६३०	२६वर्ष.
३४.अनन्तश्री.कृष्णदेव	वि. स. १६८७ से १६९६	
	तुल्य ई. सन् १६३९	०९वर्ष.
३५.अनन्तश्री.शिवानन्द	वि. स. १६९६से १७०३	
	तुल्य ई. सन् १६४६	०७वर्ष.
३६.अनन्तश्री.बालकृष्ण	वि. स. १७०३ से १७१७	
	तुल्य ई. सन् १६६०	१४वर्ष.
३७.अनन्तश्री.नारायणोपेन्द्र	वि. स. १७१७ से १७५०	
	तुल्य ई. सन् १६९३	३३वर्ष.
३८.अनन्तश्री.हरिश्चन्द्र	वि. स. १७५०से १७६३	
	तुल्य.ई. सन् १७०६	१३वर्ष.
३९.अनन्तश्री. सदानन्द	वि. स. १७६३ से १७७३	
	तुल्य ई. सन् १७१६	१०वर्ष.
४०.अनन्तश्री.केशवानन्द	वि. स.१७७३ से १७८१	
	तुल्य ई. सन् १७२४	०८वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४१.अनन्तश्री. नारायणतीर्थ	वि. स. १७८१ से १८२३ तुल्य ई. सन् १७६६	४२वर्ष.
४२.अनन्तश्री.रामकृष्णतीर्थ	वि. स. १८२३ से १८३३ तुल्य ई. सन् १७७६	१०वर्ष.
		———
		१९७वर्ष.

विक्रमसम्वत् १८३३ से विक्रमसम्वत् १९९८ चैत्रशुक्लतृतीयापर्यन्त तदनुसार तुल्य ई. सन् १७७६ से १८ मई १९४१ तक अर्थात् १६५ वर्षोंतक ज्योतिर्मठकी परम्परा विलुप्त रही। इस अवधिमें भूकम्पके चपेटमें मठ नष्ट हो गया। **'भारतधर्ममहामण्डल'** के मान्य सदस्योंने गढ़वालके शासकीय आलेखोंमें ज्योतिर्मठके नाम अङ्कित पाँच विश्वा भूमिके स्थलका पता लगाया। उन्होंने मान्य श्रीमज्जगद्गुरु- शङ्कराचार्यों, यतियों तथा काशी - विद्वत्परिषद् के पदाधिकारियोंसे सम्पर्क साधकर ज्योतिर्मठकी विलुप्त परम्पराको उज्जीवित करनेकी भावनासे श्रीमद्दण्डी स्वामी ब्रह्मानन्दसरस्वतीजीका चयन किया। श्रीमद्दण्डी स्वामीजीका चैत्रशुक्लचतुर्थी वि. स. १९९८ तदनुसार १९ मई तुल्य ई. सन् १९४१को वाराणसीमें ज्योतिर्मठके मान्य श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्यपदपर विधिवत् अभिषेक सम्पन्न हुआ।

यह भी प्रसिद्धि है कि टिहरीगढ़वालके नरेश प्रदीपशाहने लोभवश श्रीबदरीनाथजीके अर्चक पदकी नियुक्तिके अधिकारसे ४३वें आचार्य अनन्तश्री.टोकरानन्दजीको वञ्चित कर दिया। नरेशने नम्बूदरीपाद ब्राह्मण ब्रह्मचारी गोपालको रावलकी उपाधि प्रदानकर वि. स. १८३३में राजवंशके अनुगत अर्चक बना दिया। तबसे नम्बूदरीपाद ब्राह्मणवंशके ब्रह्मचारी राजवंशके अनुगत रहकर अर्चक होने लगे। ज्योतिर्मठके सञ्चालनके लिए अपेक्षित आयका स्रोत श्रीबदरीनाथको श्रद्धालुओंद्वारा समर्पित श्रद्धासुमन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही था। उससे वञ्चित रहनेके कारण ४२वें आचार्य अनन्तश्री.रामकृष्णतीर्थ वि. स. १८२३ से १८३३ तुल्य ई. सन् १७७६के पश्चात् ४३ से ५१ तकके आचार्य ज्योतिर्मठके स्थानापन्न मुख्यालय गुजरातराज्यके अहमदाबाद जनपदमें अवस्थित धोलकामठसे अपने कृत्योंका निर्वाह करते रहे। इनका काल गुजराती वि. स. में समुपलब्ध है; जो कि सामान्यतया वर्षके सात महीनोंतक भारतके उत्तरी भागमें प्रयुक्त विक्रमसम्वत् से ई.स. की अपेक्षा एक सङ्ख्या न्यून होता है।

वेङ्कटेश्वरप्रेससे प्रकाशित आनन्दगिरि, भामती तथा रत्नप्रभासहित ब्रह्मसूत्र - शाङ्करभाष्यके प्रथमभागकी भूमिकाके ४४वें पृष्ठपर ज्योतिर्मठके दो श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्योंका नामोल्लेख इस प्रकार है। -

'....विष्णुप्रयागतीरनिवासी श्रीमदच्युतानन्दकरकमल-सञ्जाताभिषेकसिंहासनारूढमहाराजाधिराज- श्रीज्योतिर्मठाधीश्वरः श्रीमच्छङ्कराचार्यः श्रीराजराजेश्वरानन्दगिरिस्वामिनः श्रीशङ्करो विजयतेतराम् ।'

उक्त दोनों आचार्य धोलकामठके सिद्ध हैं। ज्योतिर्मठके पूर्वाचार्योंसे संलग्न धोलकामठके आचार्योंका नामोल्लेख इस प्रकार है।-

४३. १.अनन्तश्री.टोकरानन्द विक्रमसम्वत् १८३३; ई. सन् १७७६
४४.२.अनन्तश्री.पुरुषोत्तमानन्द
४५.३.अनन्तश्री.कैलासानन्द
४६.३.अनन्तश्री.विश्वेश्वरानन्द
४७.४.अनन्तश्री.अच्युतानन्द वि.स. १९२९; ई.स.१८७३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय – चतुष्पीठ – परम्परा

४८.५.अनन्तश्री. राजराजेश्वरानन्द	वि.स.१९५९	
	ई.स. १९०३	३०वर्ष.
४९.५.अनन्तश्री.मधुसूदनानन्द	वि.स.१९६७	
	ई.स.१९११	०८वर्ष.
५०.६.अनन्तश्री.विजयानन्द	वि.स.१९९५	
	ई.स. १९३९	२८वर्ष.
५१.७.अनन्तश्री.अद्वैतानन्द	वि.स.१९९७	
	ई.स.१९४१	०२वर्ष.
ई. सन् १७७६से ई.स.१९४१पर्यन्त		१६५वर्ष.

ज्योतिर्मठके ४२वें श्रीमज्जगद्गुरु – शङ्कराचार्य अनन्तश्री. रामकृष्णतीर्थ वि. स. १८२३ से १८३३; तुल्य ई. सन् १७७६के बाद ज्योतिर्मठसे साक्षात् सम्बद्ध विक्रमसम्वत् २०६९; तुल्य ई. सन् २०१२ पर्यन्त श्रीमज्जगद्गुरु – शङ्कराचार्योंका उल्लेख इस प्रकार है। –

४३/५२. अनन्तश्री. ब्रह्मानन्दसरस्वती चैत्रशुक्लचतुर्थी वि.स.१९९८; १अप्रैल ई.स.१९४१से वैशाखशुक्लदशमी वि.स.२०१०; २०मई १९५३ ई.स. पर्यन्त १२ वर्ष. १२वर्ष.

४४/५३. अनन्तश्री.कृष्णबोधाश्रम ज्येष्ठशुक्ल त्रयोदशी वि.स.२०१०; ई.स.१९५३ में श्रीकाशी – विश्वनाथके मुक्तिमण्डपमें प्रातः ६ बजे श्रीद्वारका – शारदापीठाधीश्वर अभिनव सच्चिदानन्दतीर्थ एवम् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजके सान्निध्यमें अभिषिक्त.

भाद्रशुक्ल त्रयोदशी वि.स. २०३०; १० सितम्बर १९७३ ई. सायं ७.३० देहत्यागपर्यन्त. २० वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४५/५४.अनन्तश्री.स्वरूपानन्दसरस्वती वि.स.

७ दिसम्बर, सन् १९७३

(ग्रन्थरचनावर्ष विक्रमसम्वत् २०६९;

तुल्य ई. सन् २०१२तक) ३९ वर्ष.

———

७१वर्ष.

अवधि

१९२७ वर्ष+१३६वर्ष.+१९७वर्ष.+१६५वर्ष.+०७१वर्ष.=२४९६वर्ष.

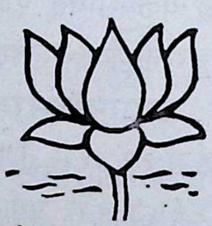

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.५.दक्षिणाम्नाय - शृङ्गेरीशारदामठ - गुरुपरम्परा

सन् १९७१ में दैवयोगसे अपने दो मित्रोंके सहित नैमिषारण्यसे शृङ्गेरी - पर्यन्त पदयात्राके सन्दर्भमें श्रीशङ्कराचार्यमहाभागकी जन्मभूमि कालदी (कालटी)के दर्शनका सुयोग सधा। वहाँ शारदामन्दिरकी भित्तिपर अङ्कित श्रीभगवत्पादका अवतारकाल दो हजारवर्ष पूर्व श्लोकबद्ध दृष्टिगोचर हुआ; परन्तु सन् २०१२ के एक वर्ष पूर्व राष्ट्रोत्कर्ष अभियानके सन्दर्भमें वहाँ पहुँचनेपर शिलालेख दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

ध्यान रहे, ई. १८७९ से १९१२ पर्यन्त शृङ्गेरीमठके श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्यपदपर समासीन श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनव नरसिंहभारतीके द्वारा श्रीशङ्कराचार्यमहाभागकी जन्मभूमि कालदी (कालटी) में श्री आदि शङ्कराचार्यमन्दिर तथा श्रीशारदामन्दिरका निर्माण कराया गया। इन यमज उपासनास्थलोंमें प्राणप्रतिष्ठासमारोह २१ फरवरी १९१० ई. सौम्यसम्वत्सर माघशुक्ल द्वादशीको सम्पन्न हुआ।

शारदामन्दिरकी भित्तिपर श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनव नरसिंहभारतीके द्वारा एक शिलालेख उत्कीर्ण करवाया गया था। वह शिलालेख १९७१ के बाद विलुप्त कर दिया गया। सौभाग्यवश १९६६ ई. सन् में पालघाटके नारायणनद्वारा प्रकाशित तथा प्रोफेसर के. आर. वेङ्कटरमणद्वारा सम्पादित कृति **'कालदी'** में उक्त शिलालेखका १८ श्लोकोंसे युक्त पाठ प्रकाशित किया गया है; जिसमें शृङ्गगिरिमठके श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य श्री अभिनवविद्यातीर्थजीका ८. १. १९६६ तिथ्यङ्कित आशीर्वचन भी सन्निहित है। **'कालदी'** के संस्कृतखण्ड पृष्ठ १ तथा २ में समुद्धृत उक्त शिलालेखके

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम आठ श्लोकोंका मूलपाठ हिन्दी अनुवादसहित यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। -

श्रीशारदामन्दिर - कालटी - प्रतिष्ठापित-
शिलालिखिताः श्लोकाः

प्रायशो वर्षसाहस्रद्वितयात् प्राक्सदाशिवः।
दृष्ट्वाऽधर्मेण धर्मस्य ग्लानिं सर्वत्र भूतले।।१।।
कालट्यां केरले श्रीमच्छङ्कराचार्यसंज्ञया।
प्राप्य जन्म स्वप्रतिज्ञापालनार्थमिवादरात्।।२।।
विजित्य सर्वान् वादेन दुर्मताविष्टचेतसः।
आविष्कृत्यासमन्ताद्वै वैदिकं धर्ममुत्तमम्।।३।।
विशुद्धाद्वैतविज्ञानमासेतुहिमशैलकम्।
स्वयं संबोध्यबहुशः कृत्वा चात्मवशंवदान्।।४।।
जुगोप धर्मं तेनास्मानितिवृत्तं पुरातनम्।
ज्ञात्वाप्याचार्यचारित्रबोधकग्रन्थराशिभिः।।५।।
अकृतज्ञा वयं मोहान्न स्मरामो जगद्गुरुम्।
तेन पापेन चास्माकं विविधापत्तिसम्भवः।।६।।
इत्यालोच्य महायोगी हितैषी जगतां सदा।
श्रीगुरुः सच्चिदानन्दशिवाभिनवपूर्वकः।।७।।
नृसिंहभारतीस्वामी दक्षिणाशामठाधिपः।
कृतघ्नतानिरासाय जनताभ्युदयाय च।।८।।

"प्रायः दो हजार वर्षपूर्व सदाशिव भगवान् शङ्कर विश्वमें सर्वत्र अधर्मके द्वारा धर्मकी ग्लानिको देखकर केरलके कालटी नामक गाँवमें जन्म लेकर श्रीशङ्कराचार्यके नामसे प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञाके पालनहेतु सार्थक सत्प्रयासके सन्दर्भमें वेदविरुद्ध समस्त मतावलम्बियोंको शास्त्रार्थमें परास्तकर उत्कृष्ट वैदिक सनातनधर्मको पुनः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुप्रतिष्ठित किया। उन्होंने रामेश्वरम् से हिमालयपर्यन्त मण्डलब्राह्मणादि - वेदान्तसम्मत विशुद्ध अद्वैत विज्ञानके रस - रहस्यको ख्यापितकर सबको उसके प्रति आकृष्ट और अनुगत किया। उन्होंने धर्मकी रक्षा तथा प्रतिष्ठाकर हम सबकी रक्षा की। भगवत्पादके पूर्वकालीन इस पावन वृत्तको अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोंसे जानकर भी मोहवश (प्रमादवश) अकृतज्ञ हम उनका स्मरण नहीं करते ; अत एव हम पर विविध विपत्तियाँ आती हैं। ऐसा विचारकर विश्वहितकी कामनासे दक्षिणाम्नाय शृङ्गेरीपीठाधीश्वर महायोगी श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनव नरसिंहभारतीने कृतघ्नताको निरस्त करनेके लिए तथा जनताके अभ्युदयकी भावनासे इस महत्त्वपूर्ण वृत्तको प्रकाशित किया है।।''

❖

बृहच्छङ्करविजयादिके अनुसार श्रीभगवत्पाद शङ्कराचार्यके गुरुदेव योगीन्द्र श्रीगोविन्दपादाचार्यका देहावसानकाल युधिष्ठिरशक २६४६ प्लवङ्गसम्वत्सर कार्तिकपूर्णिमा गुरुवार सिद्ध है। -

'शास्त्रश्रुत्यङ्गनेत्राब्दे युधिष्ठिरशकस्य वै।
प्लवङ्गे कार्त्तिके मासि पूर्णिमायां गुरोर्दिने।।
श्रीमद्गौडपादार्यशिष्यो योगविदाम्वरः।
गोविन्दभगवत्पादः सिद्धिं प्राप स संयमी।।
(बृहच्छङ्करविजय)

अतः श्रीशङ्कराचार्यका जन्म तथा संन्यास युधिष्ठिरशक २६४६ ; तदनुसार ई. सन् से ४९२ वर्ष पूर्वके पूर्व सुनिश्चित है।

वेङ्कटेश्वरप्रेस - बम्बईसे विक्रमी १९७०में प्रकाशित आनन्दगिरि, भामती तथा रत्नप्रभासहित ब्रह्मसूत्र - शाङ्करभाष्यके प्रथमभागकी भूमिकामें 'श्रीशङ्कराचार्यचरित्रम्' के लेखक पण्डित श्रीसुब्रह्मण्यशास्त्रीके सुपुत्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीवेङ्कटाचलशर्माने ५४ - ५५वें पृष्ठपर श्रीशङ्कराचार्यके जन्मकालके सम्बन्धमें कदली - ब्राह्मणोंका मत दो हज़ार वर्ष पूर्व बताया है। -

'वर्षसहस्रद्वयात्प्राक् श्रीमच्छङ्कराचार्यः बभूव, इति कदलीब्रह्मणाः आहुः।'

'पतञ्जलिचरितम्' के रचयिता आदित्यराजाके पिता श्रीरामभद्र कविने विक्रमी १९७१ में लिखा है कि विक्रमादित्यके पूर्व श्रीगोविन्दभगवत्पादके शिष्य श्रीशङ्कराचार्यका प्रादुर्भाव न्यूनाधिक दो हज़ार वर्ष पूर्व मान्य है। -

'गोविन्दभगवत्पादः श्रीमच्छङ्कराचार्यस्य गुरुः। इदानीं विक्रमार्कशकस्य सप्तत्युत्तर नवशत्यधिकसहस्रवर्षाणि गतानि। विक्रमार्कराज्यसमयेऽस्य शकस्यारम्भात् प्रागेवाचार्याणां जन्मेति। किं च न्यूनाधिक्येन द्विसहस्रवर्षाणि गतान्याचार्यसमयादिति प्रतीयते।।'

अत एव पूर्वोक्त विधाके अनुसार शृङ्गेरी मठके प्रथम आचार्यका अभिषेक युधिष्ठिर सम्वत् २६५४ तदनुसार ४८४ बी.सी. पौषशुक्ल पूर्णिमा माननेपर ज्योतिष्पीठके तुल्य ई. सन् २०१२ तक ०४८४ + २०१२= २४९६ वर्ष शृङ्गेरी मठकी आचार्य परम्पराके सिद्ध होते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

श्रीवैङ्कटाचलशर्माद्वारा ईसवी सन् १९१४ में विरचित **'श्रीमच्छङ्कराचार्यचरित्रम्'** नामक ग्रन्थमें प्रकाशित सूचीके अनुसार १. श्रीशङ्कराचार्यका संन्यास २२ विक्रमी , ईसवी सन् ७८ - ७९ अर्थात् शाङ्करसम्वत् १ तथा २. श्रीसुरेश्वराचार्यका संन्यास ३० विक्रमी अर्थात् शाङ्करसम्वत् ८ मान्य है। ३१.वें श्रीनृसिंहभारती (८) का समापनकाल १८२३ विक्रमी अर्थात् शाङ्करसम्वत् १८०१मान्य है। तदनन्तर-

३२. श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनवविद्यानरसिंहभारती शाङ्करसम्वत् १८३४
३३.श्रीचन्द्रशेखरभारती (४) शाङ्करसम्वत् १८७६
३४.श्री अभिनवविद्यातीर्थ शाङ्करसम्वत् २०२४
३५.श्रीभारतीतीर्थ ई.स. १९८९, वि.स.२०४६, शाङ्करसम्वत् २०२४ से ग्रन्थरचनावर्ष विक्रमसम्वत् २०६९; तुल्य ई. सन् २०१२ तक .

श्रीसुरेश्वराचार्यका संन्यास और पदासीनवर्ष ३० विक्रमीसे वर्तमान २०६९ विक्रमीपर्यन्त २०३९ वर्ष श्रीशारदाशृङ्गेरीमठका कार्यकाल सिद्ध होता है।

ध्यान रहे, श्रीसुरेश्वराचार्यका पदासीनकाल शाङ्करसम्वत् ८ से ६९५ तक तथा तदनन्तर श्रीनित्यबोधघनाचार्यका पदासीनकाल शाङ्करसम्वत् ६९५ से ७७० पर्यन्त ७५ वर्ष सिद्ध होता है।

उक्त रीतिसे आचार्य शङ्करका जन्म विक्रमाब्द १४, ई.सन् ७१ सिद्ध होता है। श्रीसुरेश्वराचार्यका पदासीनकाल शाङ्करसम्वत् ८ से ६९५ तक ६९५ - ८ = ६८७ वर्ष सिद्ध होता है। श्रीसुरेश्वराचार्यकी पूर्णायु ७२५ माननेपर ७२५ - ६८७ = ३८ वर्षकी आयुमें उनका गृहत्याग, संन्यास तथा अभिषेककाल सिद्ध होता है। श्रीसुरेश्वराचार्यका संन्यास ३० विक्रमी अर्थात् शाङ्करसम्वत् ८ मान्य है। अतः श्रीसुरेश्वराचार्यका जन्म विक्रमसम्वत् से ८ वर्ष पूर्व सिद्ध होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

उक्त रीतिसे आचार्य श्रीशङ्करका जन्म विक्रमाब्द १४ में तथा श्रीसुरेश्वराचार्यका जन्म विक्रमसम्वत् से ८ वर्ष पूर्व मान्य होनेके कारण श्रीशङ्कराचार्यसे आयुमें श्रीसुरेश्वराचार्य १४ + ०८ = २२ वर्ष अधिक सिद्ध होते हैं।

ईसवी सन् १९६६ में प्रकाशित **'महान् तपस्वी'** ग्रन्थकी सूचीके अनुसार

शृङ्गेरीमठकी अर्वाचीन आचार्य - परम्परा

क्रम	नाम	पदासीन	वर्ष
०१.	**अनन्तश्री. सुरेश्वराचार्य**	शाङ्करसम्वत् ८ ; माघशुक्ल १२ शा.स.६९५प्रमाथी संवत्सर	६८७वर्ष.
०२.	**अनन्तश्री. नित्यबोधघनाचार्य**	शाङ्करसम्वत् ६९५ से भाद्रशुक्ल १३विभवसंवत्सर ७७० पर्यन्त	०७५वर्ष.
०३.	**अनन्तश्री.ज्ञानघनाचार्य**	आषाढकृष्ण ५प्रमोद ८३२शाङ्करसम्वत्	०६२वर्ष.
०४.	**अनन्तश्री.ज्ञानोत्तमाचार्य**	फाल्गुनशुक्ल ८ प्रमादी ८७५शाङ्करसम्वत्	०४३वर्ष.
०५.	**अनन्तश्री.ज्ञानगिर्याचार्य**	श्रावणकृष्ण १० बहुधान्य ९६०शाङ्करसम्वत्	०८५वर्ष.
०६.	**अनन्तश्री.सिंहगिर्याचार्य**	वैशाखकृष्ण ८बहुधान्य १०२०शाङ्करसम्वत्	०६०वर्ष.
०७.	**अनन्तश्री.ईश्वरतीर्थ**	चैत्रशुक्ल १अक्षय १०६८शाङ्करसम्वत्	०४८वर्ष.
			१०६०वर्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

८.अनन्तश्री.नरसिंहतीर्थ फाल्गुनशुक्ल ६सर्वधारी
११५०शाङ्करसम्वत् ०८२वर्ष.

०९.अनन्तश्री.विद्याशङ्करतीर्थ कार्तिकशुक्ल ७ श्रीमुख
१२५५शाङ्करसम्वत् १०५वर्ष.

१०.अनन्तश्रीभारतीकृष्णतीर्थ भाद्रशुक्ल १२ रौद्र
१३०२ शाङ्करसम्वत् ०४७वर्ष.

११.अनन्तश्री. विद्यारण्य चैत्रशुक्ल १३ अक्षय
१३०८ शाङ्करसम्वत् ००६वर्ष.

१२.अनन्तश्री.चन्द्रशेखरभारती (१)वैशाखकृष्ण २शुक्ल
१३११ शाङ्करसम्वत् ००३वर्ष.

१३.अनन्तश्री.नरसिंहभारती (१) पौषशुक्ल ८सर्वधारी
१३३०शाङ्करसम्वत् ०१९वर्ष.

१४.अनन्तश्री.चन्द्रशेखरभारती (२)१३३०शाङ्करसम्वत्
मात्र कुछ दिन ०००वर्ष.

१५.अनन्तश्री.पुरुषोत्तमभारती (१)श्रावणशुक्ल ११विभव
१३७०शाङ्करसम्वत् ०४०वर्ष.

१६.अनन्तश्री.शङ्करानन्दभारती माघशुक्ल ८भाव
१३७६ शाङ्करसम्वत् ००६वर्ष.

१७.अनन्तश्री.चन्द्रशेखरभारती (३) मार्गशीर्ष कृष्ण ५
तारण १३८६शाङ्करसम्वत् ०१०वर्ष.

१८.अनन्तश्री.नरसिंहभारती (२) आषाढकृष्ण ५ विकारी
१४०१ शाङ्करसम्वत् ०१५वर्ष.

१९.अनन्तश्री.पुरुषोत्तमभारती (२)ज्येष्ठकृष्ण १३ ईश्वर
१४३९ शाङ्करसम्वत् ०३८वर्ष.

३७१वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

२०.अनन्तश्री.रामचन्द्रभारती पौषकृष्ण ८ रौद्र
१४८२शाङ्करसम्वत् ४३वर्ष.

२१.अनन्तश्री.नरसिंहभारती (३) चैत्रशुक्ल ११ धाता
१४९८शाङ्करसम्वत् १६वर्ष.

२२.अनन्तश्री.नरसिंहभारती (४) भाद्रकृष्ण २विकारी
१५२१शाङ्करसम्वत् २३वर्ष.

२३.अनन्तश्री.अभिनव नरसिंहभारती (१)फाल्गुनकृष्ण ७ दुन्दुभि
१५४४ शाङ्करसम्वत् २३वर्ष.

२४.अनन्तश्री.सच्चिदानन्दभारती (१)आषाढकृष्ण ५ शोभकृत्
१५८५शाङ्करसम्वत् ४१वर्ष.

२५.अनन्तश्री.नरसिंहभारती (५) फाल्गुनकृष्ण ६ पार्थिव
१६२७ शाङ्करसम्वत् ४२वर्ष.

२६.अनन्तश्री.सच्चिदानन्दभारती (२) ज्येष्ठशुक्ल १०दुर्मति
१६६३ शाङ्करसम्वत् ३६वर्ष.

२७.अनन्तश्री.अभिनव सच्चिदानन्दभारती (१) मार्गशीर्षशुक्ल
६सर्वजित् १६८९ शाङ्करसम्वत् ; २६वर्ष.

२८.अनन्तश्री.अभिनवनरसिंहभारती (२) भाद्रशुक्ल ११विकृति
१६९२शाङ्करसम्वत् ०३वर्ष.

२९.अनन्तश्री.सच्चिदानन्दभारती अधि. भाद्रशुक्ल १ भाव
१७३६शाङ्करसम्वत् ४४वर्ष.

३०.अनन्तश्री.अभिनव सच्चिदानन्दभारती (२)फाल्गुनकृष्ण
६ईश्वर १७३९ शाङ्करसम्वत् ; ०३वर्ष.

३१.अनन्तश्री.नरसिंहभारती (६) ज्येष्ठ शुक्ल २ प्रमाथी
१८०१शाङ्करसम्वत् ६२वर्ष.

३६२वर्ष.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३२.अनन्तश्री.सच्चिदानन्दशिवाभिनव नरसिंहभारती

१८३४ शाङ्करसम्वत् ३३वर्ष.

३३.अनन्तश्री.चन्द्रशेखरभारती (४)

१८७६शाङ्करसम्वत् ; १९५४ ईसवी सन् ४२वर्ष.

३४.अनन्तश्री.अभिनवविद्यातीर्थ शाङ्करसम्वत् १९११

१९८९ ईसवी सन् ३५वर्ष.

३५.अनन्तश्री.भारतीतीर्थ शाङ्करसम्वत्

१८८९ से २३वर्ष.

(ग्रन्थरचनावर्ष विक्रमसम्वत् २०६९; तुल्य ई. सन् २०१२तक)

१३३वर्ष.

पदासीनकाल

१०६०वर्ष.+०३७१वर्ष.+०३६२वर्ष.+१३३वर्ष.=१९२६वर्ष.

आचार्य शङ्करका जन्म १४ विक्रमाब्दमें तथा तिरोधान ४६ विक्रमाब्दमें शृङ्गेरी पीठकी पूर्व मान्यता है। आचार्य सुरेश्वरकी पूर्णायु विक्रमी ७२५ न मानकर उनके पीठासीनकालका अन्तिम वर्ष विक्रमी ७२५ माननेपर ७२५ - ३० = ६९५ वर्ष उनका पीठासीनकाल सिद्ध होता है।

इस प्रकार; ६८७वर्षकी अपेक्षा ६९५ वर्ष उनका पीठासीनकाल माननेपर ६९५ - ६८७ = ८ वर्ष अतिरिक्तकी प्राप्ति होती है। विक्रमी ७२५ अर्थात् शाङ्करी ७०३ से शाङ्करी ७७०पर्यन्त श्रीनित्यबोधघनाचार्यका पदासीनकाल ६७ वर्ष सिद्ध है।

श्रीसुरेश्वराचार्यका कार्यकाल ६८७वर्षके स्थानपर ६९५माननेपर - ६८७ = ८ वर्ष अतिरिक्तकी प्राप्ति श्रीनित्यबोधघनाचार्यका पदासीनकाल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७५वर्षके स्थानपर ६७ वर्ष माननेपर ०७५ – ६७ वर्ष = ८ वर्षकी न्यूनताके कारण वर्षगणना शोधित होनेपर भी प्रभावित नहीं होती।

शृङ्गेरीमठकी शोधित आचार्य - परम्परा

क्रम	नाम	पदासीन	वर्ष
०१.	अनन्तश्री. **सुरेश्वराचार्य**	विक्रमी ३०से विक्रमी ७२५ तथा शा.स.५२ से ७४७ पर्यन्त	६९५वर्ष.
०२.	अनन्तश्री. **नित्यबोधघनाचार्य**	विक्रमी ७२५ अर्थात् शाङ्करी ७०३ से शाङ्करी ७७०से पर्यन्तवर्ष.	०६७वर्ष.

श्रीसुरेश्वराचार्यका सन्यास और पदासीनवर्ष ईसवीसन् से २६ वर्ष पूर्व अर्थात् विक्रमी ३० और शाङ्करी ८ से २०६९ विक्रमी पर्यन्त २०३९ वर्ष श्रीशारदाशृङ्गेरीमठका कार्यकाल अपेक्षित है। अपेक्षित २०३९ वर्ष –१९२६ वर्ष =०११३ वर्ष न्यून कालकी पूर्त्ति होनेपर अपेक्षित २०३९ वर्षकी सिद्धि सम्भव है। ऐसा तब सम्भव है, जब उपलब्ध १९२६वर्ष – श्रीसुरेश्वराचार्यका पदासीनवर्ष ६८७वर्ष. = अतिरिक्त आचार्योंका पदासीनकाल १२३९ वर्ष +(६८७+अपेक्षित ११३) अर्थात् १२३९+८००= २०३९; ई.सन् २०१२ पर्यन्त २०३९ वर्षकी सिद्धि सम्भव है।

विक्रमी १९५३ (ई.स. १८९७) में निर्णयसागरप्रेस बम्बई (मुम्बई) से प्रकाशित पञ्चदशीकी पीताम्बरीटीकाकी भूमिकामें सन्निहितसूची जो कि शृङ्गेरीमठकी कूडलीशाखाके अनुरूप है; उसमें श्रीपृथ्वीधराचार्य अर्थात् श्रीसुरेश्वराचार्यका समापनकाल शा.स. ३७ पर्यन्त कुल ६५ वर्ष मान्य है।

काञ्चीकामकोटिने प्रथमाचार्यके रूपमें आदि शङ्कराचार्यको मानकर उनका जीवनकाल ईसवीपूर्व ५०८ से ४७६ कुल ३२ वर्ष माना है। तदनन्तर ई. पूर्व ४७६ से ४०६ तक कुल ७० वर्षोंतक श्रीसुरेश्वराचार्यको पदासीन माना है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
८.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - परम्परा

द्वारका - शारदापीठने युधिष्ठिरशक २६४९ माघकृष्ण ७ ; ई.पूर्व ४८९से युधिष्ठिरशक २६९१चैत्रकृष्ण ८; तुल्य ई.पूर्व ४४७ पर्यन्त कुल ४२वर्षोंतक श्रीसुरेश्वराचार्यको पदासीन माना है।

इस प्रकार कहाँ ६५, ७०, ४२वर्षोंकी अवधि और कहाँ ६९५ और उससे भी अधिक वर्षोंकी अवधि ? इनमें कोई तालमेल नहीं है। तद्वत् कहाँ श्रीभगवत्पादका ई. सन् से ५०७ - ५०९ पूर्व प्रादुर्भावकाल और कहाँ १४ विक्रमाब्द (७० ई.सन्)प्रादुर्भावकाल ? दोनोंमें कोई तालमेल नहीं है।

इतना ही नहीं; जयपुर - विश्वनाथ - राजगोपालशर्मा द्वारा सम्पादित १९६३ में प्रकाशित **'श्रीमज्जगद्गुरु - शाङ्करमठविमर्श'** पृष्ठ २५, पैरा २ के अनुसार ' आचार्य शङ्करद्वारा प्रतिष्ठित दक्षिणाम्नाय शृङ्गेरीमठकी गुरुपरम्पराके अनुसार आचार्य शङ्करका जन्म १४ विक्रमाब्दमें तथा तिरोधान ४६ विक्रमाब्दमें हुआ।................................ '....अतः लोकमान्य श्रीबालगङ्गाधरतिलकजीका अनुमान सत्य प्रतीत होता है कि शृङ्गेरीकी पूर्वोक्त परम्परामें शङ्करका काल - उल्लेख चालुक्यवंशीय विक्रमादित्य एकसे सम्बन्ध रखता है। अतः इस आधारसे सिद्ध होता है कि आचार्यका जन्म ६६४ ईसवी तथा निर्याण ७१६ ई. का है।'

तिलकजीकी अनर्गल मान्यताके पक्षधर शर्माजीने शृङ्गेरीमठके अनुसार २०३९ + ००१६ = २०५५ वर्ष श्रीशङ्कराचार्यका काल सिद्ध होनेका ध्यान बिल्कुल नहीं रखा।

पूर्वोक्तविधासे श्रीभगवत्पादका ई. सन् से ५०७ - ५०९ पूर्व प्रादुर्भावकाल सर्वथा युक्त परिलक्षित होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९. श्रीशाङ्करग्रन्थावलिः

(१) भाष्य-विवरणग्रन्थाः (२७)

क्रम ग्रन्थ

०१. ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्
०२. केनोपनिषत्पदभाष्यम्
०३. केनोपनिषद्वाक्यभाष्यम्
०४. कठोपनिषद्भाष्यम्
०५. प्रश्नोपनिषद्भाष्यम्
०६. मुण्डकोपनिषद्भाष्यम्
०७. माण्डूक्योपनिषद्भाष्यम्
०८. ऐतरेयोपनिषद्भाष्यम्
०९. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्
१०. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम्
११. बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम्
१२. श्वेताश्वतरोपनिषद्भाष्यम्
१३. नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयोपनिषद्भाष्यम्
१४. ललितात्रिशतीभाष्यम्
१५. अथर्वशिखोपनिषद्भाष्यम्
१६. अथर्वशिरोपनिषद्भाष्यम्
१७. वज्रसूच्युपनिषद्भाष्यम्
१८. श्रीमद्भगवद्गीताभाष्यम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१. श्रीशाङ्करग्रन्थावलिः

१९.ब्रह्मसूत्रभाष्यम्
२०.श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रभाष्यम्
२१.सनत्सुजातीयभाष्यम्
२२.हस्तामलकीयभाष्यम्
२३.अध्यात्मपटल(आपस्तम्बधर्मसूत्र)भाष्यम्
२४.प्रणवभाष्यम्
२५.राजयोगसूत्रभाष्यम्
२६.पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरणम्
२७.ज्ञानाङ्कुशव्याख्याविवरणम्

(२) प्रकरणग्रन्थाः (८२)

२८. सर्वोपनिषत्सारः
२९. प्रपञ्चसारः
३०.विवेकचूडामणिः
३१.उपदेशसाहस्री
३२.सर्ववेदान्तसिद्धान्तसारसङ्ग्रहः
३३.अपरोक्षानुभूतिः
३४.तत्त्वबोधः
३५.मणिरत्नमाला (प्रश्नोत्तरी)
३६.पञ्चीकरणम्
३७.निर्वाणपञ्चकम् (अद्वैतपञ्चरत्नम् , आत्मपञ्चकम्)
३८.दशश्लोकी (निर्वाणदशकम्)
३९.योगतारावली
४०.स्वात्मनिरूपणम्
४१.निर्वाणषट्कम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९. श्रीशाङ्करग्रन्थावलिः

४२.अद्वैतानुभूतिः
४३.ब्रह्मानुचिन्तनम्
४४.सदाचारानुसन्धानम्
४५.मनीषापञ्चकम्
४६.तत्त्वोपदेशः
४७.वाक्यवृत्तिः
४८.धन्याष्टकम्
४९.मुमुक्षुपञ्चकम्
५०.वैराग्यपञ्चकम्
५१.जीवन्मुक्तानन्दलहरी (शिवानन्दलहरी)
५२.सर्वसिद्धान्तसङ्ग्रहः
५३.यतिपञ्चकम्
५४.प्रबोधसुधाकरः
५५.आत्मबोधः
५६.दुर्वासनाप्रतीकारदशकम्
५७.स्वात्मप्रकाशिका
५८.स्वरूपानुसन्धानम् (विज्ञाननौका)
५९.मायापञ्चकम्
६०.शतश्लोकी
६१.प्रौढानुभूतिः
६२.ब्रह्मज्ञानावलीमाला
६३.निर्वाणमञ्जरी
६४.प्रश्नोत्तरमालिका
६५.एकश्लोकी
६६.भजगोविन्दम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९. श्रीशाङ्करग्रन्थावलिः

६७.बालबोधसङ्ग्रहः
६८.त्रिपुरा
६९.अनुभवोल्लासः
७०.सहजाष्टकम्
७१.चिदानन्दात्मकस्तोत्रम्
७२.सोपानपञ्चकम् (उपदेशपञ्चकम्, साधनपञ्चकम्, अद्वैतपञ्चरत्नम्)
७३.लघुवाक्यवृत्तिः
७४.अनात्मश्रीविगर्हणम्
७५. प्रातःस्मरणस्तोत्रम्
७६.अखण्डैकरसवाक्यार्थः
७७.अद्वैतमानसिकपूजा
७८.अध्यात्मविद्योपदेशविधिः
७९.अध्यात्मसन्न्यासविधिः
८०.अष्टश्लोकी
८१.आत्मचिन्तनम्
८२.आत्मज्ञानोपदेशविधिः
८३.आत्मानात्मविवेकः
८४.आत्मसाम्राज्यसिद्धिः
८५.अवधूताष्टकम्
८६.एकादशोत्तरशतवाक्यग्रन्थः
८७.एकान्तनिर्णयः
८८.ज्ञानसन्न्यासः
८९.निरञ्जनाष्टकम्
९०.पञ्चकोशविवेकः
९१.पञ्चीकरणमहावाक्यम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

०९२.पञ्चीकृतम्
०९३.परमानन्ददीपिका
०९४.वाक्यदीपिका
०९५.ब्रह्मनामावली
०९६.ब्रह्मानुसन्धानम्
०९७.बालबोधिनी
०९८.मतखण्डनम्
०९९.महावाक्यमन्त्रः
१००.महावाक्यविवरणम्
१०१.महावाक्यार्थपञ्चीकरणम्
१०२.महावाक्यार्थविचारः
१०३.महावाक्यार्थविवरणम्
१०४.महावाक्यार्थोपदेशः
१०५.महावाक्यनिर्णयः
१०६.मायाविवरणम्
१०७.वाक्यसुधा
१०८.वेदान्ततत्त्वसारः
१०९.वेदान्तशास्त्रप्रकरणम्

(३)स्तोत्रग्रन्थाः (७२)

११०.भगवन्मानसपूजा
१११.जगन्नाथाष्टकम्
११२.ललितापञ्चरत्नम्
११३.श्रीमत्क्रमस्तवः
११४.सुब्रह्मण्यभुजङ्गम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११५.देवीभुजङ्गम्
११६.कनकधारास्तोत्रम्
११७.अच्युताष्टकम्
११८.गुरुपादुकापञ्चकम्
११९.नर्मदाष्टकम्
१२०.काशीपञ्चकम्
१२१.गङ्गाष्टकम्
१२२.मणिकर्णिकाष्टकम्
१२३.द्वादशलिङ्गस्तोत्रम्
१२४.वेदसारशिवस्तोत्रम्
१२५.शिवनामावल्यष्टकम्
१२६.शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्
१२७.अन्नपूर्णाष्टकम्
१२८.कालभैरवाष्टकम्
१२९.षट्पदी
१३०.शिवभुजङ्गम्
१३१.विष्णुभुजङ्गम्
१३२.गोविन्दाष्टकम्
१३३.कृष्णाष्टकम्
१३४.मातृपञ्चकम्
१३५.यमुनाष्टकम् (प्रथमम्)
१३६.यमुनाष्टकम् (द्वितीयम्)
१३७.लक्ष्मीनृसिंहकरावलम्ब (करुणारस)स्तोत्रम्
१३८.नरसिंहाष्टकम्
१३९.दक्षिणामूर्त्तिस्तोत्रम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४०.दक्षिणामूर्त्त्यष्टकम्
१४१.दक्षिणामूर्त्तिवर्णमालास्तोत्रम्
१४२.निर्गुणमानसपूजा
१४३.आर्याष्टकम्
१४४.रत्नपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्
१४५.शिवानन्दलहरी
१४६.शिवपादादिकेशान्तवर्णनस्तोत्रम्
१४७.शिवकेशादिपादान्तवर्णनस्तोत्रम्
१४८.सुवर्णमालास्तुतिः
१४९.साम्बदशश्लोकी
१५०.उमामहेश्वरस्तोत्रम्
१५१.भ्रमराम्बाष्टकम्
१५२.अर्धनारीश्वरस्तवः
१५३.आनन्दलहरी
१५४.त्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रम्
१५५.शारदाभुजङ्गम्
१५६.गौरीदशकम्
१५७.भवानीभुजङ्गम्
१५८.हरिमीडेस्तुतिः
१५९.मीनाक्षीपञ्चरत्नस्तोत्रम्
१६०.मीनाक्षीस्तोत्रम्
१६१.त्रिपुरसुन्दर्यष्टकम्
१६२.रामभुजङ्गम्
१६३.हनुमत्पञ्चरत्नम्
१६४.गणेशपञ्चरत्नम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९. श्रीशाङ्करग्रन्थावलिः

१६५.गणेशभुजङ्गम्
१६६.रङ्गनाथाष्टकम्
१६७.मातृकापुष्पमालास्तोत्रम्
१६८.नवरत्नमालिका
१६९.मृत्युञ्जयमानसिकपूजास्तोत्रम्
१७०.विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम्
१७१.शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम्
१७२.कल्याणवृष्टिस्तवः
१७३.शिवापराधसमापनस्तोत्रम्
१७४.देवीचतुष्षष्ट्युपचारपूजास्तोत्रम्
१७५.मन्त्रमातृकापुष्पमालास्तवः
१७६.श्यामलानवरत्नमालिका
१७७.त्रिपुरसुन्दरीवेदपादस्तवः
१७८.लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्नस्तवः
१७९.पाण्डुरङ्गाष्टकम्
१८०.सौन्दर्यलहरी
१८१.यतिदण्डैश्वर्यविधानपद्धतिः

(भगवत्पाद श्रीशङ्कराचार्यद्वारा गतक़लि २६१२, विक्रमपूर्व ४३१ ज्योतिर्मठमें ग्रन्थारम्भ; गतकलि २६१३रुद्रगाढेश्वर नेपालमें । श्रीविद्यारण्याश्रमजीको नेपालमें ब्राह्मी, लिंच्छवि सम्पन्न क्रमसे नेवारी लिपिमें वि. स. २०६९ से ३० वर्ष पूर्व सुलभ; श्रीस्वामीजीके द्वारा देवनागरीमें लिविबद्धः दण्डी स्वामी तत्त्वबोधाश्रमजीद्वारा सन् १९८३ में प्रकाशित। प्रकाशक – निगमागमशक्तिशोधसंस्थान; सिरोहा, जबलपुर, मध्यप्रदेश) ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रार्थना

प्रातः ६, मध्याह्न १०, अपराह्न २, सायं ६ एवम् रात्रि १०बजे सर्वहितकी भावनासे निम्नलिखित प्रार्थना प्रत्येक सत्रमें पाँच - पाँच बार व्यक्तिगतरूपसे तथा आध्यात्मिक संस्थानोंके माध्यमसे नित्य कर्त्तव्य है। छान्दोग्योपनिषत् २.१४.१ तथा महाभारत-शान्तिपर्व ३३७.३०के अनुसार प्रतिदिन पाँच बार भगवद्भजनसे सर्वार्थसिद्धि सुनिश्चित है।

प्रार्थना

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदताम्
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी।।
(श्रीमद्भागवत ५.१८.९)

"हे प्रभो ! विश्वका कल्याण हो, दुष्ट दुष्टतासे विनिर्मुक्त होकर प्रमुदित हो! सब एक - दूसरेका हित चिन्तन करें। हमारा मन शुभमार्गमें प्रवृत्त हो तथा हमारी बुद्धि निष्कामभावसे आप स्वप्रकाश सदानन्दस्वरूप भगवान् श्रीहरिमें निमग्न हो।।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरि:
श्रीगणेशाय नमः

पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ -
स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

१.शुकसुधा
२.श्वेताश्वतरोपनिषत् अध्याय १-३ (व्याख्यासहित)
३.श्वेताश्वतरोपनिषत् अध्याय ३-६ (व्याख्यासहित)
४.नासदीयसूक्तम् (सायणभाष्यानुवादसहित)
५.कुन्तीस्तुतिः (विस्तृत व्याख्यासहित)
६ श्रीराधारस और रसिकशेखर
७ श्रीराधारससुधा और श्रीकृष्णरसवैभव
८.पीठपरिषद् और उसके अन्तर्गत आदित्यवाहिनी और आनन्दवाहिनी
९.सुखमयजीवनका सनातनसिद्धान्त
१०.विश्वशान्तिका सनातनसिद्धान्त
११.स्वस्तिकगणित
१२.सार्वभौमसनातनसिद्धान्त
१३.सारार्थदीपिका
१४.शारीरकस्वाराज्यसिद्धिसारसमाख्या
१५.सनातनधर्मियोंका रसरहस्यमय बहुदेववादिवाद
१६.जीवनज्योति
१७.शिवावतार भगवत्पाद आदि शङ्कराचार्य
१८.गीताजयन्ती और भीष्मोत्क्रान्ति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश – मठाम्नाय – दिग्दर्शन – सेतु – महानुशासनम्
स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

१९.अनमोलवचन
२०.नीति और अध्यात्म
२१.नीतिसूक्तम्
२२.आयुर्विज्ञान
२३.अध्यात्मरहस्य
२४.श्रीमद्भगवद्गीतामें योगचतुष्टय
२५.सनातनसन्देश
२६.व्रतस्वरूपविमर्श
२७.बालजागरण
२८.श्रीमद्भगवद्गीतामें कर्मतत्त्व
२९.श्रीमद्भगवद्गीतामें पुरुषार्थ चतुष्टय
३०.नीतिचालीसा
३१.श्रीजगन्नाथ और उनकी रथयात्रा
३२.व्यूहरचना
३३.अङ्कपदीयम्
३४.गणितदर्शन
३५.पावनसन्देश
३६.दिग्दर्शन
३७.राष्ट्ररक्षा
३८.परमार्थसार
३९.ब्रह्मज्ञानावलीमाला
४०.करुणा, कठोरता और कर्त्तव्यनिष्ठा
41.The Eternal Principles Of Happy Life
४२.श्रीमद्भगवद्गीतामें ज्ञानतत्त्व
४३.क्रान्तिबिन्दु
४४.दिव्यानुभूति (प्रथम भाग)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

४५.अवतारमीमांसा
४६.विचित्र सम्वाद
४७.वैदिकार्षगणित (प्रथम भाग)
४८.प्रवचनपीयूष
४९.बौद्धागमवृत्तान्त तथा निगमागमसिद्धान्त
५०.नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्
५१.गणितचिन्तामणि
५२.चतुराम्नाय - चतुष्पीठ
53.The Philosophy of Mathematics
54.Swastik - Ganita
55.Nature of Numbers
56..Bhagawan Shree Krisna
५७.श्रीगीतासुधा
५८.श्रीराधासुधा
५९.जगदीश्वर, जीव और जगत्
६०.भागवतसुधा
६१.श्रीजगन्नाथाष्टकम्
६२.श्रीसागर - गङ्गा - आरती
६३.ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय - गोवर्द्धनमठ - पुरीपीठ
६४.भगवान् श्रीकृष्ण (हिन्दी अनुवाद)
६५.वैदिक बौद्धदर्शन (वैदिकार्षप्रक्रियाप्रकाश)
६६.शून्यैकसिद्धि और द्व्यङ्कपद्धति
६७.सनातनधर्म
68.Sanatan - Dharma
69. Ganita Chintamani
७०. पूर्वाम्नाय - पुरीपीठ - परिचय- प्रदीप
७१. उद्बोधन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

७२. सनातनधर्म - प्रश्नोत्तर - मालिका
७३. भावनोपनिषत् (भाष्यानुवादसहित)
७४. श्रीदक्षिणामूर्त्यष्टकम् (भाष्यानुवादसहित)
७५. योगमीमांसा (सूत्रानुवाद तथा व्याख्यासहित)
७६. स्वस्तिक गणित (अङ्ग्रेजी अनुवाद)
७७.शून्यैकसिद्धि और द्व्यङ्कपद्धति (अङ्ग्रेजी अनुवाद)
७८.द्व्यङ्कपद्धतिकी वैदिकार्षविधा
७९.धर्मस्मृतिः
८०.बौद्धसिद्धान्त और वेदान्त
८१.भारत - वैभव
८२.वेदान्तरससार - सर्वसिद्धान्तसमन्वयप्रकार
८३.सनातनसिद्धान्त
८४.द्व्यङ्कादिपद्धतिकी वैदिकविधि
८५.श्रीशिवावतार-भगवत्पाद-आदिशङ्कराचार्य
८६.हस्तामलकस्तोत्रम्
८७.तोटकस्तुतिः
८८.मूकाम्बिकास्तुतिः
८९.श्रीहरिशङ्करस्तुतिः
९०.स्वरूपसिद्धिः
९१.गणितसूत्रम्
९२.राष्ट्रोत्कर्ष-अभियान
९३.राजधर्म
९४.सूत्रगणितम्
९५.वैदिकार्षप्रक्रियाप्रकाश
९६.गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशाासनम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवंश - मठाम्नाय - दिग्दर्शन - सेतु - महानुशासनम्
स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानसे प्रकाशित पुस्तकें

यथाशीघ्र प्रकाशन सम्भावित

२४.श्रीमद्भगवद्गीतामें योगचतुष्टय, ४९.बौद्धागमवृत्तान्त तथा निगमागमसिद्धान्त, ६१.श्रीजगन्नाथाष्टकम्, ७०. पूर्वाम्नाय-पुरीपीठ - परिचय- प्रदीप, ७३.भावनोपनिषत् (भाष्यानुवाद-सहित), ७४. श्रीदक्षिणामूर्त्यष्टकम्, ७५. योगमीमांसा, ७९.धर्मस्मृतिः, ९४.निगमागमगणितम्, ९५.वैदिकार्षप्रक्रिया-प्रकाश ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

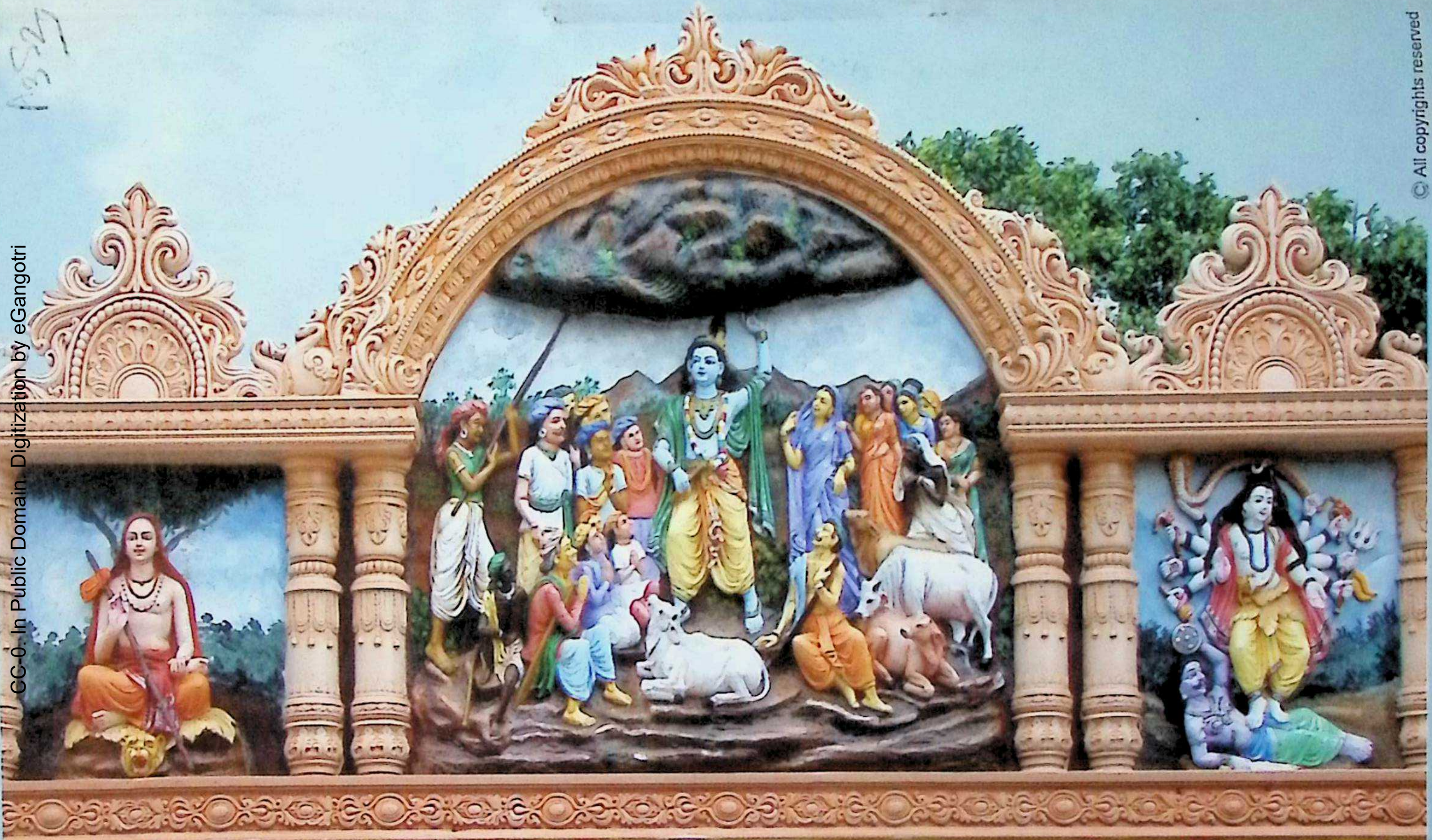

श्रीशङ्कराचार्य-गोवर्द्धनमठ - पुरीपीठ

© All copyrights reserved

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal